प्रेरितों के काम

1 हे थियुफ़िलुस, जो कुछ यीशु ने किया
और सिखाया, मैंने उन सब के बारे में
तुम्हें लिखा था। 2 पवित्र आत्मा के द्वारा जब
वह अपने चुने हुए प्रेरितों को आदेश देने के
बाद तक उठाए नहीं गये। 3 यीशु के दुःख
उठाने के बाद, बहुत से ठोस सबूतों की मदद
से उन्होंने अपने आप को ज़िन्दा दिखाया
और वह चालीस दिन तक उन्हें दिखते रहे
और परमेश्वर के शासन के बारे में बताते
रहे।

4 उन शिष्यों से मिल कर यीशु ने यह आज्ञा
दी, कि वे यरुशलेम से बाहर न जाएँ। यह भी
कि स्वर्गिक पिता के उस वायदे के पूरा होने
का इन्तज़ार करें, जिस के बारे में उन लोगों ने
यीशु से सुना था। 5 वह यह कि यूहन्ना ने तुम्हें
पानी से बपतिस्मा दिया था, लेकिन बहुत
जल्दी ही तुम पवित्र आत्मा का बपतिस्मा
पाओगे।

6 जब वे इकट्ठे हुए, उन्होंने यह सवाल
किया, "प्रभु स्वामी, क्या आप इसी समय
इस्राएल को राज्य लौटा देंगे?

7 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "जिन तारीखों
और समयों को स्वर्गिक पिता ने, अपने
काबू में रखा है, उन्हें तुम को जानने की
ज़रूरत नहीं है। 8 लेकिन जब पवित्र आत्मा
तुम्हारे ऊपर आएगा, तब तुम सामर्थ पाओगे
और यरुशलेम, सारे यहूदिया, सामरिया और
पृथ्वी के कोने-कोने तक मेरी गवाही दोगे"

9 इन सब बातों को कहने के बाद जब वे
लोग देख ही रहे थे, यीशु को ऊपर उठा लिया
गया और एक बादल ने उन्हें ढँक लिया।

10 यीशु के ऊपर उठाए जाते समय वे ऊपर
देखते रह गए। अचानक सफ़ेद कपड़े पहने
हुए दो व्यक्ति उनके पास आ खड़े हुए।
11 उन्होंने कहा, "तुम गलील निवासी इस
तरह से टकटकी लगाए क्यों खड़े हुए हो?
यही यीशु, जिन्हें तुम्हारे बीच से स्वर्ग उठा
लिया गया, इसी तरह से स्वर्ग से नीचे
उतरेंगे।"

12 इसके बाद वे जैतून पहाड़ से उतर कर
यरुशलेम आए, जहाँ पहुँचने में एक दिन
लगता था। 13 वहाँ पहुँचने पर वे[a] पहली
मंज़िल पर अपने ठहरने की जगह में गये।
14 उसी कमरे में वे कुछ महिलाओं, यीशु की
माँ मरियम और उनके भाईयों के साथ एक
मन से प्रार्थना में समय बिताने लगे।

15 एक दिन पतरस वहाँ बैठे 120 लोगों के
बीच खड़ा होकर 16 कहने लगा, "हे भाईयो,
पुराने समय में दाऊद के मुँह से पवित्र आत्मा
ने जो कुछ भी यहूदा के बारे में कहलवाया
था, जो यीशु के पकड़वाने वालों का अगुवा
बना, उस वचन को पूरा होना था 17 क्योंकि
वह हम में से ही था, और उसे इस सेवकाई
में एक हिस्सा दिया गया था।

18 इस इन्सान ने अपनी रिश्वत की कमाई
से एक खेत खरीदा था। वहीं पर वह सिर

[a] **1.13** पतरस, याकूब, यूहन्ना, आन्द्रियास, फ़िलिप, थॉमस, बरतुल्मै , मत्ती, अल्फ़ियस का बेटा याकूब, शमौन और याकूब का भाई यहूदा

के बल गिर गया। उसकी देह बीच में से फट
गयी और सारी अतड़ियाँ बाहर निकल पड़ीं।
19 जो लोग यरुशलेम में रहा करते थे, उन्हें
यह बात मालूम पड़ गयी। इसलिए उन्हीं की
भाषा में वह खेत हकलदमा[a] कहलाया।
20 क्योंकि भजन संहिता में यह लिखा है,
'उसका घर वीरान हो जाए, आगे को उसमें
कोई न रहे और दूसरा व्यक्ति उसके पद
को ले' 21 इसलिए जितने दिन तक प्रभु यीशु
हमारे साथ आते-जाते रहे - अर्थात् यूहन्ना के
बपतिस्मे से लेकर उनके हमारे पास से उठाए
जाने तक - जो लोग हमारे साथ रहे, 22 यह
सही है कि उन में से एक व्यक्ति हमारे साथ
उनके जी उठने का गवाह हो जाए।" तब
23 उन लोगों ने दो जन को खड़ा किया
- एक था यूसुफ़, जिसे बरसबा भी कहा
जाता था और उपनाम यूस्तुस था, और
मत्तियाह को 24 उन्होंने यह दुआ की और
कहा, "यीशु आप जो कि सभी लोगों के मन
को जानते हैं, दिखाइये कि इन दोनों में से
आपने किस को जम चुना है 25 कि वह इस
सेवकाई और प्रेरिताई का पद ले, जिसे यहूदा
छोड़कर अपनी जगह को चला या" 26 तब
उन्होंने उनके बारे में चिट्ठियाँ डालीं, और वह
मत्तियाह के नाम पर निकली। इसलिए उसे
उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया।

2 पेन्टिकॉस्ट के दिन आने पर वे सभी
एक स्थान पर इकट्ठे थे 2 अचानक
ही आकाश से एक बड़ी आँधी की सी
सनसनाहट का शब्द हुआ और उससे पूरा
घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज उठा। 3 और उन्हें
आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और
उन में से हर एक जन पर आ ठहरीं। 4 वे
सभी पवित्र आत्मा से भर गए और जिस
तरह आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी,
वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।
5 उस समय आकाश के नीचे हर एक जाति
में से भक्त यहूदी यरुशलेम में रहा करते थे।
6 इस आवाज़ को सुन कर एक बड़ी भीड़
इकट्ठी हो गयी और सभी घबराए हुए थे,
क्योंकि प्रत्येक को यही सुनाई देता था कि ये
लोग मेरी भाषा में ही बोल रहे हैं। 7 आश्चर्य से
भर कर उन्होंने एक दूसरे से कहा, "क्या ये
सभी बोलने वाले गलील के नहीं हैं? 8 तब
हम उनके मुँह से मातृ भाषा क्यों सुन रहे
हैं? 9 पारथी, मादी, एलामी, मेसोपोटामिया
के रहने वाले, यहूदिया, कप्पदुकिया, पुन्तुस
और एशिया 10 फ्रिगिया, पंफ़ूलिया, मिस्र,
लिबिया के कुछ भाग और रोम के निवासी,
यहूदी और यहूदी मत को स्वीकारने वाले,
11 क्रेती और अरबी को भी हम परमेश्वर
के अजीब कामों का बखान अपनी भाषा में
करते सुन रहे हैं।" 12 वे सभी आश्चर्य और
दुविधा में पड़ गए और एक दूसरे से पूछने
लगे, "यह सब क्या है?"
13 कुछ लोगों ने मज़ाक करते हुए कहा, "ये
लोग ताज़ी शराब के नशे में हैं।"
14 लेकिन पतरस ने उन ग्यारहों के
साथ खड़े होकर बुलन्द आवाज़ में कहा,
"यहूदिया के निवासियो और वे सभी जो
यरुशलेम में ठहरे हुए हो, मेरी ध्यान से सुनो
15 जैसा तुम सोच रहे हो कि ये लोग नशे में
हैं, ऐसी बात बिल्कुल नहीं है, क्योंकि अभी
तो सुबह के नौ बजे हैं। 16 लेकिन यह वही
बात है, जिस के बारे में योएल नबी ने कहा
थाः 17 "आखिर के दिनों में क्या होगा, इसके
बारे में परमेश्वर कहते हैं - सभी लोगों पर मैं
अपना आत्मा उण्डेलूँगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ
भविष्यद्वाणी करेंगे। तुम्हारे नौजवान दर्शन

[a] **1.19** खून का खेत

देखेंगे। तुम्हारे बुज़ुर्ग लोग स्वप्न देखेंगे। 18 मैं
उन दिनों में अपने आत्मा में से अपने सेवकों
और सेविकाओं पर भी आत्मा उण्डेलूँगा
और वे भी नबूवत करेंगे 19 साथ ही मैं
आकाश में आश्चर्यचकित करने वाली बातें
और इस पृथ्वी के ऊपर चिन्ह जैसे खून,
आग और धुएँ का बादल दिखाऊँगा। इसके
पहले कि वह बड़ा और मशहूर प्रभु का दिन
आए, 20 सूरज अँधेरे में और चाँद खून में
बदल जाएगा, 21 जो कोई प्रभु के नाम को
लेगा, वही मुक्ति पाएगा।'

22 "हे इस्राएलियो सुनोः जैसा कि तुम
जानते हो परमेश्वर ने यीशु के द्वारा तुम में
आश्चर्यकर्म, सामर्थ के कार्य और चिन्ह दिखा
कर यह प्रगट कर दिया था कि नासरत में
रहने वाले यही यीशु[a] थे। 23 उन्हें परमेश्वर
के पूर्व ज्ञान और निश्चित उद्देश्य के आधार
पर सुपुर्द किया गया। तुमने उन्हें लेकर
दुष्ट हाथों से सूली पर चढ़ाकर मार डाला।
24 लेकिन ऐसा हो नहीं सकता था कि यीशु
मौत के वश में रहते, परमेश्वर ने उन्हें मौत
के बन्धनों से मुक्त करके ज़िन्दा कर दिया।
25 क्योंकि दाऊद उनके बारे में कहता है,
"मैं अपने सामने हमेशा प्रभु को देखता रहा,
क्योंकि वह मेरे दाएँ बाजू में हैं ताकि मैं
डावाँडोल न होऊँ 26 इसलिए मैं खुश हुआ,
मेरी जीभ प्रभु की बड़ाई करने लगी और देह
भी आशा रखे रहेगी। 27 क्योंकि आप न मेरे
प्राण को मरे हुओं की जगह में छोड़ेंगे और
न अपने पवित्र जन को सड़ने देंगे। 28 आपने
मुझे ज़िन्दगी के रास्तों से जानकारी करायी
है। अपनी मौजूदगी[b] से आप मुझे खुशी से
भर देंगे।"

29 "भाई लोगो, मैं अपने पूर्वज दाऊद के
बारे में साहस से बतलाना चाहता हूँ कि
उसके मरने के बाद उसे दफ़ना दिया गया
और उसकी कब्र आज तक हमारे बीच में
है। 30 इसलिए एक नबी होने के नाते और
यह जानते हुए कि परमेश्वर ने दाऊद से
शपथ खायी है, वह यह थी कि मैं तुम्हारे
वंश में से एक व्यक्ति को तुम्हारे राजासन
पर बैठाऊँगा। 31 इसे पहले ही से जानते
हुए, दाऊद ने मसीह के जी उठने के बारे में
कहा था। यह कि न उनकी आत्मा मरे हुओं
की जगह में छोड़ी जाएगी न ही उनकी देह
सड़ेगी।

32 "इसी यीशु को स्वर्गिक पिता याहवे ने
जिलाया, जिस के हम गवाह हैं। 33 इसीलिए,
परमेश्वर के दाहिने हाथ[c] तक उठाए जाने
और स्वर्गिक पिता से वायदा किए हुए
पवित्र आत्मा को लेकर उन्होंने उण्डेल दिया
है, जिसे तुम लोग देखते और सुनते हो।
34,35 क्योंकि दाऊद स्वर्ग पर नहीं चढ़ा,
लेकिन खुद उसने कहा, "प्रभु ने मेरे प्रभु से
कहा मेरे दाहिने बाजू पर बैठो जब तक मैं
तुम्हारे दुश्मनों को तुम्हारे पैरों की चौकी न
कर दूँ।"

36 इसलिए इस्राएल का सारा परिवार यह
जान ले कि याहवे परमेश्वर ने इसी यीशु को
जिसे तुमने सूली पर चढ़ाया था, मालिक और
मुक्ति देने वाला ठहराया।

37 जब लोगों ने यह सब सुना, उनके मन
कायल हो गए और पतरस और बाकी प्रेरितों
से पूछा, "हे भाईयों, हम करें क्या?"

38 पतरस ने उन्हें जवाब दिया, "अपना मन
बदलो और तुम में से हर एक यीशु मसीह के

[a] **2.22** खरे व्यक्ति [b] **2.28** दर्शन, उपस्थिति [c] **2.33** सृष्टिकर्ता की सर्वश्रेष्ठ शक्ति और उनका अधिकार

नाम से गुनाहों की मुआफ़ी के लिए बपतिस्मा
ले। ऐसा करने से तुम पवित्र आत्मा का दान
पाओगे। 39 क्योंकि यह वायदा तुम, तुम्हारे
वंश और जो दूर-दराज़ के लोग हैं उनके लिए
है, जिन्हें हमारे प्रभु और परमेश्वर बुलाएँगे।”
40 दूसरी और बातें कह कर उसने गवाही
दी और कहा, “अपने आप को इस टेढ़ी
जाति[a] से बचा कर रखो।” 41 तब जिन लोगों
ने खुशी से उसकी बातों को स्वीकार किया
था, उन्हें बपतिस्मा दिया गया। उसी दिन
लगभग तीन हज़ार लोग उन में मिल गए।
42 वे सभी प्रेरितों से सीखने, संगति करने,
रोटी तोड़ने और प्रार्थना[b] करने में लगे रहे।
43 वहाँ रहने वाले हर एक व्यक्ति पर डर
छा गया। प्रेरितों के हाथों से तमाम अजीब
काम और चमत्कारिक काम किए जाते थे।
44 सभी जिन्होंने यीशु पर विश्वास किया
था साथ रहते थे। 45 वे अपनी वस्तुओं और
सम्पत्ति को बेच बेच कर, जैसी जिस को
ज़रूरत हुआ करती थी बाँट लिया करते थे।
46 वे यहूदी प्रार्थना भवन में हर दिन एक
मन से इकट्ठा हुआ करते थे। घर-घर में जाकर
यीशु की याद में रोटी तोड़ते थे। वे मन की
सच्चाई और खुशी से अपना खाना खाया
करते थे। 47 वे परमेश्वर की बड़ाई किया
करते थे। सभी लोग उन से खुश थे। जो लोग
मुक्ति पाते जा रहे थे, उन्हें प्रभु, मण्डली[c] में
जोड़ते जाते थे।

3 एक बार पतरस और यूहन्ना, दोपहर तीन
बजे प्रार्थना के समय मन्दिर जा रहे थे।
2 मन्दिर[d] में हर दिन आने वालों से भीख
माँगने के लिए एक व्यक्ति को सुन्दर नाम
के फाटक पर बिठाया जाता था। वह लंगड़ा
पैदा हुआ था। 3 पतरस और यूहन्ना के प्रार्थना
भवन में प्रवेश करते समय उसने भीख मांगी।
4 पतरस ने यूहन्ना के साथ मिल कर उस पर
टकटकी लगायी और कहा, “हमारी तरफ़
देखो।” 5 उन से कुछ पाने के लिए उसने
उनकी तरफ़ देखा।
6 तब पतरस ने कहा, “चाँदी और सोना मेरे
पास नहीं हैं, लेकिन मेरे पास जो कुछ भी है,
वह मैं तुम्हें देता हूँ: यीशु मसीह नासरी के
नाम से उठो और चलो।” 7 पतरस ने अपने
दाहिने हाथ से उसे पकड़ा और उठा कर
खड़ा कर दिया। तुरन्त उसके पैरों और घुटनों
में बल आ गया। 8 वह उछल कर खड़ा हो
गया और चलने लगा। वह कूदते, दौड़ते
और परमेश्वर की बड़ाई करते हुए उनके
साथ प्रार्थना भवन[e] को गया। 9 सभी लोगों
ने उसे चलते और परमेश्वर की बड़ाई करते
हुए देखा। 10 वे यह जान गए, कि यह वही
व्यक्ति था जो प्रार्थना भवन के सुन्दर नामक
दरवाज़े पर बैठ कर भीख माँगा करता था।
ये सब देख कर वे आश्चर्य से भर गए थे।
11 वह लँगड़ा ठीक होने के बाद पतरस
और यूहन्ना को पकड़े हुए था, और लोग
सुलैमान के बरामदे में आश्चर्य से उनके
पास दौड़े चले आए। 12 पतरस ने यह सब
देख कर लोगों से कहा, “हे इस्राएलियो,
तुम अचम्भा क्यों कर रहे हो? या हमारी
तरफ़ टकटकी लगा कर क्यों देख रहे हो,
जैसे कि हम ने अपनी ताकत या अच्छाई
की वजह से इस व्यक्ति को चलने के
लायक बना दिया है? 13 अब्राहम, इसहाक
और याकूब के परमेश्वर, हमारे पुरखों के
परमेश्वर ने अपने बेटे को इज़्ज़त[f] दी है।
तुमने उन्हें उस समय पिलातुस के हवाले
किया और उनका इन्कार किया, जब वह
उन्हें छोड़ देना चाहता था। 14 लेकिन तुमने

[a] 2.40 भ्रष्ट पीढ़ी [b] 2.42 आराधना [c] 2.47 झुण्ड [d] 3.2 प्रार्थना भवन [e] 3.8 मन्दिर [f] 3.13 महिमा

उस पवित्र और सज्जन व्यक्ति को चाहने
के बजाए एक हत्यारे की आज़ादी की माँग
की। 15 तुमने जीवन के कर्ता को मार डाला,
जिन्हें परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिला दिया।
इस सच्चाई के हम गवाह भी हैं। 16 तुम जिस
व्यक्ति को यहाँ देख रहे हो और जानते
हो कि यीशु के नाम और उनके नाम पर
विश्वास ने इसको ताकत[a] दे दी है। हाँ, जो
विश्वास यीशु से उसे मिला है तुम्हारे सामने
उसी से वह पूरी तरह से ठीक-ठाक खड़ा है
17 "भाईयो मुझे मालूम है कि तुम
और तुम्हारे अधिकारियों दोनों ही ने
अपनी नासमझी की वजह से ऐसा किया
था। 18 लेकिन जो बातें परमेश्वर ने
भविष्यद्वक्ताओं के मुँह से कहलवायीं थीं,
कि मसीह दुख उठाएँगे, इस तरह से पूरी
हुयी हैं। 19 इसलिए अपना मन बदल डालो,
और लौट आओ ताकि तुम्हारे अपराध
माफ़ किए जाएँ, जिस से यीशु से ताज़गी
के समय[b] आएँ 20 और उस यीशु मसीह को
फिर से भेजें जो तुम्हारे पहले ही से मसीह
ठहराए गए हैं। 21 इस दुनिया की शुरुआत
के समय से अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं
के मुँह से परमेश्वर ने संदेश दिया था, कि
जब तक कि सब बातें फिर से कायम न हो
जाएँ, उन्हें स्वर्ग में ही रहना है। 22 क्योंकि
मूसा ने पूर्वजों से कहा था, "प्रभु तुम्हारे
परमेश्वर तुम्हारे भाईयों में से मेरी तरह एक
भविष्यद्वक्ता को उठा खड़ा करेंगे और
जो कुछ वह तुम से कहें, वह सब करना।
23 लेकिन हर व्यक्ति जो उस भविष्यद्वक्ता
की नहीं सुनेगा, अपने लोगों के बीच में से
नाश किया जाएगा।"
24 और शमूएल से लेकर बाद में आने
वाले सभी भविष्यद्वक्ताओं ने इसी तरह
की भविष्यद्वाणी की थी। 25 तुम परमेश्वर
द्वारा हमारे पूर्वजों से बनायी गयी वाचा के
हिस्सेदार और भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान
हो, जिन्होंने अब्राहम से कहा था, "पृथ्वी
के सभी राष्ट्र[c] तुम में आशीष पाएँगे"
26 परमेश्वर ने अपने बेटे को जिला कर
पहले तुम्हारे पास भेजा ताकि तुम में से हर
एक को उसकी दुष्टता बुराई से हटा कर
आशीष दे।"

4 जब वे लोगों को सिखा रहे थे, फ़रीसी,
प्रार्थना भवन[d] के प्रधान और सदूकी
उनके पास आए। 2 वे इसलिए नाराज़ थे
क्योंकि वे[e] लोगों को सिखा रहे थे कि
यीशु मरे हुओं में से जी उठे थे। 3 इन लोगों
ने पतरस और यूहन्ना को दूसरे दिन तक
हवालात में इसलिए रख लिया क्योंकि शाम
हो चुकी थी। 4 फिर भी बहुत से लोग जिन्होंने
उनका संदेश सुना था, उन्होंने उसे अपना
लिया। इन लोगों की संख्या लगभग पाँच
हज़ार थी।
5 दूसरे दिन उनके अधिकारी, और
शास्त्री, 6 हन्ना महायाजक, काइफ़ा, यूहन्ना,
एलेक्ज़ेन्डर और महायाजक के सभी
रिश्तेदार यरुशलेम में इकट्ठे हुए। 7 उन लोगों
ने पतरस और यूहन्ना को अपने सामने खड़ा
किया और पूछा, "किस शक्ति या नाम से
तुमने यह किया है?"
8 पतरस ने पवित्र आत्मा से भर कर उन
से कहा, 9 "हे लोगों के अधिकारियों और
इस्राएल के बुज़ुर्गों, इस असहाय के लिए
हमारे किए गए अच्छे काम की वजह से
हमसे पूछ-ताछ की जाती है कि वह कैसे
ठीक कर दिया गया, 10 तो तुम्हें और इस्राएल
के सभी लोगों को यह मालूम हो, कि

[a] **3.16** सामर्थ [b] **3.19** प्रभु की तरफ़ से चैन के दिन [c] **3.25** घराने [d] **4.1** मन्दिर [e] **4.2** शिष्य

यीशु मसीह नासरी, जिन्हें तुमने क्रूस पर
चढ़ाया था और जिन्हें परमेश्वर ने मरे हुओं
में से ज़िन्दा किया, उन्हीं के नाम से यह
आदमी ठीक-ठाक खड़ा है। 11 इसी पत्थर
को इमारत बनाने वालों[a] ने बेकार ठहराया
था, यही अब खास पत्थर ठहरा है। 12 किसी
अन्य व्यक्ति से मुक्ति नहीं मिल सकती,
क्योंकि लोगों के बीच आकाश[b] के नीचे
कोई और नाम नहीं दिया गया है जिस के
द्वारा हम उद्धार पा सकें।
13 उन्होंने पतरस और यूहन्ना की हिम्मत
को देख यह जान लिया कि वे अनपढ़ और
साधारण लोग हैं। वे आश्चर्य में पड़ गए और
समझ भी गए कि वे यीशु के साथ रहे थे।
14 उनके साथ ठीक हो गए व्यक्ति को खड़ा
देख कर वे उनके खिलाफ़ कुछ कह न सके।
15 लेकिन जब उन्हें आज्ञा दी गयी कि वे
सभा से बाहर जाएँ, आपस ही में उन लोगों
ने सलाह की 16 उन्होंने कहा, “इन लोगों के
साथ हम क्या करें? क्योंकि उन्होंने एक बड़ा
आश्चर्यकर्म किया था, जो यरुशलेम में रहने
वाले लोगों के सामने था और इसका इन्कार
भी नहीं किया जा सकता।” 17 इसलिए कि
यह बात लोगों में फैल न जाए, हम उन्हें
चेतावनी दें, कि किसी से इस नाम के विषय
बात न करें।
18 उन्होंने पतरस और यूहन्ना को बुलाकर
आदेश दिया कि यीशु के सम्बन्ध में न बोलें,
न सिखाएँ। 19 लेकिन पतरस और यूहन्ना ने
जवाब में यह कहा, “तुम्हीं बताओ, क्या
यह सही है कि हम परमेश्वर की बात न
मानकर तुम्हारी मानें? 20 क्योंकि यह हो ही
नहीं सकता कि हम ने जो देखा और सुना है,
वह सब न बताएँ।”
21 इसलिए उन्हें और ज़्यादा धमका कर
जाने दिया, क्योंकि वहाँ इकट्ठे हुए लोगों की
वजह से वे उन्हें सज़ा नहीं दे सके। क्योंकि
जो कुछ भी हुआ था, उसके लिए सभी
परमेश्वर की बड़ाई कर रहे थे। 22 क्योंकि
जिस व्यक्ति की ज़िन्दगी में चंगा करने का
चिन्ह दिखाया गया था[c], वह करीब चालीस
साल से ज़्यादा उम्र का था।
23 वहाँ से आज़ाद होकर वे अपने लोगों
में गए और जो कुछ मुख्य महायाजक और
बुज़ुर्गों ने उन से कहा था, उन्हें बता दिया।
24 उन्होंने जब यह सब सुना तो एक मन
होकर बुलन्द आवाज़ में कहा, “मालिक,
आप ही सृष्टिकर्ता हैं जिन्होंने आकाश, पृथ्वी
और समुद्र और जो कुछ उसमें है, बनाया
है। 25 आप ही ने अपने सेवक हमारे पिता
दाऊद के मुँह से कहा है, “राष्ट्रों ने गुस्सा
और विरोध क्यों दिखाया? लोगों ने बेकार
की बातें क्यों सोचीं? 26 पृथ्वी के राजा एक
हो गए, शासक इकट्ठा हुए, प्रभु के खिलाफ़
और मसीह के भी।
27 क्योंकि हेरोद अन्तिपास, पुन्तियुस,
पिलातुस गवर्नर, गैरयहूदी और इस्राएली,
सभी आपके अभिषिक्त पवित्र सेवक के
खिलाफ़ थे 28 जो कुछ उन्होंने किया वह
सब आपकी सामर्थ और इच्छा[d] से पहले
ही से निश्चित हो चुका था। 29 अब मालिक[e]
उनकी धमकियों को देखिए और यह होने दें
कि आपके सेवक बड़ी हिम्मत से आपके
संदेश को दे सकें। 30 लोगों को ठीक करने

[a] **4.11** राजमिस्रियों [b] **4.12** स्वर्ग [c] **4.22** यह अजीब काम हुआ था [d] **4.28** मति [e] **4.29** प्रभु

के लिए अपने हाथों को बढ़ाएँ, ताकि आपके
पवित्र बेटे यीशु के नाम से अजीब चिन्ह और
अचरज के काम किए जाएँ”
31 जहाँ पर वे इकट्ठे थे, वह स्थान उनके
प्रार्थना करने के बाद हिल गया। वे सभी
पवित्र आत्मा से भर कर परमेश्वर का
संदेश[a] हिम्मत से देने लगे।
32 जिन्होंने विश्वास किया था, वे लोग एक
ही मन के थे। उन में से कोई भी यह नहीं
कहता था कि जो उसके पास है, उसका है।
सभी लोगों को छूट थी कि वे सब कुछ का
इस्तेमाल करें। 33 प्रेरित लोग यीशु मसीह के
जी उठने की बात बड़ी सामर्थ[b] के साथ कर
रहे थे। उन सभी के ऊपर बड़ी कृपा बनी हुयी
थी। 34 उन में से कोई भी ऐसा नहीं था, जो
गरीब[c] हो। क्योंकि जिन के पास ज़मीन या
घर थे, उनको बेच कर मिला हुआ धन ले
आते थे। 35 उसे प्रेरितों के पैरों के पास डाल
दिया जाता था, जैसी जिस की ज़रूरत हुआ
करती थी, उसी के मुताबिक लोगों में बाँट
दिया जाता था।
36 यूसुफ़ नाम साइप्रस का एक लेवी था।
प्रेरितों ने उसका नाम बरनबास[d] रखा था।
37 उसके पास कुछ ज़मीन थी। उसने उस
ज़मीन को बेचा और मिले हुए रूपयों को
प्रेरितों के सुपुर्द कर दिया।

5 हनन्याह नाम के एक व्यक्ति और
उसकी पत्नी सफ़ीरा ने अपनी ज़मीन
बेची। अपनी पत्नी की जानकारी ही में उसने
उस बेची हुयी ज़मीन का कुछ पैसा अपने
पास रखा। 2 बचा हुआ हिस्सा[e] लाकर उसने
प्रेरितों के पैरों पर रख दिया।
3 लेकिन पतरस ने कहा “हनन्याह, शैतान
ने तुम्हारे मन को पवित्र आत्मा से झूठ बोलने
के लिए क्यों भर दिया, कि तुम ज़मीन के
पैसों में से कुछ अपने पास रख लो। 4 जब
यह तुम्हारे पास थी तो क्या तुम्हारी नहीं थी?
बेचे जाने के बाद भी क्या यह तुम्हारा ही पैसा
नहीं था? तुमने अपने मन में ऐसी बात आने
ही क्यों दी? तुमने इन्सान से नहीं परमेश्वर
से झूठ बोला है।
5 यह सुनते ही हनन्याह गिरा और मर गया।
जिन लोगों ने ये बातें सुनीं वे भी बहुत डर
गए। 6 नौजवान उठे, उन्होंने अर्थी बनायी
और बाहर ले जाकर गाड़ दिया।
7 तीन घन्टे बाद उसकी पत्नी भीतर आयी,
लेकिन उसे कुछ मालूम नहीं था। 8 पतरस ने
उससे पूछा, “मुझे बताओ, कि तुमने इतने ही
में ज़मीन बेची थी क्या? सफ़ीरा ने कहा, “हाँ
इतने ही में,
9 तब पतरस ने उससे कहा, “प्रभु के आत्मा
को परखने के लिए तुम दोनों एक मन के कैसे
हो गए? देखो तुम्हारे पति की लाश को ले
जाने वाले अभी दरवाज़े पर ही खड़े हैं और
वे तुम्हें भी बाहर ले जाएँगे
10 तुरन्त वह पतरस के पैरों पर गिरी और
मर गयी। नौजवानों के भीतर आने पर उन्होंने
उसे मरा पड़ा देखा और उसके पति की कब्र
के पास ही उसे दफ़ना दिया। 11 मण्डली[f]
और उन सभी लोगों पर जिन्होंने ये बातें सुनीं
बड़ा डर छा गया।
12 और लोगों के बीच प्रेरितों के हाथों से
बहुत चमत्कारिक चिन्ह और अजीब काम
किए जाते थे। वे सभी प्रार्थना भवन[g] में
सुलैमान के अहाते में एक मन से इकट्ठे हुआ

[a] **4.31** वचन [b] **4.33** हिम्मत [c] **4.34** ज़रूरतमन्द [d] **4.36** मतलब शान्ति का बेटा [e] **5.2** एक भाग
[f] **5.11** चर्च [g] **5.12** मन्दिर

करते थे। 13 बाकी लोगों में किसी की यह
हिम्मत नहीं होती थी कि उनके साथ हो लें
लेकिन लोग उन्हें बड़ी इज़्ज़त की निगाह से
देखते थे। 14 पुरुष और महिलाएँ दोनों ही में
से बहुत से लोग यीशु पर विश्वास लाते जाते
थे। 15 बिस्तर और खाट पर अपने बीमारों
को रख कर वे सड़क पर रख दिया करते थे,
ताकि कम से कम पतरस की परछाईं उन
पर पड़ जाए। 16 यरुशलेम के आस पास के
शहरों से भी एक बड़ी भीड़ अपने उन बीमारों
को लाया करती थी जो गंदी आत्माओं से
पीड़ित थे। उन में से हर एक ठीक हो जाया
करता था।

17 तब प्रधान पुरोहित[a] और जो सदूकी
उसके साथ थे, बड़े गुस्से से बौखला उठे।
18 उन्होंने प्रेरितों को पकड़ कर सार्वजनिक
जेल में डलवा दिया 19 लेकिन रात के
समय प्रभु के स्वर्गदूत ने आकर जेल का
दरवाज़ा खोल दिया और बाहर लाकर
कहा, 20 "जाओ और प्रार्थना भवन[b] में खड़े
होकर जीवन के वचन को सारे लोगों को
बतलाओ।"

21 जब उन्होंने यह सुना तो बहुत सुबह
मन्दिर जाकर सिखाने लगे। 22 तब प्रधान
पुरोहित ने और जो उसके साथ थे आकर
सभा और इस्राएली अगुवों के सामने उन्हें
जेल से लाने का हुक्म दिया। जब ऑफ़िसर
लोगों ने उन्हें जेल में नहीं पाया तो आकर
खबर दी, 23 "जेलखाने के दरवाज़ों में ताले
थे और बाहर दरवाज़ों पर चौकीदार तैनात
थे, लेकिन भीतर कोई भी नहीं था।" 24 जब
प्रधान पुरोहित, मन्दिर के सुरक्षा दल के
कप्तान और पुरोहितों को यह मालूम हुआ तो
उन्हें समझ न आया कि अब क्या होने वाला
है।

25 तभी किसी ने आकर उन से कहा,
"सुनो, जिन लोगों को तुमने जेल में डाला
था, वे प्रार्थना भवन में खड़े होकर लोगों
को सिखा रहे हैं।" 26 तब कप्तान और उसके
ऑफ़िसर बिना किसी बल प्रयोग वहाँ से
उन्हें ले आए, क्योंकि उन्हें यह डर था कि
कहीं लोग उन पर पत्थर न फेंके।

27 वहाँ उन्हें लाने के बाद, सभा के सामने
उन्हें हाज़िर किया गया और प्रधान पुरोहित
ने सवाल किया, 28 "क्या हम ने तुम्हें यह
हुकुम नहीं दिया था कि इस नाम से कुछ
मत सिखाओ? और देखो तुमने यरुशलेम को
अपनी शिक्षा से भर दिया है और इस इन्सान
के खून का दोष हम पर लाना चाहते हो"

29 तब पतरस और दूसरे प्रेरितों ने जवाब में
कहा, "ज़रूरी बात[c] यह है कि हम परमेश्वर
की बात मानें, न कि इन्सानों की। 30 हमारे
बापदादों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया
जिन्हें तुम लोगों ने क्रूस पर चढ़ाकर मार
डाला। 31 उसी को परमेश्वर ने प्रभु और
मुक्तिदाता ठहराकर उन्हें दाहिने हाथ पर
ठहराया[d] ताकि इस्राएल[e] को मन बदलाव
और अपराधों की माफ़ी दें। 32 हम और
पवित्र आत्मा इन बातों के गवाह हैं जिन्हें[f]
परमेश्वर उन्हीं को देते हैं जो उनका हुकुम
मानते हैं।

33 इन बातों को सुन कर वे गुस्से से भर गए
और उन्हें मार डालना चाहा। 34 तभी सभा
में गमलीएल नामक नियमशास्त्र के अच्छे
जानकार ने, जिस की लोग इज़्ज़त किया
करते थे, खड़े होकर यह हुक्म दिया कि

[a] **5.17** महायाजक [b] **5.20** मन्दिर [c] **5.29** कर्तव्य [d] **5.31** इज़्ज़त और शान दी [e] **5.31** यहूदियों
[f] **5.32** पवित्र आत्मा को

प्रेरितों को कुछ देर के लिए बाहर किया
जाए 35 तब उसने कहा, “हे इस्राएलियो, जो
कुछ तुम इन लोगों के साथ करने पर हो,
उस पर थोड़ा ध्यान से सोचो 36 क्योंकि कुछ
समय पहले थियूदास ने अपने आप को बड़ा
ठहराते हुए[a] दावा किया और उसके साथ
400 लोग हो भी लिए। वह तो मारा गया,
साथ ही उसके साथी तित्तर-बितर हो गए।
इस तरह सब कुछ खत्म हो गया। 37 इसके
बाद ही गलील का यहूदा जनगणना के समय
खड़ा हुआ और उसने बहुत से लोगों को
अपनी तरफ़ कर लिया। वह खुद तो बर्बाद
हो गया और जिन्होंने उसकी सुनी वे भी
तित्तर-बितर हो गए 38 मैं अब तुम से कहता
हूँ कि इन के पीछे मत पड़ो इन्हें यों ही
छोड़ दो। क्योंकि अगर उनका काम और
मकसद इन्सानी[b] है, तो सब कुछ खत्म हो
जाएगा 39 लेकिन अगर यह परमेश्वर की
तरफ़ से है, तो तुम इसे कभी भी खत्म नहीं
कर सकते लेकिन शायद तुम सिर्फ़ परमेश्वर
के खिलाफ़ लड़ने वाले ठहरोगे।”

40 यह सुन कर सभी ने उसकी बात मान
ली। तब उन्होंने प्रेरितों को बुलवाकर उनकी
पिटाई करते हुए यह हुकुम देते हुए उन्हें छोड़
दिया कि वे यीशु के बारे में लोगों को न
सिखाएँ। 41 सभा के सामने से जाते समय वे
बड़े खुश थे कि कम से कम यीशु के नाम के
लिए उन्हें शर्मिन्दगी सहने का मौका मिला
42 लेकिन हर दिन मन्दिर[c] और घर-घर में
लोगों को यीशु के बारे में बताने से वे रुके
नहीं।

6 उन दिनों में जब शिष्य लोग गिनती
में बढ़ते जा रहे थे, यूनानी बोलने
वाले यहूदी इब्रानी बोलने वाले यहूदियों के
खिलाफ़ शिकायत करने लगे। ऐसा इसलिए
क्योंकि हर दिन जो भी लोगों को मिलता
था, उसमें यूनानी बोलने वाले यहूदियों की
विधवाएँ वंचित रह जाती थीं। 2 तब बारह
लोगों ने शिष्यों के झुण्ड को एक जगह
बुलाकर कहा, “यह बात सोचने से भी बाहर
है कि हम परमेश्वर के वचन को छोड़कर
खाना बाँटते फिरें। 3 इसलिए भाईयो अपने
बीच में से सात ऐसे लोगों को चुन लो, जिन
की इज़्ज़त है, पवित्र आत्मा और ज्ञान से भरे
हैं। उन्हीं को यह काम सौंप दो। 4 लेकिन हम
अपने समय को लगातार प्रार्थना और वचन
सिखाने में देते रहेंगे।”

5 यह बात पूरे चर्च को अच्छी लगी। उन्होंने
स्तिफ़नुस को जो विश्वास और पवित्रात्मा
से भरा हुआ था और फ़िलिप्पुस, और
प्रुखुरूस, निकानोर, तिमोन, परमिनास और
अन्ताकिया से निकोलस जो यहूदी मत में
आ गया था, को चुना। 6 इन सभी को प्रेरितों
के सामने लाया गया। और प्रेरितों ने प्रार्थना
करके उनके ऊपर हाथ रखे।

7 परमेश्वर का वचन बढ़ने लगा और
यरुशलेम में शिष्यों की गिनती बहुत बढ़ने
लगी। याजकों[d] के एक बड़े झुण्ड ने भी यीशु
को अपना लिया।

8 स्तिफ़नुस अनुग्रह और सामर्थ से भर कर
लोगों के बीच बड़े अजीब काम और चिन्ह
दिखाया करता था। 9 तब आराधनालय के

[a] **5.36** कि मैं भी कुछ हूँ [b] **5.38** या लोगों की ओर से [c] **5.42** प्रार्थना भवन [d] **6.7** पुरोहितों

कुछ लोग उठ खड़े हुए जिसे “आज़ाद किए गए लोगों का आराधनालय” कहा जाता है। एलिक्जॅन्ड्रियन्स, किलकिया और एशिया के ये लोग स्तिफ़नुस से बहस-बाज़ी करते रहे। 10 लेकिन जिस ज्ञान और आत्मा से वह बोलता था, उसके सामने वे टिक न सके।

11 तब अलग से उन्होंने लोगों को यह कहने के लिए उभारा “कि हम ने उसे परमेश्वर याहवे और मूसा के खिलाफ़ बोलते हुए सुना है।”

12 उन्होंने लोगों, बुज़ुर्गों और नियमशास्त्र को सिखाने वालों को उकसाया इसलिए वे आए और उसे पकड़ कर महासभा के सामने ले गए। 13 तब उन्होंने झूठे गवाहों को बुलाया, जिन्होंने कहा, “यह व्यक्ति पवित्र स्थान और नियमशास्त्र के खिलाफ़ कहने से नहीं रुकता 14 क्योंकि हम ने उसे यह कहते हुए सुना है कि नासरत के यीशु इस भवन को नष्ट कर डालेंगे और मूसा से हमें मिले रीति रिवाज़ों को बदल डालेंगे।

15 तब हर एक जन ने जो महासभा में बैठा था, उसका मुँह स्वर्गदूत की तरह चमकते हुए देखा।

7 तब सब से बड़े पुरोहित[a] ने कहा, “क्या ऐसी बात है?”

2 उसने उत्तर दिया ‘लोगो, भाईयो और पिताओ सुनो, हारान में जाने से पहले जब अब्राहम मेसोपोटामिया में था, उस समय महिमा के परमेश्वर उस पर प्रगट हुए। 3 परमेश्वर ने उससे कहा, ‘अपने देश और अपने लोगों में से निकलो, और उस जगह जाओ, जो मैं तुम्हें दिखाऊँगा।’

4 तब वह कसदियों के देश से निकल कर आया और हारान में रहने लगा। जब उसके पिता का देहान्त हो गया, तब परमेश्वर ने उसे इस जगह, जहाँ अब तुम हो, बुला लिया। 5 उन्होंने उसे कुछ भी मीरास नहीं दी, यहाँ तक कि पैर रखने की जगह भी नहीं। लेकिन परमेश्वर ने वायदा किया कि वह उसे और उसके वंश को यह ज़मीन देंगे। उस समय अब्राहम के कोई सन्तान नहीं थी। 6 परमेश्वर ने उससे कहा, ‘कि उस का वंश दूसरे देश में परदेशी होगा। वहाँ के लोग उन्हें 400 साल तक गुलाम बना कर रखेंगे और उनके साथ बुरा बर्ताव करेंगे। 7 जिस देश में वे गुलाम होंगे, उस को मैं दण्ड दूँगा। बाद में वे बाहर निकल आएँगे और इस जगह मेरी सेवा करेंगे।’ 8 परमेश्वर ने उसे खतने की वाचा दी। इसलिए अब्राहम इसहाक का पिता बना और आठवें दिन उसका[b] खतना किया। इसहाक याकूब का पिता बना और याकूब बारह पूर्वजों का पिता हुआ।

9 कुलपति[c] ईर्ष्या से भर गए और यूसुफ़ को मिस्र देश जाने वालों के हाथ बेच डाला, लेकिन परमेश्वर उसके साथ थे। 10 और परमेश्वर ने उसे उसकी सारी समस्याओं से छुड़ा कर फिरौन राजा के सामने अनुग्रह और बुद्धि दी। इसलिए उसने उसे मिस्र और अपने कुटुम्ब के ऊपर अधिकारी बनाया।

11 तब मिस्र और कनान में आकाल और बड़ी समस्या थी और हमारे पूर्वजों को अनाज नहीं मिल पा रहा था। 12 जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अनाज है, उसने, पहली बार हमारे पूर्वजों[d] को वहाँ भेजा। 13 दूसरी बार यूसुफ़ ने अपने आप को भाईयों पर प्रगट किया और फिरौन को यूसुफ़ की जाति के बारे में मालूम पड़ गया। 14 तब यूसुफ़ ने अपने पिता याकूब और उसके पूरे परिवार[e] को जो लगभग पचहत्तर थे मिस्र बुलाया।

[a] **7.1** महायाजक [b] **7.8** इसहाक का [c] **7.9** याकूब के बेटे [d] **7.12** याकूब के बेटों [e] **7.14** घराने

15 याकूब मिस्र गया, वहीं पर वह और हमारे
दूसरे पूर्वज मर गए। 16 उन सब की देह
को शेकेम ले जाकर उस कब्र में रखा जिसे
अब्राहम ने शेकेम के प्रधान हामोर के बेटों
से पैसों में खरीदा था।
17 लेकिन जब अब्राहम से किए गए वायदे
के पूरे होने का समय निकट आया, मिस्र में
उन लोगों की गिनती बढ़ गयी और बहुत हो
गए 18 तब तक एक दूसरा राजा गद्दी पर आ
गया, जो यूसुफ़ को नहीं जानता था। 19 उसने
हमारे लोगों के साथ बुरा व्यवहार और हमारे
पूर्वजों के साथ दुष्टता की और मजबूर किया
कि वे अपने शिशुओं को फेंक दें और ज़िन्दा
न रहने दें।
20 उसी समय मूसा का जन्म हुआ।
परमेश्वर की निगाह में वह बहुत खूबसूरत
था। उसके पिता के घर में तीन महीने तक वह
पाला-पोसा गया। 21 जब उसे फेंक दिया, तब
फिरौन की बेटी उसे उठा लायी और अपने
बेटे की तरह पालती रही। 22 मूसा को मिस्र
की सारी विद्या सिखायी गयी। वह अपने
बोलने-चालने और कामों में बहुत सामर्थी
था।
23 जब वह चालीस साल का हुआ, तब
उसके मन में आया, कि वह इस्राएलियों यानि
कि अपने भाईयों से मुलाकात करे। 24 उन
में से एक को सताए जाता देख कर, उसने
उसे बचाने और बदला लेने की कोशिश में
एक मिस्री को ऐसा मारा, कि वह मर गया।
25 उसने सोचा था कि उसके भाई-बन्धु उसे
समझ सकेंगे कि परमेश्वर उसके द्वारा उन्हें
छुड़ा लेंगे, लेकिन वे यह न समझ सके।
26 अगले दिन जब दो इस्राएली आपस में
झगड़ा कर रहे थे, उसने यह कहते हुए उनके
बीच सुलह करने की कोशिश की, “तुम
लोग आपस में भाईबन्धु हो, एक दूसरे को
नुकसान क्यों पहुँचा रहे हो”
27 लेकिन जो अपने भाई[a] पर अन्याय कर
रहा था, उसने कहा, हमारे ऊपर तुम्हें किस
ने हाकिम और न्यायी ठहराया है?’ 28 जैसे
तुमने उस मिस्री को मार डाला था, क्या मुझे
भी मार डालोगे। 29 यह सुनते ही मूसा वहाँ से
भागा और मिद्यान देश चला गया और वहाँ
परदेशी की तरह रहा। वहाँ उसके दो बेटे भी
पैदा हुए।
30 जब चालीस साल बीत गए, सीनै पहाड़
के जंगल में एक झाड़ी में आग की लपटों
के बीच परमेश्वर का एक स्वर्गदूत दिखा।
31 यह देखते ही मूसा बड़े आश्चर्य से भर
गया। जैसे ही वह देखने के लिए पास गया।
परमेश्वर की यह आवाज़ सुनी, 32 मैं तुम्हारे
बापदादों, अब्राहम, इसहाक और याकूब का
परमेश्वर हूँ, मूसा घबरा गया और देखने तक
की हिम्मत भी नहीं की।
33 तब परमेश्वर ने उससे कहा, ‘कि अपने
पैरों से जूती को उतार दो, क्योंकि जिस जगह
पर तुम खड़े हो वह पवित्र जगह है। 34 मैंने
देख लिया है, हाँ, मैंने मिस्र में अपने लोगों
के ऊपर अत्याचार को देखा है और उनके
कराहने को सुना है। मैं उन्हें छुड़ाने के लिए
नीचे उतर आया हूँ और तुम्हें मिस्र भेजूँगा।’
35 यही वह है, जिसे यह कहते हुए इब्रियों ने
ठुकरा दिया था, “हमारे ऊपर तुम को किस
ने जज ठहराया है?” यही वह मूसा है जिसे
परमेश्वर ने उस स्वर्गदूत के द्वारा जो वहाँ
झाड़ी में दिखा था, उसके हाथों से मिस्र की
गुलामी से आज़ादी देने के लिए और न्यायी
बनने के लिए भेजा था। 36 मिस्र, लाल समुद्र

[a] **7.27** पड़ोसी

और चालीस साल जंगल के आश्चर्य के काम
और चमत्कारिक चिन्ह दिखाने के बाद वह
उन्हें बाहर निकाल लाया।
37 यह वही मूसा है, जिस ने इस्राएली
लोगों से कहा कि, 'तुम्हारे भाईयों[a] ही में
से तुम्हारे लिए मेरी तरह एक भविष्यद्वक्ता
को खड़ा करेंगे।' 38 यह वही है जो जंगल में
कलीसिया[b] के बीच उस स्वर्गदूत के साथ
था, जिस ने सीनै पहाड़ पर उस से बातें कीं,
और हमारे पूर्वजों के साथ, उसी को जीवित
वचन[c] मिला, कि हम तक पहुँचाए।
39 हमारे पूर्वजों ने उसकी बात नहीं मानी,
लेकिन उसे तुच्छ जाना और अपने मन में
फिर से मिस्र की तरफ़ मुड़ गए। 40 उन्होंने
हारून से कहा, 'हमारा मार्गदर्शन करने के
लिए हमारे लिए देवता बना, क्योंकि हम नहीं
जानते कि, मूसा जो हमें मिस्र देश से बाहर
लाया था, कहाँ गया।' 41 उस समय उन लोगों
ने एक बछड़े की मूर्ति बना कर उसके सामने
बलिदान चढ़ाया। वे अपने हाथ के कामों
से खुश थे, 42 जैसे कि भविष्यद्वक्ताओं की
किताब में लिखा है, तब परमेश्वर उन लोगों
से नाराज़ हो गए[d] और आकाश के तारों
की उपासना करने के लिए उन्हें छोड़ दिया
और कहा, "हे इस्राएल के कुटुम्ब जंगल
में चालीस सालों के दौरान क्या तुमने वध
किए हुए पशुओं और बलिदानों को मेरे लिए
चढ़ाया था? 43 यहाँ तक कि तुमने मोलेक
के तम्बू और रिफ़ान देवता के सितारे और
मूर्तियों की उपासना करने के लिए उन्हें रख
लिया। इसलिए मैं तुम्हें बेबिलोन तक ले
जाऊँगा।"
44 "जंगल में तो हमारे पूर्वजों के पास
साक्षी का ऐसा तम्बू था, जैसा कि मूसा को
बनाने का आदेश मिला था, 'जैसा तुमने देखा
है, उसी नमूने की तरह बनाओ।' 45 इसे[e]
हासिल करके हमारे पूर्वज इसे यहोशू के
साथ गैरयहूदियों के देश को लाए, जब
उन्होंने उन जातियों पर कब्ज़ा किया, जिन्हें
परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों के सामने खदेड़
निकाला, और वह तम्बू दाऊद के समय तक
रहा। 46 परमेश्वर की कृपा दृष्टि दाऊद पर
थी उसने यह प्रार्थना की, कि वह याकूब
के परमेश्वर के लिए निवास-स्थान बनवा
सके। 47 लेकिन सुलैमान ही उसे बना सका।
48 सर्वशक्तिमान, हाथ से बनाए हुए भवन
में नहीं रहते हैं, जैसे कि भविष्यद्वक्ता ने
कहा, 49 'प्रभु कहते हैं, स्वर्ग मेरा राजासन है,
पृथ्वी मेरे पैरों की पटरी[f]। मेरे लिए तुम किस
तरह का भवन बनाओगे और मेरे आराम की
जगह कौन सी होगी? 50 क्या मेरे हाथों ही ने
यह सब कुछ नहीं बनाया है?'
51 तुम ज़िद्दी लोग, जिन के कान और
मन के ऊपर परत जमी हुयी है, तुम हमेशा
पवित्र आत्मा से झगड़ते हो। तुम बिल्कुल
अपने पूर्वजों की तरह हो। 52 ऐसे कौन
से भविष्यद्वक्ता थे जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने
नहीं सताया? उन लोगों ने उन्हें भी मार
डाला जिन्होंने उस धर्मी के आने के बारे में
भविष्यद्वाणी की थी। और अब तुम भी उनके
पकड़वाने वाले और मार डालने वाले हुए।
53 स्वर्गदूतों द्वारा दिए गए[g] नियमशास्त्र को
तुमने पाया, लेकिन उसके हिसाब से किया
नहीं।"
54 जब उन्होंने यह सब सुना तो कायल हो
गए[h] और उस पर दाँत पीसने लगे। 55 लेकिन
उसने पवित्र आत्मा से भर कर ऊपर स्वर्ग
की तरफ़ देखने पर परमेश्वर की महिमा को

[a] **7.37** बीच [b] **7.38** सभा [c] **7.38** संदेश [d] **7.42** मुँह मोड़ लिया [e] **7.45** तम्बू को [f] **7.49** चौकी
[g] **7.53** ठहराए गए [h] **7.54** जल गए

देखा, जहाँ परमेश्वर के दाहिनी ओर[a] खड़े
थे। 56 उसने कहा, “देखो, मैं स्वर्ग को खुला
हुआ और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के सारे
अधिकार के साथ खड़ा हुआ देखता हूँ।”
57 तब वे अपने-अपने कान बन्द करके
ज़ोर से चिल्लाए और एक साथ मिल कर उस
पर झपटे। 58 उसे शहर से बाहर घसीटते
ले गए, और पत्थर से मारने लगे। वहाँ पर
शाऊल नामक एक व्यक्ति के पैरों के पास
गवाहों ने अपने कपड़े रखे थे।
59 जब वह परमेश्वर को यह कह कर
पुकार रहा था, “यीशु स्वामी, मेरी आत्मा
को कबूल कीजिए” उसके ऊपर पत्थर फेके
जा रहे थे। 60 वहाँ उसने घुटने टेक दिए ऊँची
आवाज़ से चिल्लाया, “स्वामी, यह अपराध
उनके नाम पर मत लगाइए।” यह कहने के
बाद वह मृतक सा हो गया और शाऊल
उसके वध में शामिल था।

8 उस समय यरुशलेम में मण्डली के
खिलाफ़ बड़ा सताव शुरु हुआ। प्रेरितों
को छोड़कर सभी यहूदिया और सामरिया
में बिखर गए। 2 कुछ भक्त स्तिफ़नुस को
गाड़ने ले गए और बहुत रोए। 3 जहाँ तक
शाऊल का सवाल है, वह मण्डली पर ज़ुल्म
ढाता रहा। घरों में घुस-घुस कर वह लोगों
को बाहर घसीट कर लाता और उन्हें जेल में
डलवाता था।
4 इसलिए वे सभी जो इधर उधर हो गए
थे, सुसमाचार देते हुए यहाँ-वहाँ पहुँच गए।
5 तब फ़िलिप्पुस सामरिया शहर गया और
उन लोगों को मसीह के बारे में बताया।
6 जिन बातों को फ़िलिप ने कहा, और जो
अजीब काम किए उन्हें देख सुन, एक मन
होकर ध्यान लगाया। 7 बहुत लोगों में से
अशुद्ध आत्माएँ ऊँची आवाज़ में चिल्लाती
बाहर निकल आयीं। जो अपंग और लँगड़े
थे, उन में से बहुत से अच्छे हो गए। 8 सारे
शहर में बहुत खुशी थी।
9 शमौन नाम का एक व्यक्ति उस शहर में
जादू टोना किया करता था। यह दावा करके
कि वह बहुत बड़ा आदमी है, सामरिया के
लोगों को आश्चर्य में डाल दिया करता था।
10 छोटे और बड़े, सभी ने यह सब देख
कर कहा, “यह मनुष्य परमेश्वर की वह
शक्ति है जो महान कहलाती है।” 11 बहुत
समय से वे उसे बड़ी इज़्ज़त दिया करते थे,
क्योंकि उसने काफ़ी समय से अपने जादू
से लोगों को मोह लिया था। 12 लेकिन जब
उन्होंने परमेश्वर के राज्य के सम्बन्ध में
फ़िलिप्पुस की बातों और यीशु मसीह के नाम
पर विश्वास कर लिया, स्त्री और पुरुषों को
बपतिस्मा दिया गया 13 शमौन ने भी स्वयं
विश्वास किया। बपतिस्मा पाने के बाद
फ़िलिप्पुस के साथ-साथ रहा। वह बड़े-बड़े
सामर्थ के कामों और चिन्हों को देख कर
अचरज से भर जाता था।
14 जब यरुशलेम के प्रेरितों ने सुना कि
सामरिया के लोगों ने परमेश्वर के वचन को
स्वीकार[b] कर लिया है, उन्होंने पतरस और
यूहन्ना को उनके पास भेजा। 15 वहाँ पहुँचने
पर पतरस और यूहन्ना ने प्रार्थना की, कि
उन्हें पवित्र आत्मा मिले। 16 क्योंकि अभी
तक वह उन में से किसी पर नहीं उतरा था।
उन्हें केवल यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा
दिया गया था। 17 तब उन्होंने उन लोगों के
ऊपर हाथ रखे और उन्होंने पवित्रात्मा पाया।
18 शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने
से पवित्र आत्मा मिलता है। 19 तो उनके पास
रूपए लाकर कहा, “मुझे भी यह अधिकार

[a] **7.55** परमेश्वरीय अधिकार के साथ यीशु मसीह [b] **8.14** कबूल

दे दो, ताकि जिस के ऊपर हाथ रखूँ, वह
पवित्र आत्मा पाए।"
20 लेकिन पतरस ने कहा, "तुम्हारा पैसा
तुम्हारे साथ ही नाश हो जाए, क्योंकि तुम
यह सोचते हो, कि परमेश्वर का वरदान पैसे
से खरीदा जा सकता है। 21 इस विषय में
तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं है क्योंकि तुम्हारा
मन परमेश्वर की निगाह में सही नहीं है।
22 इसलिए अपने भीतर की इस दुष्टता से मुड़
जाओ और परमेश्वर से प्रार्थना करो। शायद
तुम्हारे मन में आने वाले विचार की माफ़ी
मिल जाए। 23 क्योंकि मैं देखता हूँ, कि तुम
पित्त की सी कड़वाहट और दुष्टता के बन्धन
में हो।"
24 तब शमौन ने उत्तर दिया, "मेरे लिए प्रभु
से बिनती करो, कि जिन बातों को तुमने कहा
है, वे मुझ पर न आ पड़ें।"
25 जब उन्होंने गवाही दी और परमेश्वर का
वचन दिया, वे सामरियों के बहुत से गाँवों में
सुसमाचार सुनाते हुए यरुशलेम वापस लौट
गए।
26 प्रभु के स्वर्गदूत ने फ़िलिप्पुस से कहा,
"उठो, दक्षिण की तरफ़ जो सड़क यरुशलेम
से गाज़ा को जाती है और मरुस्थल में है, वहाँ
जाओ।" 27 वह उठा और चल दिया और
एक इथयोपियन को देखा। इसे इथयोपिया
की रानी से अधिकार मिला हुआ था। रानी
के खज़ाने का वह मालिक था। वह उपासना
करने यरुशलेम आया था। 28 वह यशायाह
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए रथ में
चला जा रहा था। 29 तब आत्मा ने फ़िलिप्पुस
से कहा, "इस रथ के पास जाओ।"
30 फ़िलिप्पुस उसकी तरफ़ दौड़ा और उसे
यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए
सुन कर कहा, "जो तुम पढ़ते हो, क्या समझ
भी रहे हो, "
31 उसने कहा, "जब तक मुझे कोई न
बताए तो मैं कैसे समझ सकता हूँ?" तब
उसने फ़िलिप्पुस को अपने पास बैठने के
लिए बुलाया।
32 पवित्रशास्त्र[a] में वह जो पढ़ रहा था वह
यह थाः "वह वध की जाने वाली भेड़ की
तरह ले जाया गया।। जिस तरह से मेम्ना ऊन
कतरने वालों के सामने चुप रहता है, वैसे
ही उन्होंने[b] अपना मुँह न खोला। 33 उनकी
दीनता में उनका न्याय न हो सका और
उनके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा,
क्योंकि पृथ्वी से उनका प्राण उठा लिया
जाता है।"
34 तब इथयोपियन ने फ़िलिप्पुस से पूछा,
"मुझे यह बताओ कि भविष्यद्वक्ता यहाँ
किस के विषय में कह रहा है, अपने बारे में
या किसी और के बारे में।" 35 तब फ़िलिप्पुस
ने बोलना शुरु किया और उसी भाग से यीशु
मसीह के बारे में बताया।
36 चलते-चलते जब वे बहुत पानी के पास
आए, तब इथयोपियन ने कहा, "देखो, यहाँ
खूब पानी है, मैं बपतिस्मा क्यों नहीं ले
सकता हूँ?" 37 फ़िलिप्पुस ने उत्तर दिया
"यदि तुम पूरे मन से भरोसा करते हो, तो तुम्हें
बपतिस्मा दिया जा सकता है।" उसने कहा,
"मुझे यकीन है कि यीशु मसीह परमेश्वर
के बेटे हैं।" 38 तब फ़िलिप्पुस ने रथ को
रोक दिए जाने का हुक्म दिया। फ़िलिप्पुस
और इथयोपियन, दोनों ही पानी में गए और
उसे बपतिस्मा दिया गया। 39 जब वे पानी
से बाहर आए, प्रभु का आत्मा फ़िलिप्पुस
को कहीं और उठा ले गया। उसके बाद

[a] **8.32** बाइबल [b] **8.32** यीशु ने

इथयोपियन ने उसे कभी नहीं देखा और वह आनन्द करते हुए अपने मार्ग पर चल दिया।
40 लेकिन फ़िलिप्पुस अश्दोद में आ गया। उस क्षेत्र से गुज़रते हुए वह सभी शहरों में सुसमाचार देता रहा जब तक कि कैसरिया न पहुँच गया।

9 यीशु मसीह के शिष्यों को धमकी देने और जान से मारने के साथ ही शाऊल प्रधान पुरोहित के पास पहुँचा। 2 उसने दमिश्क के आराधनालयों के लिए अनुमति पत्र माँगा। इसलिए कि वह यीशु के मानने वाले स्त्री-पुरुषों को बाँधकर यरुशलेम ला सके। 3 वह दमिश्क के पास पहुँचा ही था, कि अचानक उसके चारों तरफ़ आकाश से प्रकाश चमका। 4 वह ज़मीन पर गिर गया और यह आवाज़ सुनी, "शाऊल, शाऊल, तुम मुझे पीड़ा क्यों दे रहे हो, "

5 उसने कहा, "आप कौन हैं प्रभु, " यीशु ने कहा, "मैं यीशु हूँ, जिसे तुम पीड़ा दे रहे हो।"

6 यीशु ने उससे कहा, "उठो शहर में जाओ और तुम्हें बतलाया जाएगा कि तुम्हें क्या करना चाहिए।"

7 जो लोग उसके साथ यात्रा कर रहे थे वे मुँह बन्द किए खड़े रहे। वे आवाज़ तो सुन रहे थे लेकिन कोई दिख नहीं रहा था। 8 शाऊल ज़मीन पर से उठा और जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो कुछ भी देख नहीं सकता था। उसके साथ के लोग उसका हाथ पकड़ कर उसे दमिश्क लाए। 9 वह तीन दिन तक कुछ नहीं देख सकता था, न ही उसने उन दिनों में कुछ खाया।

10 दमिश्क में हनन्याह नाम का यीशु का शिष्य था। एक दर्शन में यीशु ने उससे कहा, "हनन्याह"। जवाब में उसने कहा, "मैं यहाँ हूँ, प्रभु"

11 यीशु ने, उससे कहा, "उठो और उस सड़क पर जाओ जो 'सीधी' कहलाती है। वहाँ यहूदा के घर में तारसुस के शाऊल के बारे में पूछ-ताछ करो, वह प्रार्थना में लगा हुआ है। 12 उसने दर्शन में हनन्याह नामक व्यक्ति को अपने ऊपर हाथ रख कर प्रार्थना करते हुए देखा है, ताकि वह फिर से देखने लगे।"

13 तब हनन्याह ने उत्तर दिया, "प्रभु इस व्यक्ति के बारे में मैंने बहुतों से सुना है। वह यह कि यरुशलेम के सन्तों के साथ इसने बुरा व्यवहार किया है। 14 यहाँ पर वह प्रधान पुरोहितों के अधिकार के साथ आया है कि जो लोग आपका नाम लेते हैं, उन्हें जंजीरों से बाँधे।"

15 लेकिन यीशु ने उससे कहा, "जाओ, क्योंकि वह मेरा चुना हुआ है, ताकि, राजाओं और इस्राएलियों के सामने मेरी गवाही दे। 16 मैं उसे दिखाऊँगा कि मेरे नाम के लिए उसे कितना दुख उठाना पड़ेगा।"

17 हनन्याह ने जाकर घर में प्रवेश किया और अपने हाथों को उस पर रख कर कहा, "भाई शाऊल, प्रभु यीशु ने जो तुम्हें सड़क पर जाते समय तुम्हें दिखे थे मुझे तुम्हारे पास भेजा है ताकि तुम्हारी आँखें खुल जाएँ और तुम पवित्र आत्मा से भर जाओ।" 18 तुरन्त उसकी आँखों से छिलके के समान कुछ गिरा। तुरन्त उसकी आँखों में रोशनी आ गयी, वह उठा और उसे बपतिस्मा दिया गया। 19 जब उसने खाना खाया तो उसे ताकत मिली। तब वह उन शिष्यों के साथ ठहर गया जो दमिश्क में थे।

20 तुरन्त वह आराधनालय में यह संदेश देने लगा कि यीशु मसीह परमेश्वर के बेटे हैं। 21 लेकिन जिन्होंने उसे सुना वे आश्चर्य से भर गए और कहा, "क्या यह वही नहीं जो

यरुशलेम में यीशु के कहलाने वालों को नाश
करता था। यहाँ भी वह इसीलिए आया है
कि ऐसे लोगों को प्रधान पुरोहित के पास
बाँध कर ले जाए?” 22 लेकिन शाऊल और
भी सामर्थी होता गया। वह दमिश्क में रहने
वाले यहूदियों को सबूत दिया करता था कि
यीशु ही मसीह हैं।
23 काफ़ी दिनों के बाद यहूदियों ने उसे मार
डालने की योजना बनायी। 24 लेकिन पौलुस
को इस बात की खबर लग गयी। वे दिन
रात फाटक पर इस बात की तलाश में बैठे
रहते थे कि पौलुस को किसी तरह खत्म कर
डालें। 25 तब शिष्यों ने रात में उसको टोकरे
में रख कर दीवार से लटका कर बाहर कर
दिया।
26 जब शाऊल यरुशलेम आया, उसने
कोशिश की, कि शिष्यों के झुण्ड में मिल
जाए, लेकिन वे सभी उस से डरे हुए थे।
उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि पौलुस यीशु
का शिष्य बन चुका है। 27 लेकिन बरनबास
उसे प्रेरितों के पास लाया और बताया, कि
पौलुस ने दमिश्क जाते समय सड़क पर यीशु
को देखा था। यह भी कि यीशु ने उससे
बातचीत की और यह कि यीशु के नाम में
दमिश्क में साहस से संदेश दिया। 28 वह
उनके साथ यरुशलेम में रहा और आता जाता
रहा। 29 यीशु के सम्बन्ध में वह दिलेरी से
बोलता रहा। वह यूनानी बोलने वाले यहूदियों
के साथ बहस करता रहा, लेकिन वे उसे
मार डालना चाहते थे। 30 जब भाईयों को
यह मालूम हुआ, वे उसे कैसरिया लाए और
तारसुस को भेज दिया।
31 सारे यहूदिया, गलील और सामरिया की
मण्डलियों[a] में शान्ति बनी रही, मज़बूती
आती गयी और प्रभु के डर में चलने के साथ
पवित्र आत्मा की शान्ति के साथ चर्च संख्या
में भी बढ़ता गया।
32 जब पतरस देश के उस भाग से गुज़रा,
तो वह लुद्दा में रहने वाले सन्तों से भी
मिला। 33 वहाँ पर उसने एनियास नामक एक
व्यक्ति को देखा, जो अपंग था और आठ
साल से बिस्तर पर पड़ा हुआ था। 34 पतरस
ने उससे कहा, “एनियास, यीशु मसीह तुम्हें
स्वस्थ करते हैं, उठो और अपना बिस्तर
ठीक करो” वह तुरन्त उठ बैठा। 35 वे सभी
जो लुद्दा और शारोन में थे, उसे देख कर यीशु
पर विश्वास लाए।
36 याफ़ा में तबीता अर्थात् दोरकास नाम
की एक शिष्या थी। यह स्त्री दूसरों की बहुत
मदद[b] करती थी। 37 उन दिनों में बीमार होने
के बाद वह मर गयी। उसे नहलाने के बाद
उन्होंने उसे ऊपर के कमरे में रखा। 38 लुद्दा
याफ़ा के पास था और शिष्यों को खबर लग
गयी थी कि पतरस वहाँ हैं। इसलिए उन्होंने
वहाँ दो व्यक्तियों को भेजा ताकि पतरस
बिना देरी किए आ जाए।
39 पतरस उठा और उनके साथ चल पड़ा।
जब वह वहाँ पहुँचा, वे उसे ऊपरी कमरे में
ले गए। सारी विधवाएँ उसके पास खड़ी रो
रही थीं। अपने जीवनकाल में दोरकास ने जो
कपड़े सिले थे, वे पतरस को दिखा रही थीं।
40 लेकिन पतरस ने उन सब को बाहर
कर दिया, घुटनों के बल आकर, प्रार्थना
की। उस शव की तरफ़ देख कर कहा,
“तबीता, उठो।” उसने अपनी आँखें खोलीं
और जब पतरस को देखा, तो बैठ गयी।
41 पतरस ने अपने हाथों को उसकी तरफ़
बढ़ा कर उसे उठा कर खड़ा किया। उसने
सन्तों और विधवाओं को बुलाया और उसे
जीवित उनके हाथों में सुपुर्द कर दिया। 42 यह

[a] **9.31** चर्चों [b] **9.36** भले काम और दान

बात सारे याफ़ा में फैल गयी और बहुतों ने
यीशु पर विश्वास किया। 43 याफ़ा में शमौन
नामक एक चमड़े का काम करने वाले के
यहाँ वह बहुत दिन तक रहा।

10 कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का
एक व्यक्ति था। वह एक इटली
की रेजिमेण्ट का प्रधान था 2 वह एक भला
भक्त मनुष्य और अपने कुटुम्ब सहित
परमेश्वर का आदर सम्मान करने वाला था।
वह यहूदी लोगों को बहुत दान देता था।
उसका जीवन प्रार्थनामय था। 3 दोपहर के
तीन बजे उसने एक दर्शन में एक स्वर्गदूत को
आकर यह कहते हुए सुना, "कुरनेलियुस"
4 उसको देखते ही वह डर गया और
कहा, "यह क्या है प्रभु?" उसने जवाब में
कहा, "तुम्हारी प्रार्थनाएँ और भलाई के काम
परमेश्वर के सामने एक यादगार के रुप में
पहुँचे हैं। 5 अब याफ़ा में कुछ लोगों को भेज
कर शमौन को जो पतरस भी कहलाता है,
बुलवा लो। 6 वह समुद्र तट पर रहने वाले
चमड़े का रोज़गार करने वाले शमौन के यहाँ
मेहमान है।"
7 जब कुरनेलियुस से बातचीत करने वाला
स्वर्गदूत चला गया, उसने अपने घर के दो
नौकरों और एक ईमानदार सैनिक को जो
उसकी सेवा करने वालों में से थे, बुलाया।
8 सभी बातें उन्हें बता कर उसने उन्हें याफ़ा
भेज दिया।
9 अगले दिन जब वे चलते-चलते शहर के
नज़दीक पहुँचने ही वाले थे, दोपहर लगभग
बारह बजे, पतरस घर की छत पर प्रार्थना
करने गया हुआ था। 10 उसे बहुत ज़ोर से भूख
लगी और कुछ खाना चाहा। लेकिन जब वे
खाना बना ही रहे थे, वह बेहोश सा हो गया।
11 आकाश खुल गया और उसने एक बड़ी
चादर पृथ्वी पर उसकी तरफ़ उतरती हुयी
देखी। 12 इस चादर में इस ज़मीन पर रेंगने
वाले चार पैर के प्राणी, जंगली जानवर और
उड़ने वाले पक्षी थे। 13 तभी एक आवाज़
आयी, "पतरस उठो, मारो और खाओ।"
14 लेकिन पतरस बोला, "ऐसा नहीं हो
सकता प्रभु क्योंकि मैंने ऐसी कोई चीज़ नहीं
खायी, जो अशुद्ध या अपवित्र है।"
15 दूसरी बार उसने फिर से आवाज़ सुनी,
"जिस को परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे
अशुद्ध न कहो।" 16 ऐसा तीन बार हुआ और
वह चादर फिर से आकाश में उठा ली गयी।
17 जब पतरस सोच ही रहा था कि इस
दर्शन का मतलब क्या हो सकता है, तभी
कुरनेलियुस द्वारा भेजे गए लोग शमौन के घर
का पता पूछते हुए दरवाज़े के सामने खड़े
हुए थे। 18 उसने वहाँ पूछा, "क्या शमौन जो
पतरस भी कहलाता, यहीं मेहमान है?
19 जब पतरस उस दर्शन के बारे में सोच
रहा था, पवित्र आत्मा ने कहा, "देखो, तीन
आदमी तुम से मिलना चाहते हैं। 20 इसलिए
उठो और नीचे जाओ। बिना शक किए उनके
साथ जाओ, क्योंकि उनको मैंने ही भेजा है।"
21 तब पतरस उन लोगों से मिलने के लिए
उतरा जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था। उसने
कहा, "देखो, मैं ही हूँ, जिस की तलाश में
तुम हो। तुम यहाँ क्यों आए हो?"
22 तब उन लोगों ने कहा, "सूबेदार
कुरनेलियुस अच्छे चालचलन वाला व्यक्ति
है और परमेश्वर की इज़्ज़त करता है।
यहूदियों के बीच उसका अच्छा नाम है, और
स्वर्गदूत के द्वारा परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी

है, कि तुम्हें अपने घर में बुलाकर तुम्हारी
बातें सुने।" 23 तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर
उनकी आवभगत की।
अगले दिन पतरस उनके साथ चल
पड़ा। याफ़ा से कुछ भाई लोग भी उसके
साथ हो लिए। अगले दिन वे कैसरिया पहुँचे।
कुरनेलियुस अपने रिश्तेदारों और नज़दीकी
दोस्तों के साथ इन्तज़ार कर रहा था। 25 जैसे
ही पतरस भीतर प्रवेश करने पर था, आदर
के रूप में कुरनेलियुस औंधे मुँह पतरस के
सामने लेट गया। 26 लेकिन पतरस ने यह कह
कर उसे उठाया, "उठो, खड़े हो। मैं तो एक
इन्सान हूँ।"
27 उन से बातचीत करते हुए वह भीतर
गया और बहुत से लोगों को बैठे हुए पाया।
28 उसने उन से कहा, "तुम यह जानते हो
कि एक यहूदी के लिए किसी दूसरी जाति
के व्यक्ति के साथ मिलना जुलना या उसे
भेंट देना जायज़ नहीं है। लेकिन परमेश्वर
ने मुझे दिखाया है कि मैं किसी भी व्यक्ति
को अपवित्र या अशुद्ध नहीं कहूँ। 29 इसलिए
बिना किसी शिकायत और देरी किए बिना मैं
यहाँ आया हूँ। इसलिए मेरा सवाल यह है कि
मुझे, लोगों को भेज कर क्यों बुलवाया गया
है?"
30 कुरनेलियुस बोला, "चार दिन से मैं अब
तक उपवास में हूँ। तीन बजे मैं अपने घर
में प्रार्थना कर रहा था और देखो चमकते
कपड़े पहने एक व्यक्ति मेरे सामने आ खड़ा
हुआ।" 31 उसने कहा, "कुरनेलियुस, तुम्हारी
प्रार्थना सुनी गयी है और परमेश्वर के सामने
तुम्हारे अच्छे कामों को याद किया जाता है।
32 इसलिए याफ़ा में शमौन को जो पतरस
कहलाता है, बुला लो। वह समुद्र तट पर
रहने वाले चमड़े का व्यापार करने वाले,
शमौन के यहाँ मेहमान है। 33 इसलिए तुरन्त
मैंने तुम्हारे पास संदेश भेजा, अच्छा हुआ कि
तुम आ गए हो। इसलिए हम सभी परमेश्वर
के सामने उन सब बातों को सुनने के लिए
बैठे हैं, जिन्हें परमेश्वर ने कहने की आज्ञा
दी है"
34 तब पतरस ने अपना मुँह खोला और
कहा, 35 "सच यह है कि परमेश्वर किसी
की तरफ़दारी नहीं करते हैं। हर एक जाति[a]
में वह उन सभी को अपनाते हैं जो उनकी
इज़्ज़त करते, डरते, और खरी चाल चलते
हैं, वे उसे भाते हैं। 36 जो वचन[b] परमेश्वर
ने इस्राएलियों को दिया था जब उन्होंने
यीशु मसीह के द्वारा[c] शान्ति का सुसमाचार
सुनाया। 37 मैं कहता हूँ कि वह वचन तुम
जानते हो, जो यूहन्ना के बपतिस्मे के प्रचार
के बाद गलील से शुरू होकर सारे यहूदियों
में फैल गया। 38 किस तरह से परमेश्वर ने
यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ[d]
से अभिषेक किया। किस तरह से वह भलाई
करते और उन सभी को स्वस्थ करते गए जो
शैतान के सताए हुए थे, क्योंकि परमेश्वर
उनके साथ थे,
39 यहूदियों की भूमि और यरुशलेम दोनों
ही में जो कुछ उन्होंने किया, उस सभी के
हम गवाह हैं। उन्होंने उसे क्रूस पर लटका
कर मार डाला। 40 परमेश्वर ने यीशु को
तीसरे दिन ज़िन्दा कर दिया और खुले आम
दिखा डाला। 41 सभी को नहीं लेकिन उन
गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहले ही से
चुन लिया था अर्थात् हमें जिन्होंने उनके जी
उठने के बाद उनके साथ खाया और पिया
था। 42 उन्होंने हमें यह हुक्म दिया कि हम
लोगों को संदेश दें और गवाही दें, कि वही हैं,
जिन्हें ज़िन्दों और मुर्दों का इन्साफ़ करने के

[a] **10.35** राष्ट्र [b] **10.36** संदेश [c] **10.36** जो सब के प्रभु हैं [d] **10.38** अधिकार

लिए परमेश्वर ने अभिषेक[a] किया। 43 सभी
भविष्यद्वक्ता उनके बारे में गवाही देते हैं,
कि जो कोई उन[b] पर भरोसा रखेगा, उनके
नाम से गुनाहों की माफ़ी पाएगा।"
44 जब पतरस यह कह ही रहा था, पवित्र
आत्मा उन सभी पर उतर आया, जिन्होंने
वचन[c] सुना वे सभी विश्वासी जो पतरस
के साथ आए थे 45 और खतना वाले थे,
आश्चर्य से भर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा
गैर यहूदियों पर भी उण्डेल दिया गया था।
46 क्योंकि उन्होंने गैरयहूदियों को तरह-तरह
की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई
करते सुना 47 तब पतरस ने कहा, "जिन
लोगों ने हमारी तरह पवित्रात्मा पाया है,
क्या उनके बपतिस्मा लेने में कोई रोक लगा
सकता है?" 48 तब उसने हुक्म दिया कि यीशु
मसीह[d] के नाम से उन्हें बपतिस्मा दिया जाए।
उन्होंने उससे बिनती की कि कुछ और दिन
तक वह उनके साथ रहे।

11 यहूदिया में रहने वाले प्रेरितों और
भाईयों ने सुना कि गैरयहूदियों ने भी
परमेश्वर के वचन को अपना लिया है। 2 जब
पतरस यरुशलेम आया तो खतना किए हुए
विश्वासियों ने उसकी खिलाफ़त यह कहते
हुए की, 3 कि "तुम खतना रहित लोगों में जा
मिले और उनके साथ खाया-पीया।"
4 लेकिन पतरस ने शुरुआत से लेकर सब
कुछ तरतीब से बता दिया। 5 उसने कहा, "मैं
याफ़ा नाम के शहर में प्रार्थना कर रहा था।
तभी मैं बेसुध हो गया और एक दर्शन देखा।
चादर के समान कुछ चीज चारों कोनों से
आकाश से लटकती हुयी मेरे पास आयी।
6 इसलिए जब मैंने ध्यान से देखा तो पाया कि
उसमें पृथ्वी के चार पैरों वाले पशु, जंगली
पशु, रेंगने वाले जन्तु और आकाश के पक्षी
थे। 7 मैंने एक आवाज़ को यह कहते हुए
सुना, 'उठो, पतरस, मारो और खाओ।'
8 लेकिन मैंने कहा, 'नहीं प्रभु ऐसा नहीं
होगा, इसलिए कि कोई भी अपवित्र या
अशुद्ध चीज़ मेरे मुँह में आज तक नहीं गयी
है।'
9 लेकिन आकाश से फिर एक आवाज़
आयी, 'जिसे परमेश्वर ने पवित्र किया है
उसे अपवित्र मत कहो। 10 ऐसा तीन बार
हुआ और फिर वह सब कुछ आकाश में उठा
लिया गया
11 और देखो, उसी पल कैसरिया से तीन
आदमी मुझ से मिलने वहाँ आ पहुँचे। 12 तब
पवित्र आत्मा ने मुझ से कहा कि बिना शक
किए हुए मैं उनके साथ जाऊँ। 13 उसने हमें
बताया कि कैसे उसने एक स्वर्गदूत को
अपने घर में देखा, जिस ने खड़े-खड़े कहा,
'याफ़ा में लोगों को भेज कर शमौन को जो
पतरस कहलाता है, बुलवा लो। 14 वह तुम्हें
वह सब बतलाएगा, जिस से तुम और तुम्हारा
कुटुम्ब मुक्ति पा जाएगा।'
15 जैसे ही मैंने अपना मुँह बोलने के लिए
खोला, पवित्रात्मा उन पर उसी तरह उतरा,
जैसे शुरु में हम पर उतरा था। 16 तब वही
बात मुझे याद आयीः 'यूहन्ना ने तुम्हें पानी
से बपतिस्मा दिया था, लेकिन तुम्हें पवित्र
आत्मा से बपतिस्मा मिलेगा।' 17 इसलिए
जब परमेश्वर ने विश्वास करने वालों को
वही वरदान दिया, जो हमें दिया, तो मैं कौन
हूँ कि परमेश्वर के विरोध में खड़ा होऊँ?"
18 जब उन्होंने ये बातें सुनीं, तो खामोश हो
गए और यह कहते हुए परमेश्वर की बड़ाई
की, "परमेश्वर ने गैरयहूदियों को भी जीवन
के लिए मन बदलाव का दान दिया"

[a] **10.42** अलगग [b] **10.43** यीशु [c] **10.44** संदेश [d] **10.48** परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्रात्मा

19 लोग स्तिफ़नुस के समय सताव की
वजह से यात्रा करते-करते फ़ीनीके, साइप्रस
और अन्ताकिया तक सिर्फ़ यहूदियों को
वचन सुनाते गए थे। 20 उन में से कुछ लोग
साइप्रस और कुरेनी थे। जब वे अन्ताकिया
आए तब उन्होंने यूनानी लोगों को यीशु के
बारे में बताया। 21 प्रभु का हाथ उनके साथ
था। बहुत से लोगों ने विश्वास किया और
यीशु को अपना लिया।

22 तब यरुशलेम के चर्च के कानों तक
यह खबर पहुँची। उन्होंने बरनबास को
अन्ताकिया भेजा। 23 जब आकर उसने
परमेश्वर की असीम और शर्तहीन कृपा[a] को
देखा तो उसे खुशी हुयी। उसने उन सभी को
दिलासा दिलायी कि उन्हें यीशु की समीपता
में रहना चाहिए। 24 बरनबास एक भला,
पवित्रात्मा और विश्वास से भरा व्यक्ति था
और बड़ी संख्या में लोग यीशु के शिष्य बन
गए।

25 तब बरनबास शाऊल की तलाश में
तारसुस की ओर चल दिया 26 जब शाऊल
उसे मिल गया, तो वह उसे अन्ताकिया
लाया। पूरे एक साल तक वे चर्च के साथ
मिलते रहे और बहुत से लोगों को सिखाते
रहे। अन्ताकिया में पहली बार लोगों ने
शिष्यों को मसीही कहा।

27 उन्हीं दिनों में कई नबी[b] यरूशलेम से
अन्ताकिया आए। 28 उन में से एक अगबुस
नामक व्यक्ति ने खड़े होकर पवित्रात्मा
की प्रेरणा से कहा कि सारी दुनिया में एक
ज़बरदस्त आकाल पड़ेगा। क्लौदियुस सीज़र
के समय में ऐसा हुआ भी। 29 तब शिष्यों
ने यह फ़ैसला किया कि हर एक अपनी
योग्यता के अनुसार यहूदिया में रहने वाले
विश्वासियों की मदद के लिए कुछ भेजे।
30 उन्होंने ऐसा किया भी, बरनबास के और
शाऊल के हाथों उन्होंने अगुवों[c] तक मदद
पहुँचायी थी।

12 उसी समय हेरोदेस राजा ने चर्च के
कुछ लोगों को परेशान करने[d] के
लिए अपने हाथ को बढ़ाया। 2 उसने यूहन्ना
के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला।
3 क्योंकि उसके ऐसा करने से यहूदी खुश
हुए, उसने पतरस के साथ भी यही करना
चाहा। ये अखमीरी रोटी के दिन थे। 4 उसने
उसे हिरासत में लेकर जेल में डाल दिया और
सैनिकों के चार झुण्डों की पहरेदारी में रखा,
ऐसा इसलिए ताकि फ़सह के त्यौहार के बाद
उन्हें लोगों के सामने ले आए।

5 इसलिए पतरस जेल में रखा गया, लेकिन
मण्डली बिना रुके उसके लिए प्रार्थना में
लगी रही। 6 जब हेरोदेस उसे बाहर लाने ही
पर था, उसी रात पतरस दो जंजीर से बँधा
हुआ दो सिपाहियों के बीच सो रहा था।
दरवाज़े पर बैठे पहरेदार जेल की रखवाली
कर रहे थे। 7 अचानक प्रभु का स्वर्गदूत वहाँ
आ पहुँचा और जेल में रोशनी फैल गयी।
उसने पतरस के बाजू में थपथपाकर, उठा
खड़ा किया और कहा, “जल्दी से उठो।”
तभी उसके हाथों से जंजीर गिर पड़ी।

8 स्वर्गदूत ने उससे कहा, “अपनी कमर
कसो और जूते पहनो।” और उसने ऐसा
किया भी। स्वर्गदूत ने कहा, “अपने कपड़े
पहनो और मेरे पीछे आ जाओ।”

9 पतरस उसके पीछे चल पड़ा। उसे यह
लग रहा था कि वह जो कुछ कर रहा है
वह सिर्फ़ स्वप्न में ही है। 10 जब वे पहली
और दूसरी पहरेदार की चौकी से गुज़र चुके,
एक लोहे के दरवाज़े के पास आए जो शहर

[a] **11.23** अनुग्रह [b] **11.27** भविष्यद्वक्ता [c] **11.30** प्राचीनों, प्रिसबुतिरों [d] **12.1** सताने

की ओर ले जाता है। वह अपने आप खुल गया। वे बाहर सड़क पर गए और अचानक स्वर्गदूत उसे छोड़ कर चला गया।

11 जब पतरस अपने आपे में आया उसने कहा, “अब मुझे यह अच्छी तरह मालूम है कि यीशु ने अपने स्वर्गदूत को भेज कर हेरोदेस के हाथ से और यहूदी लोगों के हाथों से छुड़ा लिया है।

12 जब उसने यह सब समझ लिया, तो वह मरियम के बेटे यूहन्ना के घर, जो मरकुस कहलाता है गया, वहाँ बहुत से लोग प्रार्थना करने के लिए इकट्ठे हुए थे। 13 जब पतरस ने फाटक की खिड़की को खटखटाया, रोडा नाम की एक लड़की दरवाज़े पर आयी। 14 जब उसने पतरस की आवाज़ सुनी, तो खुशी की वजह से दरवाज़ा खोलने के बजाए सब को बताने भीतर भागी। उसने सभी को बताया कि पतरस दरवाज़े पर खड़ा है।

15 उन्होंने उससे कहा, “तुम पागल हो गयी हो।” लेकिन वह अपनी बात को दोहराती रही। तब उन्होंने कहा, “वह पतरस का स्वर्गदूत होगा।”

16 लेकिन पतरस दरवाज़ा खटखटाता रहा और जब उन्होंने खिड़की खोली, तो उसे देख कर वे आश्चर्य से भर गए। 17 लेकिन उसने उन्हें अपने इशारे से खामोश करते हुए कहा, और बताया कि यीशु ने किस तरह उसे जेल से छुड़ाया है। उसने उन से कहा, “यह सब बातें याकूब और दूसरे भाईयों को बताओ।” फिर वह वहाँ से दूसरी जगह चला गया।

18 जैसे ही सुबह हुयी, सिपाहियों में हड़कम्प मच गया, कि आखिर पतरस गया तो गया कहाँ। 19 हेरोदेस ने जाँच पड़ताल के बाद जब उसे न पाया, तो पहरेदारों से पूछ-ताछ की और हुक्म दिया, कि उन्हें जान से मार डाला जाए। वह यहूदिया से कैसरिया गया और वहीं रहा।

20 हेरोदेस टायर और सिदोन के लोगों से बहुत नाखुश था, लेकिन वे सभी एक मन होकर आए। उन्होंने बलास्तुस के साथ जो राजा का व्यक्तिगत दास था दोस्ती करके माँग की, कि शान्ति स्थापित हो, क्योंकि राजा के देश से उनके देश को भोजन सामग्री दी जाती थी।

21 एक निश्चित दिन को हेरोदेस राजा ने राजसी ठाठबाठ से राजासन पर बैठ कर उन्हें भाषण दिया। 22 लोग ऊँची आवाज़ में चिल्ला उठे, “यह मनुष्य की नहीं ईश्वर की आवाज़ है।” 23 उसी समय परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उसे मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर की बड़ाई नहीं की। उसके कीड़े पड़ गए और वह मर गया।

24 लेकिन परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया।

25 जब बरनबास और शाऊल यरुशलेम में अपनी सेवा खत्म कर वापस लौटे, उन्होंने उस यूहन्ना को जो मरकुस भी कहलाता है, अपने साथ ले लिया।

13 अन्ताकिया के चर्च में कुछ भविष्यद्वक्ता और शिक्षक थेः बरनबास, नायजर कहलाने वाला शमौन और सायरेने का यूसियस और मनाएन जो हेरोदेस टॅट्रार्क के साथ पाला-पोसा गया था और शाऊल। 2 जब वे उपवास के साथ यीशु का भजन कीर्तन कर रहे थे तब पवित्र आत्मा ने कहा, “मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिस के लिए मैंने उन्हें बुलाया है।” 3 उपवास और प्रार्थना के बाद उनके ऊपर

हाथ रख कर उन्होंने पौलुस और बरनबास
को विदा किया।
4 पवित्र आत्मा की अगुवाई में बरनबास
और शाऊल सिलूकिया गए और वहाँ से
जहाज़ पर चढ़कर कुप्रुस को रवाना हो
गए। 5 जब वे सलमिस पहुँचे, उन्होंने यहूदी
आराधनालयों में परमेश्वर का वचन दिया।
वहाँ पर यूहन्ना उनका सहायक था।
6 जब वे पाफ़ुस टापू से गुज़र चुके,
उन्हें बार-यीशु नामक यहूदी जादूगर और
झूठा भविष्यद्वक्ता मिला। 7 वह देश के
प्रोकॉन्सल सरगयुस पौलुस नामक एक
बुद्धिमान व्यक्ति के साथ था जो बरनबास
और पौलुस से परमेश्वर का वचन सुनना
चाहता था। 8 लेकिन एलीमास जादूगर[a] ने
उनका विरोध किया और प्रोकॉन्सल को
विश्वास करने से रोकना चाहा। 9 तब
पौलुस ने पवित्र आत्मा से भर कर उसकी
तरफ़ गौर से देखा और कहा, 10 "तुम सब
तरह के धोखे और चालाकी से भरे, शैतान
के बच्चे, सारी धार्मिकता के दुश्मन। क्या तुम
यीशु के सच्चे रास्ते को खराब करना बन्द
नहीं करोगे? 11 अब देखो, यीशु का हाथ
तुम्हारे, खिलाफ़ है। तुम अन्धे हो जाओगे
और कुछ समय तक रोशनी को नहीं देख
सकोगे।" तुरन्त उसके ऊपर एक धुँधलापन
और अँधेरा छा गया, और वह टटोलने लगा
कि कोई उसका हाथ पकड़ कर उसकी मदद
करे।
12 प्रोकॉन्सल ने जो कुछ हुआ था देख कर
और प्रभु के वचन से आश्चर्यचकित होकर
विश्वास किया।
13 पौलुस और उसके साथी पाफ़ुस से
निकल कर पंफ़ूलिया में पिरगा तक गए।
वहाँ यूहन्ना उन्हें छोड़कर वापस यरुशलेम
चला गया। 14 पिरगा से निकल कर वे
पिसीदिया में अन्ताकिया आए। वहाँ सब्त
के दिन वे आराधनालय में जाकर बैठ गए।
15 नियमशास्त्र और भविष्यद्वक्ताओं की
किताब के पढ़े जाने के बाद आराधनालय
को चलाने वालों ने उन्हें समाचार भेजा कि
"हे भाईयो यदि तुम्हारे पास कुछ संदेश है,
तो दो।"
16 तब पौलुस ने खड़े होकर अपने हाथों
को दिखा कर कहा, "हे इस्राएलियो, तुम जो
परमेश्वर को इज़्ज़त देते[b] हो, सुनो। 17 इन
इस्राएलियों के परमेश्वर ने हमारे बुज़ुर्गों को
चुना। जब वे मिस्र देश में परदेशी की तरह रह
रहे थे तब उनकी तरक्की की।" अपनी बड़ी
ताकत से वह उन्हें मिस्र से बाहर ले आए।
18 तकरीबन चालीस साल तक परमेश्वर
जंगल में उनके बर्ताव को सहते रहे। 19 जब
कनान देश में उन्होंने सात राष्ट्रों[c] को बर्बाद
कर डाला, तब से उनकी पृथ्वी को बाँट
दिया।
20 तकरीबन चार सौ पचास साल तक
शमूएल के आने तक, उन्होंने न्यायी[d] दिए।
21 इसके बाद उन लोगों ने एक राजा की माँग
की। परमेश्वर ने उन्हें कीश के बेटे शाऊल
को बेन्जामिन के गोत्र का था, राजा होने के
लिए दिया। उसने चालीस साल तक शासन
किया। 22 जब उसे राजासन से उतार दिया
गया, तब दाऊद को राजा होने के लिए खड़ा
किया। दाऊद के बारे में यह गवाही दी गयी,
"मैंने यिशै के बेटे दाऊद को पा लिया है। वह
मेरे मन के मुताबिक है और जो मैं कहूँगा, वह
वही करेगा।"
23 परमेश्वर ने अपने वायदे के अनुसार,
इसी व्यक्ति के वंश से इस्राएल के लिए
एक मुक्तिदाता यीशु को भेजा। 24 यीशु के

[a] **13.8** टोन्हे [b] **13.16** या डरते [c] **13.19** जातियों [d] **13.20** जज

आने से पहले, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने
इस्राएल के सभी लोगों के लिए मन बदले
जाने के बपतिस्मे का संदेश दिया। 25 जब
यूहन्ना का समय खत्म होने पर था, उसने
कहा, 'तुम मुझे जो समझते हो, मैं वह नहीं
हूँ। लेकिन देखो, मेरे बाद में एक आने वाला
है। मैं इस लायक भी नहीं कि उसके पैर की
जूतियों को उतारूँ।

26 "हे लोगो, भाईयो, अब्राहम के
खानदान[a] के बच्चो, तुम में से जो भी
परमेश्वर से डरते हो, तुम्हारे लिये यह
मुक्ति का संदेश भेजा गया है। 27 क्योंकि
यरुशलेम में रहने वाले लोगों और
उनके शासकों ने न उन्हें पहचाना, न ही
भविष्द्वक्ताओं की वाणी सुनी, जिन की
किताबें हर सब्त के दिन पढ़ी जाती हैं।
यीशु मसीह का दोषी ठहराया जाना भी
भविष्यद्वक्ताओं की बात का पूरा होना
था। 28 हालाँकि उन्होंने यीशु को मौत की
सज़ा का दोषी नहीं पाया, फिर भी उन्होंने
पिलातुस से बिनती की, कि उन्हें मार डाला
जाए। जब 29 यीशु के बारे में सब लिखा
हुआ उन्होंने[b] पूरा किया तो उन्होंने यीशु को
क्रूस पर से उतार कर, कब्र में रख दिया।
30 लेकिन परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में
से जिला दिया। 31 गलील से जो लोग यीशु
के साथ यरुशलेम आए थे, उन्होंने बहुत
दिनों तक यीशु को देखा। वे लोग दूसरों के
सामने इस सच्चाई के गवाह थे।

32 हम ने इस खुशी की बात की घोषणा तुम
से की, कि जो वायदा बुज़ुर्गों से किया गया,
33 उसे हमारे लिए यीशु को जिला कर पूरा
किया। जैसा कि दूसरे भजन में भी लिखा है,
'तुम मेरे बेटे हो, मैंने तुम्हें आज जन्म दिया
है।'

34 परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से
जिलाया, जो फिर कभी मरने के नहीं, और
यह भी कहाः 'मैं तुम्हें दाऊद की अटल
आशीष दूँगा।'

35 इसीलिए किसी और भजन में भी उन्होंने
कहा, 'आप अपने पवित्र जन को कभी भी
सड़ने नहीं देंगे।'

36 परमेश्वर की इच्छा में अपनी पीढ़ी[c] की
सेवा करने के बाद दाऊद मर गया, अपने
बुज़ुर्गो की कब्र के पास ही दफ़नाया गया
और सड़ गया। 37 लेकिन, जिसे[d] परमेश्वर
ने जिलाया, वह मिट्टी में सड़ते नहीं रहे।

38 इसलिए भाईयो और बहनो यह जान लो,
कि इस व्यक्ति के द्वारा अपराधों की माफ़ी
का संदेश दिया गया है। 39 जिन्होंने उन पर
भरोसा किया, वे सभी निर्दोष ठहराए गए[e]।
मूसा के नियमशास्त्र से यह निर्दोष ठहराया
जाना संभव नहीं था। 40 इसलिए सावधान
रहना, ताकि जो कुछ भविष्यद्वक्ताओं[f] ने
कहा था, वह सब कुछ तुम्हारे ऊपर न
आए। 41 हे बदनामी[g] करने वालो, देखो और
आश्चर्य से भर जाओ और मिट जाओ, क्योंकि
मैं तुम्हारे समय में एक ऐसा काम कर रहा हूँ
जिस के बारे में अगर तुम्हें कोई बताए तो
तुम बिल्कुल उसकी बात न मानना।"

42 जब पौलुस और बरनबास बाहर जाने
लगे तो लोगों ने उन से बिनती की, कि आने
वाले सब्त के दिन यही बातें उन्हें फिर सुनाई
जाएँ। 43 जब उपासना[h] खत्म हो गयी तो
बहुत से यहूदी और यहूदी मत में आए हुए
भक्तों में से बहुत लोग पौलुस और बरनबास

---

[a] **13.26** घराने [b] **13.29** लोगों ने [c] **13.36** युग [d] **13.37** यीशु को [e] **13.39** छुटकारा पाया [f] **13.40** नबियों
[g] **13.41** निन्दा [h] **13.43** आराधना, इबादत

के साथ चल पड़े। उन्होंने बातचीत करते
हुए उन से बिनती की, कि वे परमेश्वर की
असीम कृपा[a] में बने रहें।
44 अगले सब्त के दिन लगभग पूरा शहर
परमेश्वर का वचन सुनने इकट्ठा हुआ।
45 जब यहूदियों ने भीड़ देखी, तो ईर्ष्या से
भर गए। उन्होंने निन्दा करते हुए पौलुस की
बातों की काट-छाँट की।
46 बड़ी हिम्मत करते हुए पौलुस और
बरनबास ने कहा, “यह ज़रूरी था कि पहले
परमेश्वर के वचन को तुम तक पहुँचाया
जाए। लेकिन यह देख कर कि तुम इसे
अपनाते नहीं हो और हमेशा की ज़िन्दगी पाने
के लायक नहीं बनते, अब हम गैरयहूदियों
को वचन सुनाएँगे। 47 क्योंकि प्रभु ने हमें यह
हुक्म दिया है: ‘मैंने तुम्हें गैरयहूदियों के लिए
रोशनी[b] ठहराया है कि तुम पृथ्वी के आखिर
तक मुक्ति[c] का कारण हो’।”
48 जब गैरयहूदियों ने यह सुना, तो वे खुश
हुए और परमेश्वर के वचन की बड़ाई की।
उन सभी ने विश्वास किया जो अनन्त जीवन
के हकदार थे।
49 यीशु का संदेश उस सारे इलाके में फैल
गया। 50 लेकिन यहूदियों ने भक्त, ऊँचे घराने
की महिलाओं और शहर के मशहूर लोगों
को भड़काया। उन्होंने पौलुस और बरनबास
के खिलाफ़ बलवा करवा कर उन्हें अपने
सरहद[d] के बाहर निकाल दिया। 51 तब वे
उनके खिलाफ़ में अपने पैरों की धूल झाड़
कर इकुनियुम को चले गए 52 और शिष्य
खुशी और पवित्रात्मा से लगातार भरते गए।

14 इकुनियम में यहूदी आराधनालय में
उन्होंने ऐसा संदेश दिया कि बड़ी
संख्या में यहूदी और यूनानियों ने विश्वास
कर लिया। 2 लेकिन अविश्वासी यहूदियों ने
गैरयहूदियों को भाईयों के खिलाफ़ भड़का
कर उनके मन को खिलाफ़त[e] से भर दिया।
3 इसलिए लम्बे अर्से तक वे वहीं ठहर गए।
वे यीशु की असीमित कृपा[f] के बारे में प्रभु
पर भरोसा रखते हुए गवाही, बड़े जोश से
देते थे और प्रभु उनके हाथों से चमत्कारिक
निशान[g] और अजीब काम करवाकर अपने
अनुग्रह के वचन पर गवाही देते रहे। 4 लेकिन
शहर के सारे लोग दो हिस्सों में बँट गए थे।
आधे यहूदियों के साथ और बाकी प्रेरितों की
तरफ़। 5 कुछ गैरयहूदियों और कुछ यहूदियों
ने उनके अधिकारियों के साथ मिल कर
गुस्से से पत्थरवाह करना चाहा। 6 उन्हें यह
खबर लग गयी और लुस्त्रा-दिरबे के नगरों में
और आस-पास के प्रदेशों में भाग गए। 7 वे
वहीं सुसमाचार[h] सुनाते रहे।
8 लुस्त्रा में पाँव से कमज़ोर एक आदमी
बैठा हुआ था: जन्म ही से लंगड़ा होने की
वजह से वह कभी भी चल-फिर न सका
था। 9 वह पौलुस की सुन रहा था। पौलुस
ने उसकी तरफ़ गौर से देखा तो जान लिया
कि उस लंगड़े के पास ठीक हो जाने का
विश्वास था। 10 पौलुस ने चिल्ला कर कहा,
“अपने पाँव के बल सीधे खड़े हो जाओ।”
उसी वक्त वह लंगड़ा उछल कर खड़ा हुआ
और चलने लगा।
11 पौलुस के इस काम को देख कर लोगों
ने लुकाउनिया[i] में चिल्लाते हुए कहा, “इन्सान
की शक्ल में देवता हमारे बीच उतर आए हैं।”
12 उन्होंने बरनबास को ज्यूस और पौलुस को
हिरमेस कहा। पौलुस बोलने में पहल कर
रहा था। 13 ज्यूस का मन्दिर शहर के सामने

[a] **13.43** फ़ज़ल [b] **13.47** ज्योति [c] **13.47** उद्धार [d] **13.50** सीमा [e] **14.2** विरोध [f] **14.3** अनुग्रह
[g] **14.3** चिन्ह [h] **14.7** खुशी की खबर [i] **14.11** भाषा

ही था। उस मन्दिर का पुजारी वहाँ के लोगों
के साथ मिल कर बैल और फूलों की माला
बरनबास और पौलुस को चढ़ाना चाहता था।
14 यह खबर लगते ही प्रेरित, बरनबास और
पौलुस अपने कपड़े फाड़ते हुए, लोगों के
बीच यह चिल्लाते हुए दौड़े, “तुम लोग यह
सब क्या कर रहे हो? 15 तुम्हारी तरह हम
भी इन्सान ही हैं और तुम्हें यह संदेश देते
हैं, कि तुम बेकार की बातों से हट जाओ।
साथ ही जीवित परमेश्वर की तरफ़ मुड़
जाओ, जिन्होंने स्वर्ग[a], पृथ्वी, समुन्दर और
जो कुछ उसमें है, उसे बनाया है।” 16 पुराने
समयों में इन्हीं परमेश्वर ने सभी राष्ट्रों को
अपने-अपने तरीके से जीने दिया था 17 फिर
भी उन्होंने अपने आप को बे-गवाह नहीं
छोड़ा लेकिन भलाई करते रहे। वह तुम्हें
बरसात और फलदायक मौसम देकर तुम्हारे
मनों को खाने तथा खुशी से फलवन्त सन्तुष्ट
करते रहे। 18 यह कहने के बावजूद भी भीड़
को बड़ी मुश्किल से रोक पाए कि उनके लिए
बलिदान न चढ़ाएँ।
19 अन्ताकिया और इकुनियम से आए हुए
यहूदियों ने लोगों को अपनी तरफ़ कर लिया।
पौलुस को पत्थरवाह करने के बाद वे उसे
मरा हुआ समझ कर खींचते हुए शहर के
बाहर तक ले गए। 20 फिर भी जब शिष्य
उसके चारों तरफ़ खड़े हुए थे, वह खड़ा होने
के बाद शहर में आ गया। दूसरे दिन वह
बरनबास के साथ दिरबे चला गया।
21 उस शहर में सु-संदेश देने और शिष्य
बनाने के बाद वे लुस्त्रा, इकुनियुम और
अन्ताकिया लौट आए। 22 शिष्यों की हिम्मत
बढ़ाने और उन्हें विश्वास में बने रहने के
साथ सिखाया, “बड़ी समस्याओं[b] में से
होकर हमें परमेश्वर के राज्य में दुनिया को
छोड़ने के बाद दाखिल होना है।” 23 उन्होंने
प्रार्थना और उपवास के साथ हर एक चर्च
में अगुवों को नियुक्त किया, उसके बाद
उन्हें उस प्रभु के हवाले कर दिया, जिन को
उन लोगों ने अपनाया था। 24 इसके बाद
पिसीदिया से गुज़रते हुए वे पमफूलिया पहुँच
गए।
25 पिरगा में संदेश सुनाने के बाद, वे
अन्ताकिया आ गए।
26 वहाँ से वे अन्ताकिया के लिए रवाना
हुए। जहाँ उन्हें परमेश्वर के उस अनुग्रह
के प्रति सुपुर्द किया गया था जिस की
ज़रूरत उन्हें पूरे किए हुए काम के लिए
थी। 27 वहाँ पहुँचने पर उन्होंने मण्डली[c] को
इकट्ठा किया। उनके साथ मिल कर जो कुछ
परमेश्वर ने बड़े-बड़े काम किए, उसकी
सूचना उन्होंने दी। यह भी कि गैरयहूदियों
के लिए परमेश्वर ने किस तरह से दरवाज़ा
खोल दिया। 28 वे शिष्यों के साथ वहाँ पर
बहुत समय तक ठहरे रहे।

15 कुछ लोग जो यहूदिया से आए
थे यह सिखाने और कहने लगे,
“जब-तक मूसा की प्रथा के अनुसार तुम्हारा
खतना नहीं होगा, तुम मुक्ति या उद्धार
नहीं पा सकोगे।” 2 इसलिए, पौलुस और
बरनबास के साथ उनका झगड़ा होने पर
उन्होंने यह इरादा किया कि इस सवाल का
जवाब पाने के लिए वे प्रेरित और अगुवों के
पास यरुशलेम जाएँगे। 3 चर्च द्वारा भेजे जाने
पर वे, फ़ूनीशिया और सामरिया से गुज़रे।
गैरयहूदियों के बदलाव की खुशखबरी सुनाने
से उन्होंने भाईयों में बड़ी खुशी पैदा की।
4 जब वे यरुशलेम गए तो प्रेरितों और अगुवों
ने उन्हें ग्रहण किया। उन्होंने सब कामों का

[a] **14.15** आकाश [b] **14.22** क्लेशों [c] **14.27** चर्च

बखान किया, जिन्हें परमेश्वर ने उनके लिए
किया था।
5 फ़रीसियों में से जिन्होंने विश्वास किया
था, खड़े होकर कहा, “यह ज़रूरी है कि
उनका खतना किया जाए और वे मूसा के
द्वारा दिए गए नियमों को मानें।”
6 प्रेरित और वहाँ के बुज़ुर्ग अगुवे[a] इस
विषय पर विचार विमर्श के लिए एक जगह
मिले। 7 इसके बाद काफ़ी बहस के बाद,
पतरस खड़ा होकर उन से कहने लगा,
“लोगो और भाईयो, तुम्हें मालूम है कि
कुछ समय पहले परमेश्वर ने एक फ़ैसला
किया, वह यह कि गैरयहूदी मेरे मुँह से
खुशी की खबर सुनें और विश्वास लाएँ।
8 परमेश्वर ने जो मनों को जानने वाले हैं,
पवित्र आत्मा देकर उनकी गवाही दी, जैसा
उन्होंने हमारे साथ किया 9 और उनके तथा
हमारे बीच कोई भेद - भाव नहीं किया
परन्तु विश्वास के द्वारा उनके हृदयों को शुद्ध
किया। 10 इसलिए शिष्यों की गर्दन पर बोझा
रख कर जिसे न हमारे पूर्वज, न हम सह
सकते हैं, तुम परमेश्वर का इम्तिहान क्यों
लेते हो? 11 लेकिन हमें यकीन है कि जैसे
उन्हें अनुग्रह से मुक्ति[b] मिली, हमें भी यीशु
मसीह से मिलेगी।”
12 तब सभा के सभी लोग खामोश रहे और
पौलुस और बरनबास की बात ध्यान से
सुनते रहे। उन दोनों ने उन बड़े-बड़े चिन्हों
और अजीब कामों की चर्चा उन से की, जो
परमेश्वर ने उनके ज़रिए किए थे। 13 उनके
चुप हो जाने के बाद याकूब ने कहना शुरु
किया, “हे लोगो और भाईयो, मेरी सुनो।
14 शमौन ने यह ऐलान किया है कि परमेश्वर
ने किस तरह से पहली बार, गैरयहूदियों पर
कृपा-दृष्टि करके अपने नाम के लिए लोग
अलग किए। 15 यह बात भविष्यद्वक्ता के
शब्दों से स्पष्ट हो जाती है, जैसा कि लिखा
है, 16 ‘इन बातों के बाद मैं लौटूँगा और दाऊद
के गिरे हुए तम्बू को फिर से खड़ा करुँगा।
उसके खण्डहरों को फिर से बनाऊँगा और
स्थिर करुँगा। 17 जिस से कि बचे हुए लोग
और गैरयहूदी जो मेरे नाम के कहलाते हैं,
यीशु को चाहें।
18 यह वही प्रभु हैं जो प्राचीन काल[c] से इन
बातों को प्रगट करते आए हैं।’
19 इसलिए मेरे ख्याल से जो लोग
गैरयहूदियों में से परमेश्वर की तरफ़ मुड़ रहे
हैं, उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए 20 लेकिन
यह कि हम उन्हें यह लिखें, कि मूर्ति से अशुद्ध
किया हुआ खाना न खाएँ, अनैतिक और
अस्वभाविक यौन सम्बन्ध से बचें, गला घोटे
हुए पशुओं के मांस और खून से अलग रहें।
21 क्योंकि पुराने समयों से हर एक शहर में
मूसा के नियमशास्त्र को सब्त के दिन प्रार्थना
भवन में पढ़ा जाता रहा है।
22 तब प्रेरितों और बुज़ुर्ग अगुवों और
पूरे चर्च की राय से वहीं से कुछ लोगों
को चुन कर पौलुस बरनबास के साथ
अन्ताकिया भेजने का फ़ैसला लिया गया।
इन में यहूदा जो बरसबा कहलाता था और
सीलास खास अगुवे थे, 23 उन्होंने उनके हाथ
यह चिट्ठी भेजीः “प्रेरित अगुवे और भाई
लोग अन्ताकिया, सीरिया और किलकिया
के गैरयहूदियों में से विश्वास में आने वालों
को सलाम कहते हैं। 24 हम ने सुना है कि
हम में से कुछ ने हमारे बिना हुक्म के अपनी
बातों से तुम्हें घबरा दिया और तुम्हारे मन को
डावाँडोल कर दिया है। जब कि हम ने ऐसा
कोई आदेश दिया ही नहीं था। 25 इसलिए
एक मत होकर हम को यह अच्छा लगा कि

[a] 15.6 प्राचीन [b] 15.11 माफ़ी [c] 15.18 अतीत

अपने प्रिय बरनबास और पौलुस के साथ
कुछ लोगों को चुन कर तुम्हारे पास भेजें।
26 ये वे लोग हैं, जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु
मसीह के नाम के लिए अपने जीवन को
जोख़िम में डाल दिया था 27 इसीलिए हम
ने यहूदा और सीलास को भेज दिया है, वे
खुद भी तुम्हें ये बातें बतलाएँगे। 28 क्योंकि
पवित्र आत्मा को और हमें यही अच्छा लगा
कि कुछ ज़रूरी बातों के अलावा तुम पर
कुछ और बोझ न डालें। 29 मूर्ति के सामने
चढ़ायी हुयी चीज़ों, खून, गला घोंटे पशुओं
और व्यभिचार से बचे रहो। अगर तुम अपने
आप को इन बातों से बचाए रखोगे तो तुम्हारा
भला होगा।”

30 उन्हें भेजे जाने पर वे अन्ताकिया आए।
जब उन्होंने सभा इकट्ठी की, तब वह चिट्ठी
भी दे दी। 31 उसको पढ़ कर, उन्हें बड़ी
खुशी हुयी और हिम्मत मिली। 32 यहूदा और
सीलास ने, जो खुद भविष्यद्वक्ता थे बहुत
बातों से उन्हें हिम्मत दी और मज़बूत किया।
33 कुछ समय वहाँ पर रुकने के बाद भाईयों
ने उन्हें शान्ति के साथ प्रेरितों के पास भेज
दिया। 34 (फिर भी सीलास को यह ठीक
लगा कि वहीं ठहर जाए।) 35 पौलुस और
बरनबास भी अन्ताकिया में ठहर गए और
अन्य दूसरों के साथ शिक्षा और संदेश देते
रहे।

36 कुछ दिनों के बाद पौलुस ने बरनबास से
कहा, “चलो, उन शहरों में जाएँ, जहाँ हम ने
प्रभु का संदेश सुनाया था और देखें कि हमारे
भाई कैसे हैं।” 37 बरनबास ने यह इरादा कर
लिया था कि यूहन्ना जिसे मरकुस भी कहते
हैं अपने साथ ले जाए। 38 इस व्यक्ति[a] ने
प्रेरितों को पंफ़ूलिया में छोड़ दिया था और
उनके साथ न गया था। 39 इसलिए पौलुस
ने उसे अपने साथ न ले जाना चाहा। 40 उन
दोनों के बीच आपसी मतभेद इतना हुआ कि
उन दोनों ने अपना रास्ता लिया। बरनबास
मरकुस को लेकर कुप्रुस चला गया और
पौलुस ने सीलास को अपने साथ लिया।
भाईयों ने इन दोनों दलों को आशीष वचन
से विदा किया। 41 और वह सीरिया तथा
किलकिया से होता हुआ कलीसियाओं[b] को
स्थिर करता गया।

16 फिर वह दिरबे और लुस्त्रा आया।
वहाँ उसकी मुलाकात तिमोथी
नामक शिष्य से हुयी। वह यीशु की उस
शिष्या का बेटा था, जो पहले यहूदी मत की
थी लेकिन उसका पिता यूनानी था, 2 लुस्त्रा
और इकुनियुम में तिमोथी का अच्छा नाम
था। 3 पौलुस उसे अपने साथ ले जाना चाहता
था, इसलिए उस क्षेत्र के यहूदियों को खुश
करने के लिए उसने उसका खतना करवाया।
उन सभी को मालूम था कि उसका पिता
यूनानी है। 4 जब वे शहरों से होकर गुज़र
रहे थे, तब उन्होंने उन्हें उन बातों को करने
के लिए कहा जिन का निर्णय यरुशलेमी
प्रेरितों और अगुवों ने लिया था। 5 इसलिए
मण्डलियाँ[c] विश्वास में मज़बूत होती गयीं
और हर दिन संख्या में बढ़ती गयीं।

6 जब वे फ़्रिगिया और गलातिया से गुज़रे,
पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया प्रान्त में वचन
देने को मना किया। 7 जब वे मूसिया आए,
तब बितूनिया में प्रवेश करना चाहा, लेकिन
पवित्र आत्मा ने उन्हें ऐसा करने से मना
किया। 8 मूसिया से होते हुए उन्होंने बितूनिया
में प्रवेश करना चाहा, लेकिन पवित्र आत्मा
ने उन्हें ऐसा करने से रोका। मूसिया से होते
हुए वे त्रोआस आ पहुँचे। 9 रात में पौलुस

[a] **15.38** मरकुस [b] **15.41** चर्चों [c] **16.5** चर्च

ने एक दर्शन देखा जिस में मकिदुनिया का
एक व्यक्ति खड़ा होकर बिनती कर रहा
था "मकिदुनिया आकर हमारी मदद करो।"
10 पौलुस को यह दर्शन मिलते ही हम ने
तुरन्त मकिदुनिया जाने की कोशिश की, यह
जानते हुए कि यीशु ने उन्हें सुसमाचार देने के
लिए हमें बुलाया है।
11 इसलिए त्रोआस से निकल कर हम
सीधे समोथ्रेस चल दिए और दूसरे दिन
नियापुलिस। 12 वहाँ से फ़िलिप्पी जो कि
रोमन कॉलोनी के मकिदुनिया के उस हिस्से
का खास शहर है, उस में हम कुछ दिन ठहर
गए।
13 सब्त के दिन हम शहर से बाहर नदी के
किनारे पहुँचे, यह सोच कर कि वहाँ प्रार्थना
करने का कोई स्थान होगा। हम वहाँ बैठ
कर उन स्त्रियों से बातचीत करने लगे जो
वहाँ पर बैठी हुयी थीं। 14 थुआतीरा शहर
की बैजनी वस्त्र बेचने वाली, लुदिया नाम
की एक स्त्री ने जो परमेश्वर की उपासक
थी हमारी बातें सुनी। यीशु ने उसके मन को
खोला, ताकि जो बातें पौलुस ने कहीं थीं,
उन्हें अपना सके। 15 जब उसे और उसके
परिवार को बपतिस्मा दिया गया, उसने एक
बिनती की, "यदि आप लोग मुझे यीशु के
प्रति प्रभु की विश्वासिनी समझते हैं, मेरे यहाँ
आकर ठहरिये।"
16 जब हम प्रार्थना के लिए जा रहे थे, हमारी
मुलाकात एक ऐसी गुलाम लड़की[a] हुयी,
जो भविष्य बताने वाली आत्मा से ग्रसित
थी। वह लोगों के भविष्य बतलाकर अपने
मालिक के लिए काफ़ी पैसा इकट्ठा कर
लिया करती थी। 17 हमारे पीछे चिल्लाते हुए
यह लड़की यह कहती थी, "ये लोग महान
परमेश्वर के सेवक हैं, जो हमें मुक्ति का
रास्ता बतलाते हैं।" 18 वह बहुत समय तक
ऐसा करती रही। पौलुस ने बहुत दुखी होकर
उसकी तरफ़ मुड़ कर उस आत्मा से कहा,
"यीशु मसीह के नाम से मैं तुम्हें हुक्म देता
हूँ, कि उसके भीतर से निकल आओ।" उसी
क्षण वह आत्मा उसमें से निकल आयी।
19 उसके मालिकों ने देखा कि उनके
फ़ायदा उठाने की उनकी आशा जाती रही।
तब वे पौलुस और सीलास को पकड़ कर
बाज़ार तक अधिकारियों तक खींचते ले
आए। 20 और मॅजिस्ट्रेटों तक उन्हें लाकर
कहा, "ये लोग यहूदी हैं और हमारे शहर में
गड़बड़ी फैलाए हुए हैं। 21 वे ऐसी बातें सिखा
रहे हैं, जो हम रोमी लोगों को अपनाना या
मानना वाजिब नहीं है।
22 भीड़ उनके खिलाफ़ उठ खड़ी हुयी और
मॅजिस्ट्रेट ने उनके कपड़े फाड़े और उनकी
पिटाई की। 23 जब वे उन पर खूब बेतें लगा
चुके, तब उन्हें जेल में डाल दिया और जेलर
को हुक्म दिया कि उनकी रक्षा की जाए।
24 ऐसा हुक्म पाकर उसने उन्हें भीतरी कोठरी
में डाल दिया और उनके पैरों को लकड़ी में
जड़ दिया।
25 बीच रात में पौलुस और सीलास प्रार्थना
करते रहे और गीत गाते रहे और कैदी उनको
सुन रहे थे। 26 अचानक ही एक ऐसा भूकम्प
आया जिस से जेल की नींव तक हिल गयी।
तुरन्त सभी दरवाज़े खुल गए और हर एक
जंजीर खुल कर गिर पड़ी। 27 जेलर की नींद
खुल गयी। जेल के दरवाज़े खुले देख कर
उसको लगा कि कैदी भाग गए होंगे। तुरन्त
उसने अपनी तलवार निकाल कर अपने
आपको मारना चाहा। 28 लेकिन पौलुस ने
ऊँची आवाज़ से चिल्ला कर कहा, "अपने
आपको मत मारो, क्योंकि हम सभी यहीं हैं।"

[a] **16.16** दासी

29 तब जेलर दीपक लेकर डरता काँपता
दौड़ता आया और पौलुस, सीलास के कदमों
पर गिर पड़ा। 30 उन्हें बाहर लाकर उन से
पूछा, “श्रीमानजी, मुक्ति पाने के लिए मुझे
क्या करना चाहिए?”
31 उन्होंने कहा, “यीशु मसीह पर भरोसा
करो, तुम मुक्ति पा जाओगे और तुम्हारा
परिवार भी।” 32 उसे और जो लोग[a] वहाँ
थे उनको, उसने यीशु के विषय में बताया।
33 रात ही में उसने उनके घाव धोए और
परिवार सहित बपतिस्मा लिया। 34 उन्हें
अपने घर लाकर उसने उन्हें खाना खिलाया।
परमेश्वर पर विश्वास करके अपने परिवार
सहित उसने खुशी मनायी।
35 सुबह होते ही मॅजिस्ट्रेट ने कुछ
अधिकारियों को भेजा कि वे कहें, “इन
लोगों को जाने दिया जाए” 36 जेलर ने कहा,
“मॅजिस्ट्रेट ने यह आज्ञा दी है, कि तुम लोगों
को छोड़ दिया जाए। इसलिए यहाँ से शान्ति
से चले जाओ।”
37 लेकिन पौलुस ने उत्तर दिया, “बिना
किसी जाँच पड़ताल उन्होंने सब के सामने
हमें मारा है। हम रोमी नागरिक हैं। हमें जेल
में उन्होंने डाला है। अब क्या चुपचाप से वे
हमें भेजना चाहते हैं? ऐसा नहीं हो सकता है।
उन्हें खुद आकर हमें विदा करने को कहो।”
38 आफ़िसर लोगों ने यह बात मॅजिस्ट्रेट
लोगों को बता दी। जब उन्हें यह मालूम
पड़ा कि वे रोमी नागरिक हैं, तो डरने लगे।
39 आकर उन्होंने बिनती की और बाहर
निकालने के बाद कहा कि शहर से चले
जाएँ। 40 वे जेल से निकल कर लुदिया के
घर पहुँचे। वहाँ भाई-बहनों से मिल कर उन्हें
हिम्मत दिलायी और आगे बढ़ गए।

17 वे एम्फ़िपोलिस और अपोलेनिया
से गुज़रते हुए थिस्सलुनीके पहुँचे
जहाँ एक यहूदी आराधना का घर था।
2 जैसा पौलुस का तरीका था, वह आराधना
घर में तीन सब्त के दिन जाता रहा और
पवित्रशास्त्र[b] में से उनके साथ बातचीत
करता रहा। 3 समझाते हुए और दिखाते हुए
कि मसीह का दुख उठाना और मरे हुओं में
से जी उठना ज़रूरी है उसने कहा, “मैं जिस
यीशु के बारे में सिखा रहा हूँ, वही मसीह
हैं।” 4 कुछ लोग कायल हो गए और पौलुस
सीलास से मिल गए। उन्हीं के साथ कुछ
यूनानी भक्त और अमीर महिलाएँ थीं।
5 जिन यहूदियों को कायल नहीं किया जा
सका उन्होंने ईर्ष्या से भर कर बाज़ार से कुछ
फ़ालतू लोगों को लेकर भीड़ इकट्ठी कर ली।
उन्होंने शहर में हुल्लड़ मचाया और जेसन के
घर घुस कर बाहर लोगों के बीच लाना चाहा।
6 जब वे उन्हें पा नहीं सके तो जेसन और कुछ
भाईयों-बहनों को शहर के अधिकारियों के
पास खींच लाए और कहने लगे, “ये जिन्होंने
इस दुनिया को उलट-पुलट किया है, यहाँ भी
आ गए हैं। 7 जेसन उनकी आवभगत कर रहा
है। वे सभी कैसर की आज्ञा के खिलाफ़ जा
रहे हैं। वे कहते हैं कि यीशु नाम के एक
दूसरे राजा हैं।” 8 जब उन्होंने ये सब बातें
सुनी, तो लोगों और शहर के अधिकारियों
को उकसाया। 9 जेसन और दूसरों से ज़मानत
लेने के बाद, उन्होंने उन सभी को जाने दिया।
10 भाईयों ने पौलुस और सीलास को रात
में बिरीया भेज दिया। वहाँ पहुँचने पर
वे आराधनालय पहुँचे। 11 थिस्सुलुनीके के
यहूदियों से अधिक यहाँ के यहूदी समझदार
थे। इसलिए कि उन्होंने मन की तैयारी

[a] **16.32** परिवार के [b] **17.2** बाइबल

से संदेश को कबूल किया। वे हर दिन पवित्रशास्त्र में ढूँढते रहे कि देखें कि जैसा पौलुस कह रहा है, वैसा सच है या नहीं। 12 इसलिए उन में से बहुत से लोगों ने विश्वास किया, बहुत सी ऊँचे खानदान की कहलाने वाली यूनानी महिलाओं ने भी और साथ ही बहुत पुरुषों ने भी।

13 जब थिस्सलुनीके, के यहूदियों को यह मालूम हुआ कि पौलुस बिरीया में परमेश्वर याहवे का संदेश दिया करता था, वे वहाँ आकर भी गड़बड़ी फैलाने लगे। 14 इसलिए तुरन्त भाईयों ने पौलुस को समुद्र के किनारे तक भेज दिया, लेकिन सीलास और तिमोथी वहीं रह गए। 15 पौलुस के पहुँचाने वाले उसे एथेन्स तक ले गये और सीलास और तीमुथियुस के लिये यह आज्ञा लेकर विदा हुए, कि मेरे पास बहुत शीघ्र आओ।

16 पौलुस उनके लिए एथेन्स में इन्तज़ार कर रहा था, उस शहर को मूर्तियों से भरा देख कर भीतर ही भीतर बहुत वह व्याकुल हो उठा। 17 इसीलिए यहूदियों और भक्तों के साथ आराधनालय और बाज़ार में उन गैर यहूदियों से वाद-विवाद किया करता था, जो उसके पास आया करते थे।

18 तब कुछ इपीक्यूरियन और स्टौइक दर्शन शास्त्रियों ने उसका सामना किया। उन में से कुछ ने कहा, "यह बड़बड़िया क्या कहना चाहता है?" दूसरे लोगों ने कहा, "वह शायद विदेशियों के ईश्वरों की चर्चा कर रहा है।" ऐसा इसलिए था, क्योंकि वह यीशु के सुसमाचार और यीशु के जी उठने की बात किया करता था। 19 और वे यह कहते हुए उसे आरयुपिगुस तक लाए, "क्या हम उस नयी शिक्षा के बारे में जान सकते हैं, जो तुम हमें दे रहे हो? 20 तुम हमें कुछ अजीब बातें बतला रहे हो, इसलिए हम उन्हें जानना चाहते हैं।" 21 वहाँ पर सभी अथेनी और विदेशी एक दूसरे को नयी बातें बताने और सुनने के अलावा कुछ नहीं करते थे।

22 तब पौलुस अरियुपगुस के बीच खड़े होकर कहने लगा, "ऐथेन्स के लोगो, मुझे ऐसा लगता है कि तुम बहुत धार्मिक स्वभाव के हो। 23 क्योंकि मैं जब यहाँ घूम रहा था तो तुम्हारी उपासना की चीज़ों में से एक पर यह लिखा हुआ देखा जिस में 'अनजाने परमेश्वर के लिए'। इसलिए मैं तुम्हें उनके बारे में बताना चाहता हूँ, जिसे तुम बिना जाने पूजते हो। 24 जिस परमेश्वर ने इस दुनिया और जो कुछ इस में है, उसे बनाया है, वह स्वर्ग और पृथ्वी के मालिक हैं, हाथ से बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहते हैं। 25 और इसलिए कि वही सब को ज़िन्दगी, सांस और सब कुछ देते हैं, उन्हें इन्सान के हाथों की सेवा या किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं। 26 उन्हीं ने एक ही आदमी से सारी पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों को बनाया और उनके समयों तथा रहने की सरहद को ठहराया। 27 ताकि वे अपने परमेश्वर की चाहत रखें और उन तक पहुँच कर उन्हें पा लें, क्योंकि वह हम में से किसी से दूर नहीं हैं। 28 क्योंकि उन्हीं में हम रहते हैं, चलते-फिरते हैं और जीवित पाए जाते हैं। जैसा कि तुम्हारे कुछ कवियों ने कहा है, "हम सभी की शुरुआत परमेश्वर आप ही से है[a]।"

29 और क्योंकि हमें परमेश्वर ही ने बनाया है, हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि परमेश्वर सोने, चाँदी या पत्थर की तरह हैं, जिन्हें एक आकृति दी जाती है। 30 ऐसे नासमझी के समयों को परमेश्वर ने अनदेखा किया था लेकिन अब सभी जगह सब लोगों को यह

[a] **17.28** हम तो उन्हीं के वंशज हैं

हुक्म देते हैं, कि लोग मन बदलें 31 क्योंकि
उन्होंने एक दिन निश्चित किया है, जिस में वह
एक इन्सान के ज़रिए धार्मिकता[a] से दुनिया
का इन्साफ़ करेंगे। इस इन्सान को मुर्दों में
से जी उठाने के द्वारा उन्होंने[b] इस बात का
सबूत दिया है।
32 जब इन लोगों ने मरे हुओं में से जी
उठने की बात सुनी, तो कुछ लोगों ने मज़ाक
करते हुए कहा, “इस विषय पर हम तुम से
फिर कभी सुनेंगे।” 33 इसलिए पौलुस उनके
बीच में से निकल गया। 34 फिर भी कुछ
लोग उसकी तरफ़ हो गए और विश्वास
भी कर लिया। इन विश्वास करने वालों में
डायोनिसियस, अरियुपगुस और दमरिस नाम
की एक महिला और कुछ दूसरे लोग थे।

18 इन बातों के बाद पौलुस ऐथेन्स से
कुरिन्थ चला गया। 2 वहाँ पर वह
अक्विला नामक एक यहूदी से मिला, जो
पोन्तुस में उत्पन्न हुआ था। वह कुछ दिन
पहले अपनी पत्नी प्रिसिल्ला के साथ इटली
से नया आया था। ऐसा इसलिए, क्योंकि
क्लौदियुस ने सभी यहूदियों को आज्ञा दी
थी कि वे रोम से चले जाएँ। वह उनके पास
गया। 3 इसलिए कि दोनों का एक ही रोज़गार
था, वह उन्हीं के साथ रह कर काम करता
रहा। दोनों ही तम्बू बनाने का काम करते
थे। 4 हर सब्त के दिन आराधनालय में वह
सिखाता रहा और यहूदियों तथा गैरयहूदियों
को समझाता था।
5 जब सीलास और तिमोथी मकिदुनिया से
आए, पौलुस ने वचन सिखाने की धुन में
ही यहूदियों को समझाया कि यीशु ही वह
मसीह[c] हैं, जिन का उन्हें इन्तज़ार है। 6 जब
उन्होंने उसकी खिलाफ़त की, निन्दा की, तब
उसने अपने कपड़े झाड़ते हुए उन से कहा,
“तुम्हारा खून तुम्हारे सिर पर हो, मैं निर्दोष हूँ।
मैं अब से गैर यहूदियों के पास ही जाऊँगा।”
7 वहाँ से निकल कर वह जस्तुस नामक
व्यक्ति के घर गया जो परमेश्वर को
मानने वाला था। उसका घर आराधनालय
के पास ही था। 8 उस आराधनालय के
प्रधान क्रिस्पुस ने अपने परिवार सहित यीशु
पर विश्वास किया। साथ ही में बहुत से
कुरिन्थिवासियों ने भी विश्वास किया और
सब को बपतिस्मा दिया गया।
9 रात में एक दर्शन के माध्यम से यीशु
ने पौलुस से बातचीत की, “डरना नहीं,
बोलते जाओ और खामोश मत हो जाना।
10 इसलिए कि मैं तुम्हारे साथ हूँ कोई
व्यक्ति तुम्हारे ऊपर हमला करके तुम्हारा
नुकसान नहीं कर सकेगा, क्योंकि इसी शहर
में मेरे बहुत से लोग हैं।” 11 वहाँ पर वह
उनके बीच परमेश्वर की बातों को डेढ़ वर्ष
तक सिखाता रहा।
12 जब गल्लियो अखाया का हाकिम था,
यहूदी लोग एक मत होकर पौलुस के
खिलाफ़ उठ खड़े हुए और न्यायासन[d] पर
लाए। 13 वे कह रहे थे, “ये लोग दूसरों
को इस तरह परमेश्वर की उपासना करने
के लिए उकसा रहे हैं, जो नियमशास्त्र के
खिलाफ़ हैं।”
14 अब जब पौलुस अपना मुँह खोलने ही
वाला था, कि गल्लियो ने यहूदियों से कहा,
“हे यहूदियो, अगर यह गलत काम या दुष्ट
बुरे कामों की बात होती, तो मैं तुम्हारे साथ
सह लेता। 15 लेकिन यह शब्दों, नामों और
तुम्हारे नियमशास्त्र का विषय है, इसलिए
इस से तुम ही निबटो। मैं इन सब बातों में
तुम्हारा इन्साफ़ नहीं करूँगा।” 16 यह कह

[a] **17.31** ईमानदारी [b] **17.31** परमेश्वर ने [c] **18.5** अभिषिक्त [d] **18.12** इन्साफ़ की जगह

कर उसने उन्हें न्याय आसन के सामने से
निकाल दिया। 17 तब सभी यूनानी लोगों ने
सोस्थिनेस को लिया जो आराधनालय का
मुख्य प्रधान था, और उसी जगह सब के
सामने उसकी पिटाई की लेकिन गल्लियो ने
इन बातों की कुछ परवाह नहीं की।
18 इसके बाद पौलुस वहाँ बहुत समय
तक रहा। भाईयों से विदा होकर किंख्रिया
में अपना सिर मुण्डवाया क्योंकि उसने
मन्नत मानी थी और जहाज़ पर सीरिया को
रवाना हो गया। इस समय प्रिसकिल्ला और
अक्विला उसके साथ ही थे। 19 इफ़िसुस
आकर उसने उन्हें वहीं छोड़ दिया, लेकिन
खुद आराधनालय जाकर यहूदियों से
वाद-विवाद करने लगा। 20 जब उन्होंने
उससे कुछ और समय तक रुकने के लिए
कहा, तो सलाह न ली, 21 लेकिन यह कहते
हुए उन्हें छोड़ दिया, "ज़रूरी है कि मैं आने
वाले त्यौहार को यरुशलेम में मनाऊँ। लेकिन
परमेश्वर चाहेंगे, तो मैं तुम्हारे पास वापस
लौटूँगा।" वहाँ से वह इफ़िसुस को रवाना
हो गया। 22 कैसरिया पहुँचने के बाद उसने
चर्च को भेंट दी और अन्ताकिया को रवाना
हुआ।
23 वहाँ कुछ समय बिताने के बाद वह
गलातिया और फ्रिगिया के इलाके में शिष्यों
की हिम्मत बढ़ाता गया। 24 अलेक्ज़ेन्ड्रिया
निवासी यहूदी अपुल्लोस, जो बोलने में योग्य
और शास्त्र का अच्छा ज्ञान रखता था,
इफ़िसुस आया।
25 इस व्यक्ति को यीशु के बारे में सिखाया
गया था। वह बहुत जोशीला था और
सही-सही सिखाता था। लेकिन वह सिर्फ़
यूहन्ना के बपतिस्मे के बारे में जानता था।
26 वह आराधनालय में बड़ी हिम्मत से बोलने
लगा। जब अक्विला और प्रिसिल्ला ने उसे
सुना, तब परमेश्वर के रास्ते के बारे में
उसको और अच्छी तरह सिखाया।
27 जब वह अखाया से गुज़रना चाहता था,
भाईयों ने शिष्यों पर ज़ोर डाल कर कहा, कि
उसे अपनाएँ। जब वह वहाँ पहुँचा, उसने उन
सब की मदद की, जिन्होंने अनुग्रह के द्वारा
विश्वास किया था। 28 वह बहुत प्रबलता से
यहूदियों से तर्क किया करता था और वह
भी सार्वजनिक तरीके से। वह यहूदी शास्त्र
में से दिखाता था कि आने वाले मसीह, यीशु
ही थे।

19 जब अपोल्लोस कुरिन्थुस में था,
पौलुस ऊपरी भाग में यात्रा करते
हुए इफ़िसुस पहुँचा, वहाँ उसकी मुलाकात
कुछ शिष्यों से हुयी। 2 उसने उन से कहा,
"क्या विश्वास करते समय तुमने पवित्र
आत्मा पाया था?" उन्होंने उससे कहा, "हम
ने पवित्र आत्मा के बारे में कुछ सुना भी नहीं"
3 उसने उन से पूछा, "तुमने कौन सा
बपतिस्मा लिया, " उन्होंने कहा, "यूहन्ना का
बपतिस्मा"
4 तब पौलुस ने कहा, "इस में कोई शक
नहीं है, कि यूहन्ना ने तुम्हें मन बदलाव का
बपतिस्मा दिया था।" लेकिन उसने कहा था,
कि "यीशु मसीह जो आने वाले हैं, उन्हीं पर
तुम्हें विश्वास होना चाहिए।" 5 यह सुनने के
बाद उन्हें प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा दिया
गया। 6 जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो
पवित्र आत्मा उन पर उतरा और वे भिन्न-भिन्न
भाषा बोलने तथा नबूवत करने लगे। 7 वे
सभी लगभग बारह लोग थे।
8 आराधनालय जाकर वह तीन महीनों तक
बिना डर बोलता रहा। वह परमेश्वर के राज्य
के बारे में बड़ी दिलेरी से वाद-विवाद करता
और समझाता रहा। 9 परन्तु कुछ लोगों ने

अपने मन को सख्त कर लिया और विश्वास
करने से इन्कार किया। भीड़ के सामने यीशु
के नाम की बेइज़्ज़ती भी की गयी। पौलुस ने
उन्हें छोड़ दिया और शिष्यों को अलग किया
और हर रोज़ तरन्नुस की पाठशाला में पढ़ाता
रहा। 10 ऐसा दो साल तक चलता रहा और
एशिया प्रान्त में रहने वाले यहूदी और यूनानी
लोगों ने प्रभु यीशु मसीह के बारे में सुन लिया।
11 परमेश्वर ने विशेष अजीब सामर्थ के
काम पौलुस के हाथों से किए। 12 यहाँ
तक कि रुमाल और अँगोछे उसकी देह से
छुआकर बीमार लोगों पर रखे जाते थे। इन
कपड़ों के छूते ही बीमारियाँ ठीक हो जाती
थीं और आत्माएँ उन में से निकल जाती थीं।
13 कुछ यहूदी झाड़ा फूँकी करके दुष्ट
आत्माओं को निकाला करते थे। उन्होंने यीशु
के नाम का इस्तेमाल करके दुष्टात्मा ग्रसित
की तरफ़ देख कर कहते थे, “जिस यीशु
का संदेश पौलुस देता है, उन्हीं के नाम में
हम तुम्हें आज्ञा देते हैं।” 14 वहाँ एक यहूदी
याजकों के प्रधान स्कीवा के सात बेटे थे,
जो ऐसा किया करते थे। 15 दुष्टात्मा ने उत्तर में
कहा, “यीशु को मैं जानती हूँ और पौलुस को
भी, लेकिन तुम कौन हो?” 16 जिस व्यक्ति
में दुष्टात्मा थी, वह उन पर लपका और उसने
अपना ज़ोर दिखा डाला। इसलिए वे उस घर
में से नँगे और घायल हालत में भाग निकले।
17 इफ़िसुस में रहने वाले सभी यहूदी और
यूनानी लोगों को यह बात मालूम हो गयी और
उनके ऊपर डर छा गया। यीशु के नाम को
बड़ाई मिली। 18 जिन्होंने आकर विश्वास
किया, उन्होंने अपने गलत कामों को मान
लिया और उनका खुलासा किया। 19 बहुत
से उन लोगों ने, जो जादू किया करते थे,
अपनी किताबें लाकर सब के सामने जला
डालीं। जब उनकी कीमत आँकी गयी तो
पचास हज़ार चाँदी के सिक्कों के बराबर थी।
20 इस तरह से प्रभु का वचन बड़ी सामर्थ से
बढ़ता गया और प्रबल होता गया।
21 इन सभी बातों के बाद पौलुस ने
आत्मा में मकिदुनिया और अखाया से
होकर यरुशलेम जाने की ठान ली। 22 उसने
कहा, “वहाँ जाने के बाद मुझे रोम जाना
चाहिए।” इसलिए अपने सहायक तिमोथी
और इरास्तुस को उसने मकिदुनिया भेज
दिया, लेकिन खुद कुछ समय के लिए एशिया
में ठहर गया।
23 उसी समय इस मत के बारे में बड़ा
उपद्रव हुआ।
24 देमेत्रियुस नाम का एक सुनार था, जो
अरतिमिस[a] के लिए चाँदी के मन्दिर बनाता
था, और काफ़ी कमा लिया करता था।
25 उसने अपने ही धन्धे वाले लोगों को
बुलाया और कहा, “लोगो, तुम्हें मालूम है कि
यह धन्धा हमारी आमदनी का एक ज़रिया
है। 26 साथ ही तुम देख और सुन रहे हो
कि न सिर्फ़ इफ़िसुस लेकिन सारे एशिया में
इस पौलुस ने लोगों को अपनी तरफ़ कर
लिया है। उसने उन्हें कायल कर दिया है
कि जिन ईश्वरों को हाथ से बनाया गया है,
वे ईश्वर हैं ही नहीं। 27 इसलिए न ही यह
धन्धा अब खतरे में है लेकिन यह कि महान
देवी अरतिमिस का मन्दिर भी तुच्छ ठहराया
जाएगा, जिसे सारे एशिया और दुनिया में पूजा
जाता है और उसकी सारी शान भी जाती
रहेगी।”
28 जब उन्होंने यह सुना तो गुस्से से भर
कर चिल्ला उठे, “इफ़िसियों की अरतिमिस
महान है।” 29 पूरे शहर में गड़बड़ी मच गयी।
लोगों ने पौलुस के यात्री सहयोगी गयुस और

[a] **19.24** डायना

अरिस्तरखुस जो मकिदुनिया के थे पकड़ लिया और एक साथ मिल कर थियेटर में घुसे। 30 जब पौलुस ने वहाँ भीतर जाना चाहा, तो शिष्यों ने उसे ऐसा नहीं करने दिया। 31 एशिया के कुछ अधिकारियों ने, जो उसके दोस्त थे, यह बिनती की, कि रंगशाला[a] में न जाएँ।

32 कुछ लोग एक बात कह रहे थे, दूसरे कुछ और। वहाँ बड़ी गड़बड़ी थी और ज़्यादातर लोगों को यह नहीं मालूम था कि वे वहाँ क्यों थे। 33 उन्होंने एलेक्ज़ेन्डर को भीड़ में से खींच कर निकाला, क्योंकि यहूदियों ने उसे धक्का मार कर आगे कर दिया था। एलेक्ज़ेण्डर ने हाथ हिला कर अपने पक्ष में कहने का इशारा किया। 34 जब उन्हें मालूम पड़ा कि वह यहूदी है, तो लगभग दो घन्टे तक एक आवाज़ में चिल्लाते रहे, "इफ़िसुस की अरतिमिस महान है।"

35 तब शहर के मंत्री ने लोगों को खामोश कराने के बाद कहा, "इफ़िसुस के लोगो ऐसा कौन है जो यह नहीं जानता कि इफ़िसियों का शहर, महान देवी अरतिमिस और उसकी मूर्ति का उपासक है, जो आकाश से उतरी थीः 36 यह देखते हुए कि इन बातों का इन्कार नहीं किया जा सकता, तुम्हें खामोश रहना चाहिए और जोश में कुछ नहीं करना चाहिए। 37 क्योंकि तुम इन लोगों को लाए हो जो न तो मन्दिर के लुटेरे हैं और न ही तुम्हारी देवी को बुरा कहते हैं। 38 इसलिए अगर देमेत्रियुस और दूसरे मूर्तिकारों को कुछ शिकायत है, तो अदालत और हाकिम के दरवाज़े खुले हुए हैं। वहाँ पर उनके खिलाफ़ आरोप साबित किए जा सकते हैं। 39 लेकिन यदि इसके अलावा कोई और विषय है तो कानूनी सभा[b] में उसका फ़ैसला किया जा सकता है। 40 आज के उपद्रव के बारे में जवाब देने का खतरा खड़ा हो सकता है, लेकिन इसका जवाब हम देंगे भी क्या?" 41 यह सब कहने के बाद उसने सभा को बर्खास्त किया।

20 जब हुल्लड़ थम गया, पौलुस ने शिष्यों को अपने पास बुलाया, उनको समझाया और फिर मकिदुनिया को रवाना हो गया। 2 उन सभी जगहों से होते हुए वह लोगों की हिम्मत बढ़ाता गया और आखिर में यूनान आ गया। 3 वहाँ पर वह तीन महीने तक रहा। और जब वह सीरिया जाने वाला था, यहूदियों ने उसके खिलाफ़ एक योजना बनायी, लेकिन तभी उसने मकिदुनिया होते हुए वापस आना चाहा। 4 बिरीया का सोपेटर उसके साथ एशिया यात्रा में हो लिया। साथ ही थिस्सुलुनीके का अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस, दिरबे का गयुस, तिमोथी, तुखिकुस और एशिया का त्रुफ़िमुस। 5 आगे जाकर ये लोग त्रोआस में हमारा इन्तज़ार करने लगे। 6 अखमीरी रोटी के दिनों के बाद हम फ़िलिप्पी से चले। पाँच दिन में हम त्रोआस में उन से मिल गए, यहाँ हम सात दिन ठहर गए।

7 हफ़्ते के पहले दिन, शिष्य रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए। पौलुस दूसरे दिन वहाँ से जाने की तैयारी में तो था ही, लेकिन उन्हें बीच रात तक सिखाता रहा। 8 ऊपर के कमरे में जहाँ वे सब इकट्ठा हुए थे, तमाम दिये जल रहे थे। 9 वहीं खिड़की पर एक नवजवान आदमी यूतुखुस को बहुत ज़ोरों से ऊँघाई आ रही थी। पौलुस बहुत देर रात तक सिखाता रहा। इसी बीच वह व्यक्ति नींद की वजह से तीसरी मंज़िल से गिर पड़ा और मर गया।

[a] **19.31** थियेटर [b] **19.39** संवैधानिक सभा

10 नीचे जाकर पौलुस औंधे मुँह उसके ऊपर
पसर गया। उसने अपने हाथों को उसके
चारों तरफ़ डाल कर कहा, “परेशान मत हो,
क्योंकि जान अभी भी उसी में है 11 जब वह
फिर से ऊपर आया उसने रोटी तोड़ी और
खायी। वह भोर तक उन से बातें करता रहा
और उसके बाद वहाँ से रवाना हो गया।
12 इसी बीच वह नवजवान बिना किसी
नुकसान घर पहुँचाया गया और हर एक जन
को बड़ी तसल्ली मिली। 13 हम जहाज़ से आगे
बढ़ गए और एसोस को रवाना हुए। वहीं
उसने हमसे मुलाकात का इन्तज़ाम किया।
14 वहाँ मिलने के बाद हम सब मिलेतुस को
रवाना हुए। 15 फिर हम किओस टापू के
सामने पहुँचे। अगले दिन हम सामुस गए,
ट्रौगिलियम में रुके और फिर मिलेतुस आ
गए। 16 पौलुस ने इस यात्रा में इफ़िसुस में
रुकना न चाहा, क्योंकि वह एशिया में समय
नहीं गुज़ारना चाहता था। क्योंकि वह चाहता
था कि किसी न किसी तरह अगर संभव हो,
पेन्टिकॉस्ट के दिन तक यरुशलेम में हो।
17 मिलेतुस से उसने इफ़िसुस खबर
भिजवाकर मण्डली के अगुवों को बुलाया।
18 जब वे वहाँ आए तो उसने उन से कहा,
“तुम्हें मालूम है कि पहले दिन ही से जब
से मैं एशिया आया, मैं तुम्हारे साथ था और
तुमने मेरा जीवन देखा। 19 यह कि मैंने किस
तरह से मन की दीनता से और यहूदियों के
षडयन्त्र के कारण आँसुओं के साथ यीशु की
सेवा की। 20 जो कुछ तुम्हारे फ़ायदे का था,
वह सब तुम्हें बताता रहा। मैंने घर-घर जाकर
और खुली रीति से सिखाया। 21 यहूदियों
और यूनानियों को परमेश्वर की तरफ़ मन
बदलाव की ज़रूरत और यीशु मसीह पर
विश्वास की ज़रूरत पर गंभीरता से ज़ोर
डालता रहा।
22 “अब देखो, मैं पवित्रात्मा में बँधा हुआ
यरुशलेम जा रहा हूँ। मुझे यह नहीं मालूम
कि मेरे साथ क्या होगा। 23 हर शहर में
पवित्रात्मा केवल यह गवाही देता है कि
जंजीरें और तकलीफ़ें तुम्हारा इन्तज़ार कर
रही हैं। 24 लेकिन इन बातों से मैं बिल्कुल
परेशान नहीं होता हूँ। न ही मैं अपने जीवन
को कीमती जानता हूँ। ऐसा इसलिए, ताकि
परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की
गवाही दे सकूँ और यीशु से मिली सेवा को
करके खुशी से अपनी दौड़ पूरी कर सकूँ।
25 और अब देखो, मुझे मालूम है कि वे
सभी जिन के बीच मैं परमेश्वर के राज्य
के बारे में सिखाता रहा, मेरा मुँह नहीं देख
सकेंगे। 26 इसलिए आज मैं तुम्हें इस बात
का गवाह ठहराकर कहता हूँ, कि मैं सभी
के खून से निर्दोष हूँ 27 क्योंकि मैं कभी भी
परमेश्वर की पूरी योजना का ऐलान करने
में हिचकिचाया नहीं। 28 इसलिए अपनी रक्षा
करो और उस झुण्ड की भी जिस के ऊपर
निगरानी रखने के लिए पवित्र आत्मा ने तुम्हें
परमेश्वर के चर्च का चरवाहा ठहराया है।
इस चर्च को यीशु ने अपने खून से खरीदा है।
29 इसलिए कि मैं यह जानता हूँ कि मेरे जाने
के बाद फाड़ खाने वाले भेड़िए तुम्हारे बीच
आएँगे और झुण्ड को छोड़ेंगे नहीं। 30 साथ
ही तुम्हारे बीच ही से लोग उठ खड़े होंगे और
शिष्यों को अपनी तरफ़ खींच लेने के लिए
झूठी बातें बोलेंगे। 31 इसलिए सावधान रहो
और याद रखो कि तीन साल तक मैंने दिन
रात तुम्हें आँसुओं के साथ चेतावनी देना न
छोड़ा
32 और अब, भाईयो बहनो, मैं तुम्हें
परमेश्वर और उसकी कृपा के वचन के प्रति
सौंप देता हूँ, जो तुम्हें मज़बूती देने के साथ
सभी अलग किए हुए लोगों में मीरास देने

के लायक हैं। 33 मैंने किसी की चान्दी-सोने
या कपड़े का लालच नहीं किया। 34 तुम
आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी
और मेरे साथियों की आवश्यकताएँ पूरी कीं।
35 मैंने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया, कि
इस रीति से मेहनत करते हुए कमज़ोर लोगों
को सम्भालना, और प्रभु यीशु की बातें याद
रखना अवश्य है, कि उन्होंने आप ही कहा
है कि लेने से देना धन्य है।"
36 यह कह कर उसने घुटने टेके और उन
सब के साथ प्रार्थना की। 37 तब वे सब बहुत
रोए और पौलुस के गले में लिपट कर उसे
चूमने लगे। 38 वे विशेष करके इस बात का
शोक करते थे, जो उसने कहा था, कि तुम
मेरा मुँह फिर न देखोगे। इसके बाद उन लोगों
ने उसे जहाज़ तक पहुँचाया।

21 उन्हें विदा करने और वहाँ से रवाना
होने के बाद हम कोस आए। अगले
दिन रुदुस और वहाँ से पतरा। 2 एक जहाज़
जो फ़ूनीशिया से गुज़रने वाला था, हम उस
पर सवार हुए। 3 जब हम ने कुप्रुस को देखा,
इसे हम ने बायीं ओर छोड़ दिया और सीरिया
की तरफ़ रवाना हो चले तथा जाकर टायर
में रुके। वहाँ पर जहाज़ पर से सामान नीचे
उतरवाना था। 4 शिष्यों को पाकर, हम वहाँ
सात दिन ठहर गए। पवित्रात्मा की मदद से
उन्होंने पौलुस से कहा कि उसे यरुशलेम नहीं
जाना चाहिए। 5 जब हम ने वे दिन पूरे कर
लिए, हम वहाँ से निकल कर अपनी राह पर
हो लिए और सभी ने महिलाओं और बच्चों
सहित हमें नगर के बाहर तक पहुँचाया। और
हम ने समुद्र के किनारे घुटने टेक कर प्रार्थना
की। 6 जब हम एक दूसरे से अलग हो गए,
तब हम जहाज़ पर बैठ गए और वे सब वापस
घर आ गए।
7 जब हम सूर से अपनी यात्रा पूरी कर
चुके, हम पतुलिमयिस आए और भाईयों का
अभिवादन करके और एक दिन उन्हीं के
साथ ठहर गए। 8 अगले दिन हम लोग जो
पौलुस के साथ थे, निकल कर कैसरिया
आए और फ़िलिप्पुस सुसमाचार देने वाले
के घर गए। वह सातों में से एक था। हम
उसी के यहाँ ठहर गए। 9 इस व्यक्ति के
पास चार कुँवारी बेटियाँ थीं जो भविष्यद्वाणी
किया करती थीं।
10 जब हम वहाँ बहुत दिन ठहरे, तो
अगबुस नाम का एक भविष्यद्वक्ता[a]
यहूदिया से आया। 11 जब वह हमारे पास
आया तो पौलुस की पेटी[b] लेकर अपने
हाथ-पैर बान्ध कर बोला, "पवित्र आत्मा यों
कहता है: जिस व्यक्ति का यह बेल्ट[c] है उस
व्यक्ति को यहूदी, यरुशलेम में बान्धेंगे और
गैरयहूदियों के हाथों में सौपेंगे।"
12 जब हम ने ये बातें सुनी, तब हम ने और
वहाँ के लोगों ने उससे बिनती की कि वह
यरुशलेम न जाए। 13 तब पौलुस ने जवाब में
कहा, "तुम रोने से मुझे दुखी क्यों करते हो?
मैं यीशु मसीह के नाम के लिए यरुशलेम में
सिर्फ़ बान्धे जाने के लिए नहीं, लेकिन मारे
जाने के लिए भी तैयार हूँ।" 14 जब पौलुस
टस से मस न हुआ, तो हम भी खामोश हो गए
और कहा, "परमेश्वर की इच्छा पूरी हो।"
15 उन दिनों के बाद, हम ने तैयारी की और
यरुशलेम को चल दिए। 16 कैसरिया के कुछ
शिष्य हमारे साथ हो लिए और अपने साथ
साइप्रस के एक बुज़ुर्ग शिष्य मनासोन के यहाँ
लाए जिस के यहाँ हम मेहमान होने वाले थे।

[a] **21.10** नबी [b] **21.11** बेल्ट [c] **21.11** पेटी

17 जब हम यरुशलेम पहुँचे, भाई बहनों ने
हमें खुशी से अपनाया। 18 अगले दिन पौलुस
हमारे साथ याकूब के पास गया और सभी
अगुवे वहाँ थे। 19 उन सभी को अभिवादन
करने के बाद उसने उन सभी बातों[a] को
बताया, जिन्हें परमेश्वर ने उनके बीच उसके
ज़रिए से किया था।
20 जब उन्होंने सुना तो परमेश्वर की बड़ाई
की और पौलुस से कहा, “आप ही देखो
भाई, कितने हज़ार यहूदियों ने विश्वास
किया है। वे सभी नियमशास्त्र के सम्बन्ध
में बहुत जोशीले हैं। 21 तुम्हारे बारे में उन्हें
बतलाया गया है, कि जो यहूदी, गैर यहूदियों
के बीच रहते हैं, उन्हें तुम मूसा को त्यागने
के लिए कहते हो। तुम यह भी कहते हो कि
उन्हें अपने बच्चों का खतना नहीं करवाना
चाहिए और रीति रिवाजों को भी नहीं मानना
चाहिए। 22 इन बातों का नतीजा क्या होगा?
अब उन्हें मालूम पड़ेगा कि तुम यहाँ आए हो,
23 इसलिए वही करो जो हम तुम से कहते हैं।
हमारे बीच चार ऐसे लोग हैं जिन्होंने शपथ
ली है। 24 उन्हें लो और उन से अपने आपको
शुद्ध कर उनको खर्च दो, ताकि वे अपने सिर
मुड़ा लें। तब जो बातें तुम्हारे बारे में फैलायी
गयी थीं, लोग जान जाएँगे कि वे सब झूठी
हैं। यह भी कि तुम सही जीवन जी रहे हो
और नियमशास्त्र की बातें मानते हो। 25 जहाँ
तक गैरयहूदियों का सवाल है, हम ने यह
फ़ैसला किया है कि उन्हें इन सब बातों को
मानने की ज़रूरत नहीं। सिर्फ़ यह कि मूर्ति के
सामने चढ़ाई हुयी चीजों, खून और गला घोंटे
हुए जानवरों के गोश्त और यौन अनैतिकता
से बचे रहें।
26 तब पौलुस ने अगले दिन लोगों को
लिया और उनके साथ अपने आपको भी
शुद्ध किया। वहाँ उसने बताया कि शुद्ध होने
के दिन कब पूरे होंगे, अर्थात् हम में से हर
एक के लिए बलिदान कब चढ़ाया जाएगा।
27 जब सात दिन करीब-करीब खत्म होने पर
थे, एशिया प्रान्त के यहूदियों ने उसे मन्दिर में
देखा और लोगों को भड़काकर उन्हें पकड़ा।
28 और चिल्लाकर कहा, “इस्राएल के लोगो,
मदद करो! यही वह इन्सान है जो सभी जगह
लोगों को नियमशास्त्र और इस जगह के
खिलाफ़ सिखाता है, इसके अलावा इसने
यूनानियों को इस प्रार्थना भवन[b] में लाकर
इस पवित्र जगह को गंदा कर दिया है।”
29 इसके पहले शहर में उन्होंने इफ़िसीवासी
त्रुफ़िमुस को उसके साथ देखा था। उनका
ख्याल था कि पौलुस उन्हें प्रार्थना भवन में
लाया था।
30 पूरा शहर बहुत गुस्सा हो उठा और लोग
एक जगह इकट्ठे होने लगे। उन्होंने पौलुस
को प्रार्थना भवन के बाहर घसीटा और तुरन्त
दरवाज़ा बन्द कर दिया। 31 जैसे ही वह उसे
जान से मार डालने वाले थे, रोमी सेना के
कमाण्डर के पास यह खबर पहुँची कि सारे
यरुशलेम में हल्ला-गुल्ला हो रहा है। 32 तुरन्त
उसने सिपाहियों और सूबेदारों को लिया और
उनकी तरफ़ दौड़ पड़े। जब उन्होंने कमाण्डर
और सिपाहियों को देखा तब पौलुस को
मारना रोक दिया।
33 तब कमाण्डर ने आगे बढ़ कर उसे दो
जंजीरों से बान्धनें की आज्ञा देकर पूछा कि
वह कौन है और उसने क्या किया है। 34 भीड़
में से कोई कुछ चिल्ला रहा था और कोई कुछ
और। जब हुल्लड़ की वजह से उसके हाथ
कुछ सच्चाई नहीं लगी, उसने उसे बैरेक में
ले जाने का हुक्म दिया। 35 जब वह सीढ़ी
तक पहुँचा, लोगों के उपद्रव की वजह से

[a] **21.19** कामों [b] **21.28** मन्दिर

सिपाही उसे उठा कर ले गए। 36 लोगों की
भीड़ चिल्लाती गयी, “इसे मार डालो।”
37 जब पौलुस बैरेक में ले जाया जाने वाला
था, तभी उसने कमाण्डर से कहा, “क्या मैं
आप से कुछ कह सकता हूँ? उसने कहा,
क्या तुम्हें यूनानी भाषा आती है? 38 क्या
तुम वही मिस्री नहीं हो, जिस ने कुछ दिनों
पहले बलवा किया और चार हज़ार लोगों
को जंगल ले गए?”
39 लेकिन पौलुस ने कहा, “किलकिया में
तारसुस जो एक मशहूर शहर है, वहाँ का मैं
रहने वाला हूँ। मुझे इज़ाज़त दो कि मैं लोगों
से बातचीत कर सकूँ।”
40 जब उसे इज़ाज़त मिल गयी, तब
खामोशी के बाद वहीं सीढ़ी पर चढ़े हुए उसने
अपने हाथ हिलाते हुए लोगों से इब्रानी भाषा
में बातचीत की।

22 “लोगो, भाईयो, बहनो और बुज़ुर्गो,
मैं अपने बचाव के लिए जो कहता
हूँ, उसे सुनो”
2 जब उन लोगों ने उसे इब्रानी भाषा में
बोलते हुए सुना, तब और खामोश हो गए।
3 किलकिया के तारसुस शहर का मैं रहने
वाला हूँ। लेकिन गमलीएल के कदमों पर
इसी शहर में मुझे पूर्वजों के नियम और
तौर तरीकों को सिखाया गया। आप सभी
परमेश्वर के लिए जिस तरह से आज जोश
में भरे हुए हैं, मैं भी था। 4 इस मत के पुरुष
और स्त्रियों को जान से मारने, बान्धनें और
जेलखाने में डालने के द्वारा उन्हें सताता रहा।
5 इस बात की गवाह महायाजक और बुज़ुर्गो
की सभा भी है। उन्हीं से मैंने भाईयों के लिए
चिट्ठियाँ पायीं थीं, ताकि जो लोग दमिश्क में
बँधे हुए थे, उन्हें यरुशलेम में सज़ा देने के
लिए लाऊँ।
6 अपनी यात्रा के दौरान जब मैं दमिश्क
पहुँचने ही वाला था, अचानक आकाश से
एक बड़ी रोशनी ने उतर कर मुझे घेर लिया।
7 जब मैं ज़मीन पर गिर पड़ा तो अपने कानों
से सुना, शाऊल, शाऊल, तुम मुझे क्यों दुख
पहुँचा रहे हो,
8 मैंने जवाब दिया, ‘आप कौन हैं प्रभुजी?’
उन्होंने मुझ से कहा, ‘मैं नासरत का यीशु हूँ,
जिसे तुम पीड़ा दे रहे हो।’
9 जो लोग मेरे साथ थे वे रोशनी देख कर
डर गए, लेकिन जिस व्यक्ति ने मुझ से
बातचीत की थी, उनकी आवाज़ नहीं सुन
सके। 10 मैंने कहा, ‘प्रभु मैं क्या करूँ?’ यीशु
ने कहा, ‘उठो और दमिश्क को जाओ। वहाँ
तुम्हें वे सभी बातें बतायी जाएँगी, जो तुम्हें
करनी है।’ 11 इसलिए कि उस रोशनी की
चकाचौंध की वजह से मैं कुछ भी देख नहीं
पा रहा था। मेरे साथी मेरे हाथों को पकड़
कर मुझे दमिश्क लाए।
12 हनन्याह नाम का एक यहूदी भक्त, वहाँ
के यहूदियों के बीच काफ़ी इज़्ज़त वाला
व्यक्ति था। 13 वह आकर वहाँ खड़ा हो
गया और मुझ से कहा, ‘भाई शाऊल देखने
लगो।’ उसी समय से मुझे दिखने लगा।
14 उसने मुझ से यह भी कहा, ‘हमारे
बापदादों के परमेश्वर ने तुम्हें चुन लिया
है, ताकि तुम उनकी इच्छा जान सको,
उस धर्मी को देखो उनके मुँह से उनकी
आवाज़ सुन सको। 15 क्योंकि जो तुमने देखा
और सुना है उन सभी बातों में उनके गवाह

ठहरोगे। 16 अब तुम देर क्यों कर रहे हो?
उठो और बपतिस्मा लो। और उनका[a] नाम
लेकर अपने अपराधों को धो डालो।'
17 जब मैं यरुशलेम आकर मन्दिर[b] में
प्रार्थना करने लगा, तो बेहोश सा हो गया।
18 तब मैंने यीशु को मुझ से यह कहते हुए
सुना, 'जल्दी करो और यरुशलेम से भाग
जाओ, क्योंकि यहाँ पर लोग तुम्हारी बातों
को मानेंगे नहीं'
19 मैंने कहा, 'यीशु उन्हें मालूम है कि आप
पर विश्वास करने वालों को मैं मारता और
जेल में डलवाता था। 20 जब आपके शहीद
स्तिफ़नुस को पत्थरवाह किया जा रहा था,
तब मैं भी वहाँ खड़ा था। उसको मारने वालों
के कपड़ों की मैं रखवाली कर रहा था और
उसकी हत्या में सहभागी भी था।'
21 उन्होंने मुझ से कहा, 'जाओ, क्योंकि मैं
तुम्हें यहाँ से दूर गैरयहूदियों तक भेजूँगा।'
22 यह सब कुछ सुनने के बाद उन लोगों ने
अपनी आवाज़ को बुलन्द करते हुए कहा,
"ऐसे इन्सान को तो इस दुनिया में जीने नहीं
देना चाहिए"
23 जब वे लोग चिल्लाते गए, और अपने
कपड़ों को फेंकते और हवा में धूल उड़ाते
गए, 24 कमाण्डर ने हुक्म दिया कि उसे किले
में ले जाया जाए। उसने यह भी कहा, बेंत
लगवा कर वह जानना चाहेगा कि ये लोग
उसकी खिलाफ़त में इतनी ज़ोरों से क्यों चिल्ला
रहे थे। 25 जब उन्होंने चमड़े के बेल्ट[c] से
बाँधा, पास में खड़े हुए सूबेदार से पौलुस
ने कहा, "क्या यह वाजिब है कि बिना गुनाह
साबित हुए एक रोमी नागरिक की पिटाई की
जाए?"
26 सूबेदार ने यह सुन कर कमाण्डर को
जाकर कहा, "संभल कर रहना क्योंकि यह
व्यक्ति रोमी नागरिक है"
27 यह सुन कर कमाण्डर ने आकर उससे
कहा, "मुझे बताओ, क्या तुम रोमी नागरिक
हो?" उसने उत्तर दिया, "हाँ" 28 कमाण्डर
ने कहा, "मैंने काफ़ी कीमत चुकाकर यह
आज़ादी हासिल की है।" पौलुस ने कहा, "मैं
तो आज़ाद ही पैदा हुआ था।"
29 तब जो लोग उससे पूछ-ताछ करने वाले
थे, उन्होंने उसे तुरन्त छोड़ दिया। कमाण्डर
भी डर गया, जब उसे मालूम पड़ा कि उसने
एक रोमी नागरिक को हिरासत में ले लिया
था।
30 अगले दिन वह जानना चाहता था कि
यहूदी उस पर दोष क्यों लगा रहे थे। इसलिए
उसने उसे आज़ाद कर दिया और महायाजकों
और उनकी सभा को बुलाया। उसने पौलुस
को लाकर उनके सामने खड़ा किया।

23 सभा की तरफ़ टकटकी लगा कर
पौलुस ने देखा और कहा, "भाईयो,
आज तक मैंने अच्छे मन[d] से परमेश्वर के
सामने जीवन जिया है" 2 हनन्याह महायाजक
ने पास खड़े हुए लोगों को यह आज्ञा दी कि
उसके गाल पर मारें। 3 तब पौलुस ने कहा,
"तुम चूना फिरी हुयी दीवार[e], परमेश्वर तुम्हें
सज़ा देंगे क्योंकि तुम नियमशास्त्र के तहत
मेरा इन्साफ़ करने के लिए बैठे हो लेकिन

[a] **22.16** यीशु का [b] **22.17** प्रार्थना भवन [c] **22.25** पेटी [d] **23.1** विवेक [e] **23.3** कब्र

नियमशास्त्र के खिलाफ़ मुझे मारने का हुकुम
देते हो।”
4 तब जो लोग नज़दीक खड़े थे उन्होंने
कहा, “तुम महायाजक से क्यों बद्तमीज़ी
कर रहे हो?”
5 तब पौलुस बोला, “भाईयो मुझे मालूम
नहीं था कि वह महायाजक हैं। क्योंकि यह
लिखा है तुम अपने अगुवों से बुराई के साथ
मत पेश आओ।
6 जब पौलुस को मालूम हुआ कि वहाँ कुछ
फ़रीसी थे और कुछ सदूकी, तो वह सभा
में ऊँची आवाज़ में बोल उठा, “भाईयो, मैं
फ़रीसी हूँ और फ़रीसी का बेटा भी। मरे हुओं
की आशा और मरे हुओं में से जी उठने के
बारे में मेरे ऊपर मुकदमा चलाया जा रहा
है।” 7 उसके यह कहते ही फ़रीसियों और
सदूकियों में आपसी मनमुटाव हो गया और
पूरी सभा दो हिस्सों में बँट गयी। 8 क्योंकि
सदूकियों का कहना है कि मरे हुओं का जी
उठना है ही नहीं। वे यह भी कहते हैं कि न ही
स्वर्गदूत और आत्मा कुछ है। लेकिन फ़रीसी
दोनों ही बातों को मानते हैं।
9 वहाँ बड़ा हल्ला-गुल्ला हुआ और जो विद्वान
फ़रीसियों की तरफ़ थे, उन्होंने खड़े होकर
खिलाफ़त यह कहते हुए की, “हम इस
आदमी में किसी तरह का खोट नहीं पाते
हैं। अगर किसी आत्मा या स्वर्गदूत ने उससे
बातचीत की भी है तो हम परमेश्वर से लड़ने
वाले कौन होते हैं, ” 10 जब आपसी झगड़ा
बहुत बढ़ गया, इस डर से कि कहीं लोग
पौलुस को मार न डालें, कमाण्डर ने सैनिकों
को हुक्म दिया कि ज़बरदस्ती उसे लोगों के
बीच से हटा कर बैरेक में ले जाएँ।
11 अगली रात को यीशु उसके पास आ
खड़े हुए और कहा, “हिम्मत रखो पौलुस।
जैसे तुमने यरुशलेम में मेरी गवाही दी थी,
इसी तरह से रोम में भी तुम्हें करना है।”
12 सुबह होते ही, कुछ यहूदियों ने एक
झुण्ड बना कर शपथ ली, कि जब तक
वे पौलुस को जान से मार न डालें, तब
तक वे न खाएँगे और न ही पानी पीएँगे।
13 जिन लोगों ने यह बुरी योजना बनायी
थी, वे संख्या में करीब चालीस रहे होंगे।
14 उन्होंने महायाजकों और बुज़ुर्ग लोगों से
आकर कहा, “हम ने एक ज़बरदस्त प्रण
किया है। वह यह कि जब तक हम पौलुस
को जान से मार नहीं लेते, तब तक हम भूखे
रहेंगे।” 15 इसलिए तुम सभा के साथ एक
मत होकर कमाण्डर को इशारा करो, कि
वह पौलुस को तुम्हारे पास कल अच्छी तरह
से पेश करे। यह उसके बारे में और ज़्यादा
जानने का एक बहाना होगा। इसके पहले कि
वह यहाँ आए हम उसे जान से मारने के लिए
तैयार रहेंगे।
16 जब पौलुस के भाँजे ने ताक लगा कर
घात करने की योजना के बारे में सुना, तो
बैरेक में जाकर पौलुस को यह खबर दे दी।
17 तब पौलुस ने एक सूबेदार को बुलाकर
कहा, “इस व्यक्ति को कमाण्डर के पास ले
जाओ, वह कुछ कहना चाहता है।”
18 इसलिए वह उसे कमाण्डर के पास
ले गया और कहा, “कैदी पौलुस ने मुझे
बुलाकर मुझे से कहा कि मैं इस नवजवान
को तुम्हारे पास लाऊँ, क्योंकि यह कुछ
कहना चाहता है।”
19 तब कमाण्डर ने उसके हाथ पकड़ कर
उसे एक किनारे अकेले में ले जाकर पूछा,
“तुम मुझे क्या बताना चाहते हो, ”
20 उसने कहा, “यहूदियों ने यह ठान लिया
है कि पौलुस को कल सभा के सामने इस

बहाने से लाएँ कि उन्हें कुछ और सही-सही
जानकारी चाहिए। 21 लेकिन उनकी एक मत
सुनना, क्योंकि उन में से करीब चालीस जन
घात लगाए बैठे हैं, कि मौका मिलते ही
हमला करें। उन्होंने यह कसम[a] खायी है कि
जब तक पौलुस को मार न डालें, तब तक न
खाएँगे और न पीएँगे। अब वे आपकी तरफ़
से आदेश के इन्तज़ार में हैं।”
22 इसलिए कमाण्डर ने उन जवानों को यह
हुक्म देकर विदा किया, “जो बातें तुमने मुझ
से कहीं हैं, उन्हें किसी और को मत बताना।”
23 उसने दो सूबेदारों को बुलाकर उन से
कहा, “200 सैनिकों, सत्तर घुड़सवारों और
दो सौ भाले वाले सिपाहियों को रात के
नौ बजे कैसरिया भेजो। 24 पौलुस को किसी
घोड़े पर बैठा कर गवर्नर फ़ेलिक्स के पास
सुरक्षित पहुँचा दो।”
25 उसने इस तरह की एक चिट्ठी लिखीः
26 महाप्रतापी फ़ेलिक्स हाकिम को
क्लौदियुस लूसियास का शान्ति[b]।
27 इस आदमी को यहूदियों ने पकड़ लिया
था और उसे मार डालने पर थे। तभी मैं अपनी
फ़ौज के साथ वहाँ पहुँच गया और उसे बचा
लिया क्योंकि मुझे मालूम पड़ा कि वह रोमी
नागरिक है। 28 जब मैं उस पर लगाए गए
आरोप का कारण जानना चाहता था, तो उसे
सभा के सामने लाया। 29 मैंने यह भी पाया
कि यहूदियों की धर्म पुस्तक के बारे में उठने
वाले सवालों के बारे में ही उसे गुनाहगार
माना जा रहा था। लेकिन मौत की सज़ा या
हिरासत के लायक कोई भी गुनाह उसने नहीं
किया था। 30 जब मुझे यह मालूम पड़ा कि
कुछ यहूदी उसे घात करने की ताक में थे,
तब मैंने उसे आपके पास भेज दिया। आरोप
लगाने वालों को मैंने यह भी कहा कि वे
आपकी मौजूदगी में उस आरोप को साबित
करें।
31 तब जैसी आज्ञा उन सैनिकों को मिली
थी, वे पौलुस को एन्टीपॅट्रिस के पास रात
ही में ले आए। 32 अगले दिन उसके साथ
जाने के लिए उन्होंने घुड़सवारों को छोड़
दिया और वापस बैरेक लौट आए। 33 जब
वे घुड़सवार कैसरिया पहुँचे, उन्होंने गवर्नर
को पत्र देकर पौलुस को भी उनके सामने पेश
किया। 34 गवर्नर ने पत्र पढ़ते ही यह जानना
चाहा, कि वह किस प्रान्त का है। 35 जब
उसे मालूम हुआ कि वह किलकिया का है
तो कहा, “जब तुम पर आरोप लगाने वाले
आएँगे तब मैं तुम्हारी सुनूँगा।” उसने यह भी
कहा कि उसे हेरोदेस की सरकार के निवास
पर रखा जाए।

24 पाँच दिनों के बाद हनन्याह
महापुरोहित, कुछ अगुवों[c] और
एक वकील, तिरतुल्लुस के साथ आया। इन
लोगों ने गवर्नर के सामने पौलुस के ऊपर
आरोप लगाए। 2 जब पौलुस को सामने
लाया गया, तो तिरतुल्लुस उसके खिलाफ़
आरोप लगाते हुए गवर्नर से कहने लगा,
“महामहिम् फ़ेलिक्स, आपके कारण
हम शान्ति से रह रहे हैं। आपकी अच्छी
सूझबूझ की वजह से इस राष्ट्र के लिए सब
तरह का अच्छा प्रबन्ध है। 3 सभी जगह
और सदैव हम लोग इस बात के लिए मन
से आभारी हैं। 4 आपका ज़्यादा समय न लेने
के वचन के साथ इतनी विनती करता हूँ कि
मेहरबानी से हमारी सुनने के लिए थोड़ा सा
वक्त दें।
5 हम ने देखा है कि यह आदमी सारे संसार
में यहूदियों के बीच बलवे को भड़का रहा

[a] 23.21 शपथ [b] 23.26 सलाम [c] 24.1 बुज़ुर्गों

है। यह एक उपद्रवी इन्सान है और नासरियों
के कुपन्थ का नेता है। यह नासरी समुदाय
का मुखिया[a] भी। 6 इसने प्रार्थना भवन[b] को
अशुद्ध करने की भी हिम्मत की है। हम ने इसे
पकड़ लिया है और नियमशास्त्र के मुताबिक
इसका इन्साफ़ भी कर दिया होता। 7 लेकिन
कमाण्डर लायसिअस ने ज़बरदस्ती आकर
उसे हमारे हाथों से छुड़ा लिया। 8 उसने
आरोपियों को यह आज्ञा दी कि वे आप से
मिलें। आप खुद उसकी जाँच पड़ताल करके
यह समझ सकते हैं कि हमारे आरोपों में
कितना दम है।"
9 यहूदियों ने भी इन बातों को सुन कर हामी
भरी।
10 गवर्नर का इशारा पाते ही पौलुस ने यह
जवाब दिया, "क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि
बहुत सालों से आप इस देश के जज रहे
हैं, इसलिए मैं खुद अपनी सफ़ाई खुशी से
देता हूँ। 11 आप यह जान सकते हैं, की अभी
बारह दिन भी नहीं हुए जब मैं आराधना
करने यरुशलेम को गया था। 12 वहाँ न ही
आराधनालय में और न ही शहर में उन्होंने
मुझे किसी के साथ बहस करते या बलवा
शुरु करते देखा। 13 न ही वे उन बातों का
सबूत दे सकते हैं, जिस के बारे में वे मुझे
गुनाहगार ठहराने की कोशिश कर रहे हैं।
14 लेकिन मैं यह दावे के साथ कहता हूँ कि
जिस मत को कुपन्थ का नाम दिया जा रहा
है, मैं उसी की रीति पर नियमशास्त्र और
भविष्यद्वक्ताओं की किताबों की ही बातों
को मानता और अपने बापदादों के परमेश्वर
की उपासना करता हूँ। 15 मुझे परमेश्वर से
जो आशा है उसे वे भी मानते हैं। वह यह
कि मरे हुए जी उठेंगे, चाहे वे धर्मी हों या
अधर्मी। 16 मैं परमेश्वर और मनुष्य की तरफ़
एक शुद्ध विवेक रखने का कष्ट भी उठाता हूँ।
17 बहुत सालों के बाद गरीबों के लिए
दान और भेंट लाने के लिए मैं अपने देश में
आया था। 18 उसी समय अगर उनके पास मेरे
खिलाफ़ कोई बात थी, तो उन्हें आज यहाँ
अपनी बात आपके सामने रखनी चाहिए थी
19,20 या फिर जो यहाँ पर हैं, वे बताएँ कि
जब मैं सभा के सामने खड़ा किया गया था,
तब उन्होंने मुझ में क्या खोट पाया था। 21 हाँ
सिर्फ़ एक बात हो सकती है जो मैंने चिल्ला
कर कही थीः वह थी मरे हुओं के जी उठने
पर मेरा विश्वास, शायद इसी के लिए आज
मेरा न्याय हो रहा है।"
22 जब फ़ेलिक्स ने सभी बातों का
सही-सही खुलासा सुना, तो सभा यह कहते
हुए टाल दी, "कि जब लायसिअस कमाण्डर
यहाँ हाज़िर होगा, तब मैं अच्छी तरह से
इस मसले पर सही-सही बयान दे सकूँगा।"
23 उसने एक सूबेदार को यह हुक्म दिया, कि
पौलुस को हिरासत में तो रखे, लेकिन कुछ
आज़ादी भी दे। साथ ही यह भी कि उसके
दोस्तों को उसकी सेवा करने या भेंट देने से
रोका न जाए।
24 कुछ दिनों के बाद फ़ेलिक्स अपनी
यहूदी पत्नी ड्रुसिल्ला के साथ आया। उसने
पौलुस को बुलवाकर यीशु पर उसके
विश्वास के बारे में सुना। 25 पौलुस ने धर्मी
ठहराए जाने, आत्म संयम और आने वाले
न्याय के बारे में उसे बताया। डरते और
काँपते हुए फ़ेलिक्स ने जवाब में कहा, "अभी
तुम वापस चले जाओ, जब मेरे पास समय
होगा, तब मैं तुम्हें बुलवाऊँगा" 26 वह पौलुस
को छोड़ने के बदले में उससे कुछ धन

[a] **24.5** लीडर [b] **24.6** मन्दिर

की अपेक्षा भी कर रहा था। इसलिए वह
उसे बार-बार बुलाकर उससे बातचीत किया
करता था।
27 दो साल के बाद पुरखियुस फ़ेस्तुस,
फ़ेलिक्स की जगह पर नियुक्त किया गया।
फ़ेलिक्स यहूदियों को खुश करना चाहता था
इसलिए पौलुस को जेल ही में रहने दिया।

25 तीन दिन के बाद फ़ेस्तुस प्रान्त में
आया। वह कैसरिया से यरुशलेम
को गया। 2 तब महायाजक और यहूदियों
के अगुवों ने पौलुस के खिलाफ़ शिकायत
करते हुए बिनती की। 3 उन्होंने पौलुस को
यरुशलेम बुलवाने के लिए कहा, ताकि वे
रास्ते में छिप कर उस पर वार करके मार
डालें। 4 लेकिन फ़ेस्तुस ने कहा, “कि उसे
कैसरिया ही में रहने दिया जाए। वह जल्दी ही
वहाँ जाएगा।” 5 इसलिए उसने उत्तर दिया,
“तुम में से जो प्रमुख व्यक्ति हैं, मेरे साथ
चलें और अगर उसकी कुछ गलती है, तो
उसे साबित करें।”
6 वह उनके साथ वहाँ आठ या दस दिन
रहने के बाद कैसरिया चला गया। अगले दिन
न्याय आसन पर बैठते ही उसने पौलुस को
उसके सामने पेश किए जाने की आज्ञा दी।
7 जब उसे वहाँ लाया गया तभी यरुशलेम से
बहुत यहूदियों ने आकर उसे घेर लिया और
ऐसे आरोप लगाए, जिन का उनके पास कोई
सबूत नहीं था।
8 उसने अपने बचाव में कहा, “मैंने किसी
भी तरह से यहूदियों की धार्मिक आस्था को
चोट नहीं पहुँचायी है और न ही मैंने मन्दिर
या कैसर के खिलाफ़ कुछ कहा है।”
9 लेकिन यहूदियों को खुश करने के लिए
फ़ेस्तुस ने पौलुस को जवाब में कहा, “क्या
तुम यरुशलेम जाकर मेरे सामने इन्साफ़ के
लिए खड़े होने के लिए तैयार हो?”
10 तब पौलुस ने कहा, “मैं आज सीज़र के
न्याय आसन के सामने खड़ा हूँ, यहीं मेरा
इन्साफ़ होना चाहिए। जैसा तुम जानते हो,
मैंने यहूदियों का कुछ भी नहीं बिगाड़ा है।
11 अगर मैंने कुछ गलत किया है, मौत की
सज़ा के लायक कुछ किया है, तो मैं मरने
के लिए तैयार हूँ। लेकिन अगर मेरे खिलाफ़
लगाए गए आरोपों में कुछ दम नहीं है, तो
उनके हाथों में मुझे सुपुर्द करने का हक किसी
को नहीं है। सीज़र से मैं यही कहना चाहता
हूँ।”
12 तब सभा के साथ सलाह मशविरा करने
के बाद फ़ेस्तुस ने जवाब दिया, “क्या तुमने
सीज़र के सामने अपील की है? तुम्हें सीज़र
के सामने खड़ा होना पड़ेगा।”
13 कुछ दिनों के बाद राजा अग्रिप्पा और
बर्निस फ़ेस्तुस से भेंट करने कैसरिया आए।
14 कई दिन गुज़रने के बाद, फ़ेस्तुस ने पौलुस
के विषय को राजा के सामने पेश करते हुए
कहा, “फ़ेलिक्स ने एक व्यक्ति को जेल
में रख छोड़ा है। 15 जब मैं यरुशलेम में था,
उस समय महायाजकों और यहूदी बुज़ुर्गों ने
उसके खिलाफ़ फ़ैसला सुनाने के लिए मुझ
से कहा था।
16 मैंने जवाब में उन से कहा कि यह रोमी
लोगों की रीति नहीं है, कि किसी आरोपी को
मौत की सज़ा सुनाएँ जब तक कि आरोपी को
अपने विरोधियों के सामने अपनी निर्दोषता
सिद्ध करने का मौका न मिले। 17 इसलिए,
जब वे यहाँ पर आए थे, बिना देर किए हुए
दूसरे दिन ही मैं न्यायासन पर बैठा और
उस व्यक्ति को भीतर लाने का हुक्म दिया।
18 जब आरोपी खड़े हुए तो जैसा मैंने सोचा,

वैसा आरोप वे उसके खिलाफ़ नहीं लाए
थे। 19 उनके अपने धर्म से सम्बन्धित उसके
खिलाफ़ कुछ सवालों के साथ, यीशु नामक
व्यक्ति के मरे हुओं में से जी उठने के बारे
में पौलुस के विश्वास से सम्बन्धित सवाल
भी थे। 20 क्योंकि इन सब सवालों के बारे
में मुझे शक था, मैंने उससे जानना चाहा कि
वह इस विषय पर इन्साफ़ किए जाने के लिए
यरुशलेम जाना चाहेगा या नहीं। 21 लेकिन
जब पौलुस ने कहा कि औगस्तुस का फ़ैसला
उसे मंजूर होगा, मैंने आज्ञा दी कि जब तक
मैं उसे सीज़र के पास न भेज दूँ, तब तक उसे
यहीं रखा जाए।”

22 तब अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, “मैं इस
व्यक्ति के मुँह से सब कुछ सुनना माँगता
हूँ।”

23 अगले दिन जब अग्रिप्पा और बर्निस
बड़ी शान शौकत के साथ आए और उसको
सुनने के लिए कमाण्डरों और गणमान्य लोगों
के साथ महल में दाखिल हुए तब फ़ेस्तुस
की आज्ञानुसार पौलुस को यहाँ लाया गया।
24 फ़ेस्तुस ने कहा, “राजा अग्रिप्पा और यहाँ
उपस्थित हर एक जन देख ले कि यहूदियों
ने मुझ से इस व्यक्ति की शिकायत की
है। यरुशलेम और यहाँ के लोगों की यही
माँग है कि इस इन्सान को ज़िन्दा नहीं रहने
दिया जाए। 25 लेकिन मैंने यह पाया है कि
इसने मौत की सज़ा के लायक कोई गुनाह
नहीं किया है। यह भी कि उसने चाहा कि
ऑगस्तुस के सामने उसके केस की सुनवाई
हो, मैंने उसे वहाँ भेजने का इरादा किया,
26 लेकिन मेरे पास ऐसा उसके खिलाफ़ कुछ
सबूत नहीं है जिसे मैं अपने राजा को बताऊँ।
इसलिए राजा अग्रिप्पा, मैं उसे आपके सामने
पेश कर रहा हूँ, ताकि जाँच पड़ताल के बाद
मेरे पास लिख कर भेजने के लिए कुछ होगा
27 क्योंकि मुझे इस में कुछ समझदारी नहीं
दिखती कि एक कैदी को बिना किसी आरोप
पत्र दाखिल किए आपके पास भेजूँ।”

26 तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा,
“तुम्हें इज़ाज़त है कि अपने बचाव
के लिए कुछ कहो।” तब पौलुस ने अपने
हाथ फैलाकर कहाः 2 “यहूदियों की तरफ़
से जो भी आरोप मुझ पर लगाए गए हैं
उनके बारे में जो मौका मुझे आज दिया गया
है, उसके लिए राजा अग्रिप्पा मैं खुश हूँ।
3 खासकर इसलिए क्योंकि मैं यह जानता हूँ
कि आप यहूदियों के बीच के रीति रिवाज़ों
और सवालों के अच्छे जान कर हैं। इसलिए
मेरी यह बिनती है कि आप धीरज से मेरी
बातों को सुनें।

4 मेरी जवानी के समय से सभी यहूदी मेरे
जीवन को जानते हैं। यह भी कि मेरे शुरु
के साल यरुशलेम में ही गुज़रे थे। 5 शुरु
ही से वे लोग यह गवाही देने में राज़ी थे
कि हमारे मज़हब के सब से कट्टर फ़िरके[a]
‘फ़रीसियों’ का मैं एक हिस्सा था। आज 6 मैं
यहाँ खड़ा हूँ और उस वायदे की उम्मीद के
लिए मेरा इन्साफ़ हो रहा है, जिसे परमेश्वर
ने हमारे बापदादों को दिया था 7 इस वायदे
के पूरे होने के लिए हमारे बारह गोत्र दिन-रात
आराधना करते हैं। राजा आग्रिप्पा, इसी
आशा की वजह से मुझे आज दोषी करार
दिया जा रहा है।

8 आपको इस बात से अचम्भा क्यों होता
है, कि परमेश्वर मरे हुओं को ज़िन्दा करते
हैं?

9 मैं सचमुच में यह सोचता था कि मुझे
नासरत के यीशु के नाम के खिलाफ़ बहुत

[a] 26.5 पंथ

कुछ करना है 10 और मैंने यरुशलेम में ऐसा
किया भी। महापुरोहितों से अनुमति पाकर
मैंने यीशु के बहुत से लोगों को जेल में
डलवाया भी। जब उन्हें जान से मारा जाता
था, मैं भी उनके विरोध में शामिल हुआ
करता था। 11 अक्सर मैं उन्हें आराधनालय
में ही क्लेश पहुँचाता था। मैं यीशु की निन्दा
करने के लिए उन पर दबाव डाला करता था।
उनके प्रति गुस्से में आकर मैं बड़े-बड़े शहरों
तक उन्हें सताया करता था। 12 एक बार जब
मैं महापुरोहितों से इज़ाज़त पाकर अधिकार
के साथ दमिश्क जा रहा था, 13 दोपहर ही
में, हे राजा, सड़क पर आकाश से एक रोशनी
आ गिरी। यह सूरज की रोशनी से भी ज़्यादा
थी। इस रोशनी ने मुझे और मेरे साथ के लोगों
को घेर लिया। 14 जब हम सभी ज़मीन पर
गिर पड़े, मैंने इब्रानी भाषा में किसी को यह
कहते सुना, 'शाऊल, शाऊल, तुम मुझे दुख
क्यों दे रहे हो? तुम्हारे लिए हल के फल पर
पैर मारना मुश्किल होगा।'

15 मैंने जवाब में कहा, "आप कौन हैं
प्रभु?" उन्होंने कहा, 'मैं यीशु हूँ जिसे तुम दुख
दे रहे हो। 16 उठो अपने पैरों के बल खड़े हो
जाओ। कुछ बातें तुमने देखी हैं, और बहुत
कुछ मैं तुम्हें बताऊँगा। 17 यह सब इसलिए
ताकि तुम इन सभी बातों के गवाह और मेरे
सेवक बनो। 18 ताकि तुम लोगो की आँखें
खोल सको। उन्हें अँधेरे में से रोशनी और
शैतान की ताकत से परमेश्वर की तरफ़ मोड़
सको। यह सब इसलिए ताकि वे गुनाहों की
माफ़ी और मुझ पर भरोसा करने से शुद्ध किए
हुए लोगों के साथ मीरास पा सकें।'

19 इसलिए हे राजा अग्रिप्पा, "मैं स्वर्ग से
मिले हुए दर्शन का आनाज्ञाकारी न हुआ।
20 लेकिन मैंने दमिश्क, यरुशलेम, यहूदियों
के सारे प्रदेश के रहने वालों और फिर गैर
यहूदियों को बतलाया कि उन्हें अपना मन
बदलना चाहिए। उन्हें मन बदलाव के बाद
जिस तरह से जीना चाहिए, वैसे जिएँ भी।
21 इन्हीं कारणों से यहूदियों ने मुझे प्रार्थना
भवन में पकड़ कर मार डालना चाहा।
22 इसलिए परमेश्वर से मदद पाकर आज
तक छोटे-बड़े सभी को गवाही देता हूँ। जिन
बातों की भविष्यद्वाणी भविष्यद्वक्ताओं और
मूसा ने की थी, उसके अलावा मैं कुछ भी
नहीं कहता रहा हूँ। 23 यह कि मसीह दुख
उठाएँगे और पहले वह व्यक्ति होंगे जो मरे
हुओं में से जी उठेंगे। वही हमारे लोगों को
और गैरयहूदियों को रोशनी देंगे।"

24 इस तरह से जब पौलुस ने अपनी सफ़ाई
दी तो बड़ी ऊँची आवाज़ में फ़ेस्तुस ने कहा,
"पौलुस तुम पागल हो गए हो। बहुत ज्ञान ने
तुम्हें बावला बना दिया है।"

25 लेकिन उसने कहा, "महाराजाधिराज मैं
पागल नहीं हूँ, लेकिन सच्चाई और समझदारी
की बात कहता हूँ। 26 राजा, जिन के सामने
मैं बड़ी आज़ादी के साथ बोल रहा हूँ, इन
सब बातों को अच्छी तरह से जानते हैं। मुझे
पूरी तरह से मालूम है कि ये बातें उन से छिपी
हुई नहीं हैं, क्योंकि यह बात किसी कोने में
नहीं हुयी हैं। 27 हे राजा अग्रिप्पा, क्या आप
भविष्यद्वक्ताओं पर विश्वास करते हैं? हाँ मैं
जानता हूँ कि आप विश्वास करते हैं।"

28 तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "तुम
मुझे अपने मत में मिलाना चाहते हो"

29 पौलुस ने कहा, "परमेश्वर ऐसा करे कि
आप और मेरी सुनने वाले सभी लोग आज
इस विश्वास में आ जाएँ।"

30 उसकी इन बातों को सुन कर राजा,
गवर्नर, बर्निस और वे सभी जो बैठे हुए थे,
उठ खड़े हुए। 31 जैसे ही वे वहाँ से हटे,
आपस में एक दूसरे से कहने लगे, "हिरासत

में रखे जाने और मौत की सजा के लायक
इस व्यक्ति ने कुछ नहीं किया है।" 32 तब
अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, "अगर इस
व्यक्ति ने सीज़र को अपील न की होती,
तो यह छूट गया होता।"

27 जब यह इरादा किया गया कि हम
इटली को रवाना हों, तब उन्होंने
पौलुस और दूसरे कैदियों को औगस्तुस के
रेजिमेण्ट के सूबेदार जूलियस के हाथ सुपुर्द
कर दिया। 2 अद्रमुत्तियुम का एक जहाज़
एशिया के किनारे की जगहों से होकर जाने
पर था। हम उस पर चढ़ कर समुद्री सफ़र
के लिए निकल पड़े। उस समय अरिस्तर्खुस
नामक थिस्सुलुनीके का एक मकिदुनी हमारे
साथ था।
3 अगले दिन हम सिदोन पहुँचे। जूलियस
पौलुस के साथ नरमी से पेश आया और
उसे अनुमति दी कि वहाँ सेवा सत्कार
होने के लिए अपने दोस्तों के पास जाए।
4 वहाँ से जब हम जल यात्रा के लिए
समुद्र में उतरे, तो साइप्रस के नज़दीक से
गुज़रे, क्योंकि हवा हमारे खिलाफ़ थी। 5 हम
किलकिया और पंफ़ूलिया के समुद्र से चले
और लूकिया के मूरा में उतरे। 6 वहाँ सूबेदार
को एलेक्ज़ॅन्ड्रिया का एक जहाज़ इटली
जाता हुआ मिला और उसने हमें उस पर
चढ़ा दिया 7 जब हम लोग बहुत दिनों तक
खेते-खेते मुश्किल से कनिदुस के सामने
पहुँचे, तो इसलिए कि हवा हमें आगे बढ़ने
नहीं देती थी, हम सलमोने के सामने से
होकर क्रीट की आड़ में खेने लगे। 8 उसके
किनारे-किनारे बड़ी मुश्किल से खेते हुए
हम एक जगह पहुँचे जो मनोहर लंगरबारी
कहलाता था। वहाँ से लसया नगर पास था।
9 जब बहुत दिन बीत गए और जल यात्रा भी
जोखिम भरी हो गयी यहाँ तक कि उपवास
के दिन भी बीत चुके थे। इसलिए पौलुस
उन्हें यह कह कर चेतावनी देने लगा, 10 "हे
भाईयो, मुझे ऐसा लगता है कि इस समुद्र
यात्रा में सामान और जहाज़ की ही नहीं
लेकिन हमारी जान की भी हानि हो सकती
है।" 11 फिर भी प्रधान मल्लाह और जहाज़
के मालिक से सूबेदार ज़्यादा कायल हुआ
बजाए पौलुस की कही हुयी बातों से। 12 और
इसलिए कि जाड़े में बन्दरगाह पर ठहरना
अक्लमन्दी नहीं थी, ज़्यादातर लोगों ने वहाँ
से भी रवाना होने की सलाह दी, ताकि वे
फ़ीनीके पहुँचकर वहीं जाड़ा बिताएँ। यह
क्रेते का टापू है और दक्षिण पश्चिम तथा उत्तर
पश्चिम की तरफ़ है।
13 जब दक्षिण हवा धीरे चलने लगी तो
यह समझ कर कि उनका लक्ष्य पूरा हो
गया है, लंगर उठा कर वे क्रेते के पास
पास खेने लगे। 14 लेकिन कुछ ही देर में
यूरोक्लायडन नामक हवा जहाज़ के खिलाफ़
चलने लगी। 15 जब जहाज़ बीच ही में
फँस गया और हवा का सामना न कर
सका, तो हम ने इसे हवा के रुख में बहने
दिया। 16 क्लौडा नामक टापू की आड़ में
बहते-बहते, जीवन-नौका को बचाने में हमें
बहुत मेहनत करनी पड़ी। 17 जब उन्होंने इसे
उठाया तब काफ़ी तरकीब से जहाज़ को नीचे
से बान्धा। लेकिन इस डर से कि कहीं बाजू
के ढेर पर न गिर जाए, पाल को नीचे करते
बहते चले गए। 18 और जब हम तूफ़ान से
हिचकोले और धक्के खाने लगे, तो जहाज़
का सामान फेंकना शुरु कर दिया। 19 तीसरे
दिन अपने हाथों से हम ने जहाज़ का सामान
फेंका। 20 बहुत दिनों तक जब न सूरज और न

तारे दिखाई दिए और बड़ा तूफ़ान उठा हुआ
था, तो हम ने अपने बचने की उम्मीद तक
छोड़ दी।
21 काफ़ी समय भूखा रहने के बाद पौलुस
उनके बीच खड़ा होकर कहने लगा, “हे
भाईयो, तुम्हें मेरी बात सुननी चाहिए थी और
इस नुकसान से बचने के लिए क्रेते से रवाना
ही नहीं होना था। 22 लेकिन अब हिम्मत
बाँधो, क्योंकि जहाज़ को छोड़कर किसी
की जान का नुकसान नहीं होगा। 23 क्योंकि
बीती रात जिस परमेश्वर का मैं हूँ और जिन
की सेवा करता हूँ, उनका एक स्वर्गदूत मेरे
पास आ खड़ा हुआ। 24 उसने कहा, ‘पौलुस
मत डरो। तुम्हें सीज़र के सामने खड़ा होना
पड़ेगा हाँ, जो लोग तुम्हारे साथ यात्रा कर
रहे हैं, उन्हें परमेश्वर ने तुम को दे दिया है।’
25,26 इसलिए भाईयो, हिम्मत रखो, क्योंकि
जैसा मैं विश्वास करता हूँ, और मुझे बताया
गया है, वैसा ही होगा।’
27 फिर भी यह ज़रूरी है कि हम किसी टापू
पर जहाज़ को उतारें।” 28 चौदहवीं रात को
जब हम आद्रिया में हिचकोले खा रहे थे, बीच
रात में हमें लगा कि ज़मीन के पास पहुँच रहे
हैं। 29 इस डर से कि वे चट्टान से टकरा न
जाएँ, उन्होंने जहाज़ के पिछले भाग से चार
लँगर डाले और दिन की रोशनी का इन्तज़ार
करने लगे। 30 जैसे ही मल्लाह जहाज़ से भाग
निकलने पर थे, 31 पौलुस ने सूबेदार और
सैनिकों से कहा, “अगर वे जहाज़ में ठहरेंगे
नहीं, तो हम बच नहीं सकते” 32 तब सैनिकों
ने नाव की रस्सी काट डाली और इसे गिरने
दिया।
33 जब दिन निकलने पर था, पौलुस ने
खाना खाने के लिए ज़ोर डालते हुए कहा,
“आज इन्तज़ार करते-करते चौदहवाँ दिन
हो गया है, तुम लोगों ने कुछ खाया भी
नहीं है। 34 इसलिए मैं तुम से बिनती करता
हूँ कि अपनी सेहत की खातिर खाना
खाओ। तुम्हारा बाल-बाँका भी नहीं होगा।”
35 उसकी यह बात सुन कर उसने हाथ में
रोटी लेकर सब की मौजूदगी में परमेश्वर
को धन्यवाद दिया। तोड़ने के बाद वह खाने
लगा। 36 तब सभी ने हिम्मत बाँधी और खाना
खाया। 37 जहाज़ पर हम सब करीब दो सौ
छिहत्तर लोग थे। 38 जब उन्होंने काफ़ी खा
लिया, अनाज को समुद्र में डाला और जहाज़
को हल्का कर दिया।
39 जब सुबह की रोशनी हुयी तो सूखी
ज़मीन न देख पाए। लेकिन उन्होंने एक खाड़ी
देखी, जो चौरस थी। उन्होंने इरादा किया
कि अगर संभव हो तो जहाज़ को उसी तट
पर लगा दिया जाए। 40 उन्होंने लंगर समुद्र
में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के
बन्धन ढीले कर दिए और हवा के रुख
में छोटे पाल खोलकर तट की तरफ़ चल
पड़े। 41 लेकिन दो समुद्र के मिलने की जगह
पर उन्होंने जहाज़ को टिकाया और उसका
अगला हिस्सा ऐसा फँस गया कि हिल न
सका। और पिछला भाग लहरों के थपेड़ों
से टूटने लगा।
42 सैनिक यह सोच रहे थे कि कैदियों को
मार डाला जाए जिस से कि कैदी भी तैर कर
फ़रार न हो जाएँ। 43 लेकिन सूबेदार ने पौलुस
को बचाने के लिए ऐसा करने से रोका और
हुक्म दिया कि जिन्हें तैरना आता है, वे पहले
कूदकर किनारे पर पहुँच जाएँ। 44 बाकी लोग
उनके बाद पटरों और जहाज़ के दूसरे टुकड़ों
के सहारे निकल जाएँ। इस तरह वे सभी
सूखी ज़मीन पर सुरक्षित पहुँच गए।

28 जब वे वहाँ से बच निकले, उन्हें
मालूम पड़ा कि उस टापू का नाम

माल्टा है। 2 वहाँ के आदिवासी लोग हमारे
साथ नम्रता से पेश आए। उन्होंने हमारा
स्वागत किया। साथ ही उस ठंड में हमें गर्मी
देने के लिए आग जला कर रखी। 3 जब
पौलुस ने एक लकड़ियों के गट्ठे को आग
पर रखा, एक ज़हरीला साँप भाग निकलने
के चक्कर में पौलुस के हाथ पर लिपट गया।
4 जब उन लोगों ने इस साँप को उसके हाथ
पर लिपटे हुए देखा तो कहा, “ज़रूर यह
आदमी एक हत्यारा है। हालाँकि वह समुद्र
के जोखिम से बच निकला, लेकिन इन्साफ़
उसे ज़िन्दा नहीं छोड़ेगा।”
5 पौलुस ने साँप को झिड़क दिया और वह
आग में गिर पड़ा। 6 वे लोग यह सोच रहे
थे कि उसका बदन सूज जाएगा या वह गिर
पड़ेगा। लेकिन उन्होंने देखा कि काफ़ी समय
के बाद भी उसका कुछ नुकसान नहीं हुआ।
यह देख कर वे सोचने लगे कि पौलुस कोई
ईश्वर है।
7 उस इलाके में टापू के एक नामी व्यक्ति
के खेत थे, जिस का नाम था पुबलियुस।
उसने हमारा स्वागत किया और तीन दिन
तक आवभगत की। 8 पुबलियुस का पिता
तीन दिन से पेचिश और बुखार से परेशान
था। पौलुस ने उसके घर जाकर उस पर हाथ
रख कर उसे ठीक कर दिया। 9 इस घटना के
बाद टापू के दूसरे बीमार भी आए और ठीक
कर दिए गए। 10 उन्होंने हमें बहुत इज़्ज़त दी।
जब हम वहाँ से रवाना हुए तो हमारी ज़रूरत
की चीजों को जहाज़ पर लाद दिया।
11 तीन महीनों के बाद हम एलेक्ज़ॅन्ड्रिया
के जहाज़ पर रवाना हुए, जो सर्दियों में टापू
पर ही था, जिस का चिन्ह दियुसकुरी था
इसके 12 सुरकूसा पर पहुँचकर हम ने तीन
दिन वहीं बिताया 13 वहाँ से चक्कर लगाने के
बाद हम रेगियुम पहुँचे। एक दिन बाद दक्षिण
हवा चली और हम अगले दिन पुतियुली आ
गए। 14 वहाँ पर हम ने कुछ भाईयों को पाया
जिन्होंने हमसे कहा कि उनके साथ सात दिन
तक रहें। इसलिए हम रोम को रवाना हो
गए। 15 जब भाईयों ने हमारे बारे में सुना,
तो वे अप्पियुस और तीनसराए तक हमसे
मिलने आ गए। जब पौलुस ने उन्हें देखा तो
परमेश्वर को धन्यवाद किया और हिम्मत
की। 16 जब हम रोम पहुँचे तब सूबेदार ने
कैदियों को सुरक्षा दल के प्रधान को सौंप
दिया। लेकिन पौलुस को एक सिपाही की
सुरक्षा में अकेले रखा गया।
17 तीन दिन बाद पौलुस ने यहूदियों के
अगुवों को बुलाया। जब वे इकट्ठे हुए उसने
उन से कहा, “हे भाईयो, हालाँकि मैंने न
लोगों के खिलाफ़ न ही अपने बुज़ुर्गों के रीति
रिवाज़ों के खिलाफ़ कुछ किया है, यरुशलेम
ही से मुझे एक गुनाहगार की तरह रोमियों
के सुपुर्द किया गया। 18 मुझे परखने के बाद
मुझे छोड़ देना चाहिए था, क्योंकि मुझ में
मौत की सज़ा का कोई कारण नहीं पाया गया
था। 19 लेकिन जब यहूदियों ने मौत की सज़ा
पर ज़ोर डाला, तो सीज़र के सामने अपील
करने को मैं मजबूर हो गया। यह इसलिए नहीं
क्योंकि मुझे अपने देश से कोई शिकायत थी।
20 इसलिए, इसी वजह से मैंने तुम्हें बुलाया है
कि तुम से मिल कर बातचीत करूँ, क्योंकि
इस्राएल की आशा के लिए मैं इस जंजीर से
बंधा हुआ हूँ।”
21 उन्होंने उस से कहा, “तुम्हारे बारे में हम
ने यहूदिया से कोई चिट्ठी नहीं पायी है। जो
लोग यहाँ पर आए उन्होंने तुम्हारे बारे में कुछ
बुरा भी नहीं कहा है। 22 लेकिन हम तुम से
वह सब सुनना चाहते हैं, जो तुम सोचते हो।

जहाँ तक इस मत का सवाल है हम जानते
हैं, कि हर जगह इसके खिलाफ़ कहा जाता
है।”
23 और जब उन्होंने उसके लिए एक दिन
ठहराया बहुत से लोग वहाँ उससे मिलने
आए। उसने परमेश्वर के राज्य के बारे में
साफ़-साफ़ बतलाया। सुबह से शाम तक
मूसा के नियमशास्त्र और भविष्यवक्ता की
किताबों से वह बड़े ज़ोरदार तरीके से यीशु
के बारे में सिखाता रहा। 24 कुछ लोग उन
बातों से चिढ़ गए और कुछ ने विश्वास
किया। 25 जब आपस में वे एक विचार के
नहीं थे तो पौलुस के कुछ कहने पर उसे
छोड़कर चले गए। उसने कहा था, “हमारे
पुरखों से पवित्रात्मा ने यशायाह को इस्तेमाल
करके कहा था 26 तुम सुनते तो रहोगे, लेकिन
समझोगे नहीं। देखते रहोगे, लेकिन बूझोगे
नहीं। 27 क्योंकि तुम्हारा मन मोटा है कान
बहरे हो गए हैं। उन्होंने अपनी आँखें बन्द
की हैं, ताकि ऐसा न हो कि वे कभी देखें
और कानों से सुनें। मन से समझें, मन बदल
जाएँ और मैं उन्हें ठीक[a] कर दूँ।
28 इसलिए तुम जान लो कि परमेश्वर की
यह मुक्ति गैर यहूदियों के पास भेजी गई है
और वे इसे सुनेंगे।”
29 जब उसने यह कहा तो यहूदी आपस में
बहुत बहस करने लगे और वहाँ से चले गए।
30 वह पूरे दो साल किराए के घर में रहा
31 जो लोग उसके पास आते थे, उन सब
से वह भेंट करता रहा और बिना किसी
रुकावट और डर के परमेश्वर के राज्य की
खुशखबरी देता और यीशु मसीह के बारे में
सिखाता रहा।

[a] **28.27** स्वस्थ

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com